卐 सिध श्री 卐

सत्यं-शिवं-सुन्दरं-मधुरं

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत् ।।

श्री भगवान री किरपा सूं ही श्रीमद्भगवद्-गीता रो ओ' भीमानन्दी राजस्थानी अनुवाद आखे संसार रै विदवानां अर गीता भगतां रै कर-कमळां में सूंपतां घणां-मोकळो हरख हुवै । आप लोग इणनैं बांच-सुण धुधकारो घालण जिसो काम बताणसो तो श्री भगवान रा ही सगळा जतन सफळ गिणीजसी ।

वैदिक संस्कृत भाषा री सोभण बेटी आपणी करोड़ां री लाखीणी मायड़ भाषा मरुवाणी राजस्थानी ! हिन्दी आदि अनेकूं भाषावां री भी मां है जिण रो सबद भण्डार घणों लूंठो-मोटो है-घणकरी भाषावां रै सबद भण्डार सूं !

निरचै भरोसो है-भारत रै संविधान री आठवीं सूची में वेगी ही गिणत-मानता देणीं पड़सी राजस्थानी नैं । थावोनीं मायड़ रा लाडेसरां ! ऊंडी सूंडी सूं अेकासुर में ओम उचारां । ॐ तत्सत् ।

सूरजभीमपांडिया
सुगुणी प्रकाशन
विश्वाम्बिका भवन
आशापुरा नयाशहर बीकानेर

श्रीमद्भगवद्गीता



प्रकाशक : सूरज भीमपाण्डिया
सुगुणी प्रकाशन
विश्वाम्बिका भवन, आशापुरा
नया शहर, बीकानेर 334 001
प्रथम संस्करण : 1984
मूल्य : 40.00
आवरण : क्रान्तिचन्द्र
मुद्रक : सांखला प्रिंटर्स, बीकानेर
SHRI MADBHAGWADGITA
Bhimanandi Rajasthani Anuwad
by BHIMPANDIA
Price Rs. : 40.00

भीमपाँडिया : परिचय की परिधि में

श्री भीमपाँडिया गत तीन दशकों से काव्य-क्षेत्र में अलख जगाये हुए हैं। रचना धर्मिता उनके लिए सुविधा तथा अवसरवादिता नहीं अपितु स्वांस एवं रक्त प्रवाह की तरह स्वाभाविक एवं आवश्यक है। वे अपनी सृजनशीलता के प्रति पूर्णतया समर्पित रहे हैं।

श्री पाँडिया एक ऐसे कवि हैं जिनके जीवन एवं कविता के बीच हासिये नहीं खींचे जा सकते। संघर्ष उनका मुख्य स्वर है। कविता का भी और जीवन का भी। उनका जीवन जितने उतार-चढ़ावों, धूप-छाहों, असुविधाओं एवं विपत्तियों में से निकला, कविता भी उतने ही पड़ावों पर चढ़ी-उतरी। संघर्ष का यह स्वर उनका जीवन साथी रहा है। घटनाओं के बदलाव के साथ उनकी आस्थाएं नहीं बदलती और न ही राजनीति के मोड़ कविता के मोड़ ही बनते हैं। क्रांति का स्वर उनकी धमनियों के रक्त प्रवाह की तरह स्वाभाविक एवं हृदय के स्पंदन की तरह स्पष्ट है। वे संघर्षों के माध्यम से सत्य के अन्वेषी रहे हैं। सहानुभूतियों के सहारे जीना उन्हें अभीष्ट नहीं और यही कारण है कि समाज के कथित प्रभावशाली क्षेत्रों की कृपा-कोरों या भृकुटी तनावों की बिना परवाह किये वे निरन्तर संघर्षशील बने रहे। उनकी कविता उनके संघर्षों की उपज भी है तो साक्षीऔर सहयात्री भी। जहाँ-जहाँ अन्याय-उत्पीड़न है, पाँडियाजी की कविता वहीं-वहीं चोट करती है—निर्णायक चोट। वह अपनी दिशा भी स्वयं चुनती है। निश्चित दायरे, बंधे-बंधाये राजमार्ग और सरकारी-मुद्राएं उनके लिए अपरिचित रहे हैं। इस दृष्टि से देखें तो पाँडियाजी युगकवि हैं—उनका स्वर ही जैसे युग का स्वर बन गया है। बीकानेर के इन तीस वर्षों के साहित्य को पाँडिया-युगीन साहित्य की संज्ञा दी जा सकती है।

श्री भीमपाँडिया का जन्म १६ जुलाई १६२६ आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी वि. सं. १६८६ को बीकानेर में हुआ। १६४८ में वे कविता की ओर उन्मुख हुए और लगभग उन्हीं दिनों अध्यापक बने। कविता और अध्यापन आज भी चालू है—संभवत: ये दोनों उनके अभीष्ट हैं। उनकी कविताएँ प्रभावशाली, स्वर ओजस्वी

एवं गति इतनी मार्मिक रही कि १९५३ से १९६० तक उनकी कविता "अै दिवलै री जोत अबै तूं अेक मगीधी जगती रइजे" आठवीं कक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित की गई। उनकी रचनाएँ राजस्थान एवं भारत के प्रायः सभी पत्रों में प्रकाशित हुई हैं जिनमें आतागन, मधुमती, जागती जोत; राजस्थान भारती, नवजीवन संदेश, पाक्षिक चेतना, ललकार, लोकजीवन, जनता की आवाज, नया-संसार, राजस्थानी वीर, माहेश्वरी सेवक, अग्रदूत, क्रांतिदूत, प्रजा सेवक, गण-राज्य, वर्तमान, लोकमत, राजस्थान विकास, जय चित्तौड़, शिकायत, सीमा-संदेश, पार्थसारथी, नवयुग आदि, कुछेक पत्र हैं। इनमें वे पत्र भी सम्मिलित हैं जो पूना-हिंगनघाट, दिल्ली, कलकत्ता, जयपुर; जोधपुर उदयपुर आदि से प्रकाशित होते रहे हैं। आकाशवाणी से भी प्रसारित होते रहे हैं।

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कविता और विशेषतः हिन्दी गीत जितने आयामों में से निकला, पाँडियाजी ने उन सबको स्पर्शित ही नहीं आत्मसात भी किया। उनके हिन्दी राजस्थानी गीतों के इतने अधिक विषय-बिन्दु हैं कि कवि–व्यक्तित्व को निश्चित दायरों में बाँधे रखना कठिन हो जाता है। प्रकृति, प्रणय, शृंगार, वियोग, क्रांति, विस्फोट, विद्रोह, राजनीतिक चेतना, सामाजिक उत्थान, पारिवारिक परिवेश, बचत, विकास, आध्यात्मिक चिंतन आदि सभी विषय-बिन्दुओं पर उन्होंने अपनी कलम उठाई है।

पाँडियाजी के अब तक प्रकाशित तीन ग्रन्थ उनकी तीन भंगिमाएं प्रकट करते हैं। पुरुष से क्रूर चंगुल में पिसती नारी की पीड़ा के विरुद्ध जन कवि ने संघर्ष-घोषणा की और उस टकराहट में हित-अनहित को बिना देखे जब वह जूझने लगा तो सन् १९५८ में "हाथ सूं कतर लीनो बोरलो" कविता संग्रह प्रकाशित हुआ। राजनीति के क्रूर कुकर्मियों ने जब राजस्थान में प्रजातंत्र का गला घोंटना चाहा तथा मानव-रक्त के मूल्य पर सिंहासन-प्राप्ति की कुचेष्टाएँ की तो कवि ने १९६७ में "लोकतन्त्र रा पाळी रोया" कविता संग्रह से अद्भुत जन-चेतना में सहारा दिया। भारत ने जब आत्म विश्वास से एक युद्ध जीता और शास्त्रीजी के नेतृत्व में चहुंमुखी प्रगति की तो १९६८ में "गरीब करोड़पति" कविता-संग्रह सामने आया। यों उनकी कविताएं कई संकलनों में हैं जिनमें अलगोजा, बागाँ रा फूल, आज रा कवि एवं विजय हमारी है" सम्मिलित है।

कवि ने जीवन की व्यापकता एवं अनुभवों की विविधता को अपनी कविताओं में मूर्त्त रूप दिया है। उनका प्रकृति प्रेम इतना स्पष्ट एवं उससे जुड़ी पारिवारिक मानसिकता इतनी प्रभावपूर्ण है कि रचनाएँ स्वयं ही एक परिवेश

बन जाती है। "राजस्थानी नारी ग्रीष्म के ताप एवं वियोग की पीड़ा से जर्जरित होती है तो गीत उछलता है "मेघा आव रे म्हाँरोड़ै गाँव रे" जब बादळ उमड़-घुमड़ कर वर्षा के लिए आजाते हैं तो गीत बरसता है "आ बरसाळी बादळी" और जब ऐसी सुहानी ऋतु में एक पत्नी अपने पति को गाँव लौटने का आग्रह करती है तो गीत जन्मता है "म्हाँरी नणदल बाईसा रा वीर" चाकरी छोड, हजूरी छोड अबै थे घराँ पधारो राज। खेत में दयो हलकारो राज। आपणी धरती में बरसी बिरखा मोकळी। फसलों के लहलहाने एवं पति के आगमन का सुख ये दो गीत भी भोगते हैं "आव रमण री रात रमाँ धण रेत में" और जद ठंडी मधरी पून चलै हूँ हिवड़ै में हुळसाऊँ "और अंततः जब पति को कमाई के लिए जाना पड़ता है और तीज-त्यौहारों, मौकों-टोकों पर नहीं आ पाता है तो वियोगिनी के आँसुओं की तरह गीत प्रवाहित होता है" आस मिटै पलकाँ में गळ-गळ हिवड़ो आज पसीजै राज"। गीत मात्र केवल दाम्पत्य जीवन तक ही सीमित नहीं रहते वरन् पुत्री की विदाई की पीड़ा भी उसमें प्रकट होती है। विदाई के क्षणों में जैसे गीत की आँखें भी नम हो जाती हैं "चिड़कली उड़जा पाँख पसार"।

कवि का दूसरा पक्ष संघर्ष, विद्रोह एवं राजनीतिक चेतना के साथ विकास परिक्रमा के स्वागत का है। प्रजातन्त्र के रथ की अगवानी एवं विकास की आशा इस गीत में उदित होती है "उजासो दीसै आभल कोर" तो भावी पीढ़ी के सुख की परिकल्पना "जींवता रैवै रे थारा भूरिया लटूरिया" में उमड़ती है। संघर्ष के स्वर "लीडरिया" एवं "अफसरिया" कविताओं में हैं तो युद्ध-रत सैनिकों का आह्वान "मोरचो तकड़ो राखीजो" एवं "सींव रो रुखाळो म्हाँरो सायबो" में दृष्टिगत होता है। मानवीय पीड़ा "ज्यूँ रुळै ठीकरी मिनख रुळै" "कण म्हारो नांव धरयो सिणगारी" "पाँव में पगी नहीं, अंग में भगी नहीं" "हाय मिनख रो ओ-समाज" आदि गीतों में हैं।

इस परिप्रेक्ष्य में देखा जाये तो नैराश्य, अंधकार, भटकाव आदि जीवन के स्वर हो सकते है पर मुख्य स्वर नहीं। जीवन नियन्ता शक्ति कोई और ही है और वह आशा, विश्वास, सहनशीलता एवं संघर्ष के माध्यम से जीवन का ताना-बाना बुनती है। कवि का यह आध्यात्मिक पक्ष है पर भक्ति, ज्ञान एवं कर्म के इस सम्मिश्रण में भी वह आडम्बरों को नहीं पचा सकता। आध्यात्मिक पड़ाव की कुछ रचनाओं में ये सभी स्वर सामने आते हैं "लेख लिख्यो दाणैं-पाणी रो चुगणो पड़सी रे/बीज नैं उगणो पड़सी रे" "मन में मूरत जमी नहीं तो हिवड़ो है

समशान रे" "जी म्हांरा जिवड़ा जी" आदि रचनाएँ भक्ति के साथ आडंबरों पर प्रहार नियति की शक्ति एवं मानवीय आशा के संचरण की पीठिकाएं हैं। बालगीत, लोरियां, प्रयाणगीत आदि अनेक क्षेत्र इन पीठिकाओं को और अधिक दृढ़ता प्रदान करते हैं।

कविता और जीवन के बीच की दूरी देखना हो तो भीमपांडिया को नहीं किसी और कवि को ढूंढ़ना होगा। "हाथ सूं कतर लीनो बोरलो" के रचनाकाल में कवि को कथित सामाजिक शक्तियों से टकराव में आना पड़ा व कई विपत्तियों का वरण करना पड़ा पर वह न झुका, न रुका और न ही टूटा। "लोकतंत्र रा पाळो रोया" के रचनाकाल में राजस्थान के क्रूर कुकर्मी शासन के अंत होने तक बीकानेर मे प्रवेश नहीं करने, जूते धारण नहीं करने, व केवल एक वस्त्र में रहने की प्रताप-प्रतिज्ञाएँ उसने की और उन्हें अन्त तक निभाया। बेटी के मेंहदी रचे हाथों की जीत हुई और एक कुकर्मी-शासन के अन्त की घोषणा के साथ कवि ने कन्यादान के लिए बीकानेर में प्रवेश किया। आपात-काल के १९ महीनों के अंधकारमय युग में जब अभिव्यक्ति का संकट था, कवि ने खुली, बेबाक व प्रत्यक्ष रचनाओं मे भूतपूर्व शासन का विरोध किया व यातनाएँ सहीं। नागार्जुन व रेणु को जेल जाना पड़ा, भीमपांडिया जेल के फाटक तक पहुँचते-पहुँचते रह गये। "पाछी वणजा ऊंदरी" "इण्डै नैं महादेव बतावै—जोरामरद पूजावै रे" आदि रचनाएँ इसी काल की हैं।

कवि की इस सृजनशीलता को भारत में ही नहीं एशिया में मान्यता मिली है। Reference Asia (1975) एवं Leaders of India (Who's Who) आदि ग्रंथों में कवि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में संदर्भ दिये गये हैं। कवि होने के साथ-साथ वे पत्रकार, सम्पादक, समीक्षक एवं राजनेता भी रहे हैं। "जय जवान जय किसान" के सम्पादक इस कवि ने नौकरी छोड़कर चुनाव लड़ा तथा राजस्थान के सर्वमान्य समाजवादी नेता स्व० लोकनायक मुरलीधर व्यास के साथ राजनीतिक सहधर्मिता का निर्वाह किया। स्वर्गीय व्यासजी के साथ वे पूना, गोआ, बम्बई, कलकत्ता एवम् राजस्थान के प्रायः सभी नगरों में गये व समाजवाद का प्रचार-प्रसार किया। उनकी "झाला देवै झूंपड़ी" की रचना जन-जन की भावनाओं का केन्द्र बन गयी थी।

मेघदूत एवं गीता का अनुवाद उनके जीवनगत अनुभवों के निचोड़ की तरह सामने आता है। राजस्थान के निवासी एवं प्रवासी असंख्य नर-नारियों की

आध्यात्मिक प्यास इस अनुवाद से तृप्त हो सकेगी। अधिसंख्यक निरक्षर नर-नारी गीता की ज्ञान गंगा में नहाने का आनन्द संस्कृत के माध्यम से नहीं उठा सकते। यदि टीकाओं में भटकें तो उन्हें पद्य की गेयता एवं गत्यात्मकता नहीं मिल सकती और गीता ज्ञान रूखे उपदेशों की तरह केवल नीरस रूप में ही मिल पाता है। आवश्यकता इस बात की है कि गीता का यह गुह्य-ज्ञान अपनी बोलचाल की भाषा में, उसी मिठास और उसी सुपरिचित शैली में जन-जन तक पहुंचाया जाये। हर भाषा के अपने तेवर होते हैं और हर भाषा की अपनी ही लोच, अपना ही लावण्य और अपना ही स्वाद होता है। ये लोच, लावण्य और स्वाद भी बने रहें तथा गीता की शब्द-व्यंजना के साथ न्याय भी हो सके-इन दो कठिनाइयों को पार करने का साहसिक प्रयास भीमपाँडिया ने किया है। उनकी यह गीता राजस्थान के निवासी-प्रवासी भाई-बहिनों के लिये लोकगीता या जन-गीता बन जायेगी-ऐसी आशा तो की ही जानी चाहिये।

भीमानन्दी भगवद्गीता के कुछ अंश केवल बानगी के रूप में प्रस्तुत कर रहा हूँ। अर्जुन का संताप और भगवान कृष्ण का दिशा निर्देश इन श्लोकों में प्रकट होता है :—

संजय बतायो—

रण भोमी में सोक गळगळो अरजुन इणतर वचन उचार
धनुस-बाण नैं नाँख धनंजै रथ में जाय बैसियो लार ।। १-४६ ।।

आकळ-बाकळ सोकाकुळ लख अरजुन आँख भरायो ज्यूँ
मधुसूदन भगवान दया कर अरजुन नैं समझायो यूँ ।। २-१ ।।

भगवान वखाण्यो—

अधरम जोग कुजोग अरजुना बेमौके क्यूँ मोह करै
सरग टाळ अपजस करवावै इसी आँख क्यूँ आज झरै ।। २-२ ।।

थारै जोग कायरी कोनीं मत बण तूँ कायर लाचार
हियो दूबळो मत कर अरजुन जुद्ध करणनैं हुयजा त्यार ।। २-३ ।।

सोक करै पिंडत ज्यूँ बोलै जका सोक करणैं नहिं जोग
मरयाँ-जियाँ रो सोक न लावै पण मनड़ै में पिंडत लोग ।। २-११ ।।

बोदा वसतर त्याग पुरुष ज्यूँ नुँआ-निकोरा वसतर धारै
त्यूँ बोदो तन तजै आतमा नुँई निकोरी काया धारै ।। २-२२ ।।

अमरी इसो आतमा इणनैं काटण सकै न ससतर पाय
गाळ न बाळ सकै जळ-अगनी सकै न इणनैं पून सुखाय ।। २-२३ ।।

अणछेदी-अणबळो आतमा अणभीजी अणसोख वखाण
अेकरूप है सदा सनातन सरवाळै व्यापक थिर जाण ।। २-२४ ।।

जद-जद धरम घटै धरती पर अधरम वधै धरम घेराय
प्रगट हुवूं पारथ हूं ही तो उणीं काळ निज रूप रचाय ।। ४-७ ।।

साधू पुरुप उवारण जग में पापीड़ां रो करण विनास
धरम धजा थापण नैं प्रगटूं जुग-जुग में हूं जुग री आस ।। ४-८ ।।

अरजुन सकळ भूत उतपत रो बीज जको हूं ही हूं जाण
म्हां विन भूत चराचर कोनीं कोई भी तो समझ सुजाण ।। १०-३९ ।।

जठै कृष्ण योगेसर है अर जठै धनुरधर अरजुन मान
वठै विजयश्री और विभूती अचळ नीति म्हांरो मत जाण ।। १८-७८ ।।

भीमानन्दी भगवद्गीता निश्चित रूप से जन-जन तक पहुँचेगी-यह मेरी दृढ़ धारणा है। इस गीता के नामकरण के पीछे भी एक विशेष पवित्रता और पूर्ण समर्पण की आस्थावान भावना रही है। वैलूर मठ कलकत्ता के ध्यान कक्ष में स्वामी रामकृष्ण परमहंस और विवेकानन्द की प्रतिमाओं के सामने कवि ने अपने आपको भीमानन्द घोषित किया तथा भीमानन्दी भगवद्गीता का अन्तिम स्पर्श वहीं पर देने की बात कही। कवि के शब्दों और क्रियाओं में आज तक अन्तर नहीं रहा है और उनकी यह घोषणा भी सफल हुई।

☐ भवानी शंकर व्यास 'विनोद'
पवनपुरी, बीकानेर

मैं तो कीं न लिख्यो मधुसूदन !

ग्रेक मंतर है "हरेक काम हरेक ग्रादमी–लुगाई ग्रर टावर रै तावै खावै कोयनीं" ग्रो' मंतर जाणतां थकां ग्रेक रात भगवान श्री कृष्ण योगेसर ग्रर वेद-व्यासजी, तथा धृतरासटर–संजय रो नाँव सुमर–गीता रै राजस्थानी ग्रनुवाद नै तावै ग्रणावण वासतै, गीता प्रेम ग्रर गीता प्रेमियाँ वासतै, कलम चाली तो चाल पड़ी–मधुसूदन भगवान भरोसै लिख्यो सो ठीक लिख्यो, ग्राछो-फूठरो लिख्यो, घणों ग्रोपतो ग्रोळखाण सारू घणों कल्याण करणियो लिख्यो पण जे थे जाणसो बतासो, तां भी तो–हूं तो ग्राही जाणसूं-कैसूं "मैं तो कीं न लिख्यो मधुसूदन"–

"मैं तो कीं न लिख्यो मधुसूदन
म्हारी कलम विराज्या आप
दियो सो गीता वचन निभावो
धरम डूब्यो वधग्यो पाप"

म्हारी कलम सूं लिखीज्यो सो ठीक, पण ग्राप ग्रापरी समझ सूं समझसो सो ठीक। सब ठीक है। जो लिख्यो घणकरो श्री कृष्ण जलमण री ठोड़ जेळां में ग्रर मीरांबाई रै चारभुजा सामैं मिंदरा में बैठ भगवती सारदा री खैरमैर सूं लिख्यो है। गीता है ग्रमरां रा ग्राखर !

भारत रै संविधान में मानीजी घणकरी भासावां सूं साँवठी सैंठी ग्रर घणीं ग्रागै ग्रोपती है ग्रापणीं मायड़ भासा "राजस्थानी"। ग्राँपणों घणों मोटो करतब है कि ग्रापां ग्राँपणीं मायड़ भासा राजस्थानी नैं घणों ग्रोपतो–रूड़ो रूप ग्रर नखचख सोळै–सिणगार समरपां। ग्रापणों पूरो-पूरो फरज निभावतां थकां म्हनैं पक्को भरोसो है कि ग्राज नहीं तो काल ग्रर काल नहीं तो परसूं-तरसूं ग्रापां करोड़ां नर-नार री मायड़ भासा 'राजस्थानी' नैं भारत रै संविधान में बराबरी सूं करोड़ां मोल री भारतीय भासा सिकारणी पड़सी। फळसी-फूलसी भारत में राजस्थान ग्रर राजस्थानी भासा।

गांधी-नेहरू युगांतरै री प्रधान मंत्री इन्दिरा गांधी जे कदास ग्रणसमझी-

अणदेखी अर असमाणता रै अंधारै में गपतागोळी खाय'र भारत रै संविधान में न्याय बराबरी री करोड़ां लोगां री मातर भासा "राजस्थानी" नैं तुरता-फुरती सूं मानता देवण-दिरावण में चूक करसी तो संविधान पेटै असमाणता अर अन्याय रो सगळो भूंड-काळूंछो रो ठीकरो-काळो टीको वींरै माथै ! पण जदकद बेगोबेग भारत रै संविधान में मणमान सिकारणें जोगी है आपणी मायड़ भासा राजस्थानी ! पक्को भरोसो है, निसचै ही भारत रै संविधान में सिकारीजसी आपणी मायड़ भासा राजस्थानी। आसा है इन्दिरा गांधी न्याय-समाणता रै नावै करोड़ां लोगां री मातरभासा राजस्थानी नैं तुरता-फुरती सूं भारत रै संविधान में बराबरी री मानता दिराय अेक मोटै जस री भागण बणसी। भूंड-काळूंछो रो ठीकरो-काळो टीको कोनी कढावैली। पक्को भरोसो है पण भरोसै रो भैस पाडो नीं लावै जद जाणीजसी। सांति वापरसी थां-म्हां सगळां रै हियै।

श्रीमद्भगवद्गीता रै राजस्थानी अनुवाद करणै सारू मूळ सुमरण अर प्रेरणा रो उमाव तो मन्हैं म्हारा साथ-संगतिया नानाजी श्री मथुरादासजी जोसी, दादी मां सिरदारी, पिता श्री रामरखजी पांडिया, मां श्रीमती सुगुणीदेवी अर जोड़ायत सूरज पांडिया सूं मिल्यो जिण सूं गीता रा गीत गूंजता-गूंजता म्हारै हियड़ै रै मांय ऊंडा पैठग्या। म्हांरा बडेरा ऋषि-मुनि वसिष्टजी-परासरजी-वेद व्यासजी, सुखदेवजी अर स्यामपांडियाजी सूं भी घणी प्रेरणा मिली। मानीता संत महातमा करपात्रीजी, स्वामी रामसुखदासजी, श्री विवेक नाथजी, श्री शंकरनाथजी महाराज, श्री रामगोपालजी मोहता, श्री भ्रमणसा जोसी, श्री कोटी महाराज गोस्वामी, श्री बेबा महाराज, श्री मघारामजी वैद्य, श्री सोमेश्वरानन्दजी भारती, जैनाचार्य श्री नगराजजी, श्री नाना लालजी, श्री पूज्य जिनचन्द्र सूरीजी, श्री लब्धि विजयजी, मुनि श्री कमल विजयजी बांमणवाड़जी सूं भी घणीं मोकळी प्रेरणा मिली :

गीता रै राजस्थानी अनुवाद करण में सुमरण अर प्रेरणा रै सुर में घणों उमाव वधावण में घणों नामी नाँव राजस्थान रा लोकनायक, जननेता, विधायक म्हांरा घणा नैड़ा साथी सुरगवासी श्री मुरलीधरजी व्यास रो है। खाखीबाबा म्हांरै बीकाणैं रा महाराजा गंगासिंहजी अर महाराजा सादूळसिंहजी सूं भी मन्हैं राजस्थानी में गीता लिखण री प्रेरणा मिली जिणनैं हूं कियां बिसरा सकूं हूं।

संस्कृत-हिन्दी-राजस्थानी रा घणा प्यारा घण मानीता लिखारा, म्हांरा साहित रा अग्रज सेवादार सुरगीय श्री सूरजकरणजी पारीक, श्री नरोतमदासजी स्वामी, ठा० रामसिंहजी, कवि प्रो० चन्द्रदेवजी शर्मा, श्री शम्भूदयालजी सक्सेना,

श्री मुरलीधरजी व्यास 'राजस्थानी', श्री विद्याधरजी शास्त्री, श्रीचंदरायजी माथुर, श्री जगदीश प्रसादजी दीपक, श्री गणेशी लालजी व्यास 'उस्ताद' श्री सुमनेशजोसी श्री भतमालजी जोसी, श्री अगरचन्दजी नाहटा, एल. पी. टैसीटोरी, मनुजदेपावत, मस्तान, श्री रामनाथ व्यास परिकर, रविन्द्रनाथ टैगोर और मीराँ आदि सूँ भी मन्हें घणों उमाव मिल्यो कलम चलावण में ! बाँ सगळाँ रा नाँव भुलायाँ कद सरै !

ऊपरळी सगळी वाताँ साँतरी हुँवताँ थकाँ भी आपणैं वीकानेर रा कळकंतै परवासी-निवासी भाई-वंधु सर्व श्री मनूलाल आत्मज श्री मगनलालजी पारख श्री चान्दमल आत्मज श्री भीकमचन्दजी अभाणी, श्री वालचन्द आत्मज श्री सोहनलालजी साँड, श्री रामबाबू अत्मज श्री छगनलालजी भट्टड़, श्री नारायणदास आत्मज श्री आसारामजी मूंधड़ा, श्री माणकचन्द आत्मज श्रीसौभाग्यमलजी रामपुरिया, श्री प्रेमरतन आत्मज श्री अमरचन्दजी बिस्सा, तथा वीकानेर वसंता घण मानीता डा० करणी सिंह जी ऑफ वीकानेर (महाराजा गंगासिंह जी ट्रस्ट व करणीसिंह फाउण्डेशन ट्रस्ट) भू० पू० विधायक भाई गोपाल जोसी (छोटू-मोटूजोसी), श्री तुलसीरामजी आचार्य आत्मज श्री आसूरामजी आचार्य, डॉ० प्रेरमतन आचार्य आत्मज श्री नन्दलालजी आचार्य श्री अक्षय चन्द्रजी शर्मा, भाई श्री द्वारका प्रसाद जोसी आत्मज श्री धनसुखदासजी जोसी अर भाई भँवर लाल कोठारी आत्मज श्री मेघराज जी कोठारी री उरळै हियै सूँ करी मदद विनाँ श्रीमद्भगवद्गीता रो भीमानन्दी राजस्थानी अनुवाद आपरै हाथाँ में इण रूप में समरपण कर पुगावणो म्हारै बूतै में ही कोनीं हो। घणैं मान सूं धन्यवाद रा पात्र है सगळा मानीता भाई-बंधु अर भीरी-भायला जिकाँ म्हारी साधना नैं साधण जोग सफळ बणावण में आपरै समरथ सारू घणी मोकळी मदद करी। इण रै अळावा म्हारा धाकड़-धाड़फाड़ संगळिया-साथी, भाई-भायला, सगा-परसंगी, साहित्यकाराँ-कलमकाराँ, चित्रकाराँ-पत्रकाराँ अर समाज रा साचा सेवादाराँ सगळाँ सूँ ही घणों लाड़-प्यार अर उमावो मिलतो रैयो जिकाँ सूं ही गीता रो ओ' अनुवाद-फळ आपरै श्री हाथाँ में है। आप सगळाँ लोगाँ नैं ओ' फळ किसोक लाग्यो-चाख'र लिख भेज्याँ सूँ हीज जाणीजसी !

आ घणैं हरख री वात है कि साँखला प्रिंटर्स, वीकानेर रा व्यवस्थापक श्री दीपचन्द साँखला गीता नैं आछी सूँ आछी छापण में घणी-मोकळी लगन लगाई। धन्यवाद अर बधाई रा हकदार है।

चाखो अेक अम्मरफळ चाखो

गीता जिसी मैं जाणी-समझी है गोखताँ-गोखताँ, घणैंमान सूँ समरपित

कर भेंट है वां सगळां नैं पोगतां-पोगतां । श्रीमद्भगवद्गीता रो भीमानन्दी राजस्थानी अनुवाद घणैमान सूं आदरजोग श्री विद्याधर जी शास्त्री रै श्री चरणां में समरपित भेंट कियो है, पण आपां सगळा आगै विश्व रा लोग, जुगां-जुगां ताईं जीवता-जागता परमाणंद रो लाभ लेतांरा ओ' मन में भरोसो है । आपां सगळा पर आगामी आगै आवणवाळी पीढ्यां रै हाथां में गीता रो भीमानन्दी राजस्थानी अनुवाद भेंट है । 'अे गीता रा गीत अठारै' गावता रह्यां तो म्हारी मेहणत सफळ हुयसी । गीता मंगलकारी रैसी ।

गीता में सगळां सूं अणोखा नगाड़ा "वादां में हूं मारवाद हूं" री मांगळिक धुन ही राजनीति अर समाज रचणा में ध्रुवीकरण री धुरी है । जकी मैं पढी-गोनी अर जाणी-समझी है । आ ही मांगळिक धुन "वादे-वादे जायते तत्व बोध" में है । मारवाद रो सुर ही अेकेसार, मैं समरपण भाव है—"आव रे अरजुन ! अेक म्हारी ही सरणा में आव" भगवान री मेर-मेर पुकार-सुणणें अर अेकमतैं चालणें में ही परमाणंद अर मोक्ष है । मारवाद सूं हीज अेक सांगोपांग सुखी विश्वराज-समाज री रचणा हुय सकै है ! आगै भगवान जाणें—कूंकर के हुयसी ?

गीत देवकीनन्दन गायो
अेक सास्त्र ही गीता गान
सुमरण अर आराधण जोगो
देव अेक श्री कृष्ण सुजान
मंत्र अेक श्री कृष्ण नांव ही
सेवा करम परम भगवान

बीकानेर
दिनांक १४ नवंबर १९८४
नेहरू जन्म दिन-बाल दिवस
ग्रंथ विमोचन परव

भीमपाँडिया
विश्वाम्बिका भवन
आशापुरा नयाशहर, बीकानेर
२ अक्टूबर, १९८४

श्रीमद्भगवद्गीता

भीमानन्दी राजस्थानी अनुवाद

बिनती

थे हो मात-पिता दोउँ म्हाँरा
थे ही भाई-सखा सुजान
थे ही हो विद्या-धन दौलत
थे ही हो सब कुछ भगवान

ध्यान

परम साँत मुख मण्डळ सोया सेषनाग सैया सिणगार ।
कमळनाभ प्रभु देव-देवाँरा सकळ जगत जीवण आधार ।।

आसमान ज्यूँ सगळै व्यापत मेघवरण सुभ अंग सुजान ।
कमळनैंण श्रीवर लिक्षमी रा मिलै जका जोग्याँ घण ध्यान ।।

सकळ लोक रा पाळक स्वामी जलम-मरण भय जका मिटाय ।
लुळ-लुळ नमस्कार उण प्रभुवर श्री विष्णूँ नैं सीस निवाय ।।

मँगळाचरण

विजै देव गजवदन विनायक चरण कमळ में ध्यान धराय ।
सूरज मेटै जियाँ अँधेरो कर सुमरण सब विघन मिटाय ।।

सुमुख अेकदंतो सुभ कपिळो गजकरणो लम्बोदर जाण ।
नित विकटो नित विघन नासणो ध्याय विनायक सदा सुजाण ।।

धूमकेतु श्री गणाध्यक्ष अर भालचन्द्र गजवदन सुजाण ।
सुणें–पढै सुमरण नित ध्यावै बारह नांव मांगळिक जाण ।।

विद्यारंभ विवाह सुवेळा घर परवेस–निकास सुजाण ।
संकट अर संग्राम घिरागां पड़ै विघन नहिं निसचै जाण ।।

धारण वदन ऊजळा वसतर चांदवरण परसाण चित जाण ।
ध्याय चतुरभुज रूप विष्णु रो विघन विनासण सकळ सुजाण ।।

मन इंछा पूरण सिध साधण देव–देव सव पूजै ध्याय ।
सगळां रा सव विघन विनासण नित गणपत नैं सीस नवाय ।।

नमूं व्यास ! नाती वसिष्ठ रो पोतो सक्ति तपोनिध जाण ।
रिसी परासर जी रो बेटो मुनि सुखदे रो पिता सुजाण ।।

व्यास विष्णु रै रूप मनीजै विष्णू व्यास रै रूप सुजाण ।
नमूं ब्रह्मनिध व्यास देव नैं निव वसिष्ठ वंसज प्रभु जाण ।।

विनां च्यार मुखवाळा ब्रह्मा दो हाथांळा विष्णू जाण ।
विनां तीसरै नेतरवाळा महादेव साक्षात सुजाण ।।

आतम हेलो

हूं नाती उण आदवंस रो प्रभु किरपा पर घणों गुमान ।
स्यामपांडियै री धरती पर भीमपांडियो भगत सुजाण ।।

जलम जितै जगती पर धारूं जगतपती री जोत पसार ।
जननी जलम भोम रो कण–कण सदा उजाळूं वणूं न भार ।।

अरज करूं सुगुणी रो जायो राखीजै नित कलम सुवाव ।
सुभ पारासर वंस उजाळूं नित निरमळियो करम सुभाव ।।

जको ब्रह्म जाणैं सो ब्राह्मण सबनैं दीजै पुण्य फळाव ।
आखा भूत प्राणियां सुख दूं ओ' गीता रो ज्ञान सुणाय ।।

सबनैं निरमळ हरी भजन दूं सगळा नैं दूं प्रभु रो प्यार ।
सगळां नैं जीवण जस जोती सुभ गुणियां मोती सिणगार ।।

मुगती रो फळ बीज फळंतो धरती रो करदूं सिणगार ।
मोटी महर हुवै प्रभु री तो तन मन कदै न आवै हार ।।

भींव भगत नैं सतपथ दीजो फूल–फळै सगळो परिवार ।
प्रभु थाँरो गुण गाऊँ जगत में मिनख जमारै बारम्बार ।।

भाई–भायेलाँ भेळप दीजो नेह भरयो सगळो संसार ।
सगळै माण–समाण सवायो जलम–जलम रो जस आधार ।।

माँ

कुळदेवी म्हाँरी माँ जगदंबा आ म्हाँरै सागै आ ।
दुसमणियाँ सूँ करी रुखाळी संकट सभी टळा ।।

पूजा और पुजापो ओ ही धूपूं ध्यान धरा ।
छप्पन भोग दाळ–घी–दळियो रुच–रुच भोग लगा ।।

छान–झूंपड़ा–घर–आसरिया राम कुटैया छा ।
मुळकतड़ा टाबर आँगणियै अन धन सभी पुरा ।।

सरब ओपमाँ लायक भाषा वाणी मधुर गुंजा ।
सातूँ सुर में गाऊँ सुरीलो इमरत रस वरसा ।।

दिव्य दीठ दै दिव्य तेज दै हिवड़ै जोत जगा ।
आखो विस्व अेक घर करदूँ घर–घर मंगळ गा ।।

कण–कण में सुख सोरम भरदै मारग सुगम वणा ।
पग–पग विजै दान दै जग में लाल धजा फुरका ।।

• • •

श्रीमद्भगवद्गीता

[भीमानन्दी राजस्थानी अनुवाद]

अै गीता रा गीत अठारै
ध्याय विषै री विगत वखाणूं



सुर संपै माँ सारदा सुख सरसै संसार



महर्षि परासर



महर्षि वेदव्यास

आभार

आ ई म्हारी मेहर घणी सराईजै। संस्थान जोग साह्य करण वाळी, धरमादिमाळी जोग सराहै सर थारो संतस-वीणाम सूं साह्य करणी में मदद करै जद आं रो रातो पूरो गर लिखदो मनाको ...। आपणी सुर-सुतो सौं सुर मीठाई घर बजाय सराहै सबै नो है थणी गर्वी-ढळीं रो गात गानो। भाईचार श्रीमातीदिवस री सुतरता से भेटपोर सूं जगनायी श्रीमद्-भगवद्गीता रो ओळभारी राजस्थानी अनुवाद रचायो, जिसमें थोड़ै कठी सूं ही दायो सुरंग भी सीधो हुसयो। थाणी दूंगै मोटो अनुवाद करावो-सुणरायो थाजाम मोद काम किसो नो थणी हृदय री बात सूं ओपति हो है।

सगळी बात ओक हुवतां थकां भी इण रचणां रै छापण आसानी नाम मानीता मददगार सुजाणां रा सिमरण रा नाम इण भांत—

1. जैनाचार्य श्रीपूज्य जिनचन्द्रजी सूरि, बड़ा उपासरा बीकानेर
2. डॉ. करणीसिंहजी आढ बीकानेर
3. श्री नारायणदास आत्मज श्री गोपालदास जी बजाज बीकानेर-कलकत्ता
4. श्री हनुमान आत्मज श्री मदनमलजी पारख ,,
5. श्री मोहनलाल आत्मज श्री भीखमचन्दजी बाफणा ,,
6. श्री रामचन्द्र आत्मज श्री मोहनलालजी मोदी ,,
7. श्री रामदेव आत्मज श्री सुगनलालजी भट्टड़ ,,
8. श्री माणकचन्द आत्मज श्री सोभागमलजी रामपुरिया ,,
9. श्री भवरलाल आत्मज श्री मेघराजजी कोठारी बीकानेर

बी उणरै हियै सूं करी मदद बिना औ गीता-ग्रन्थ आप लोगां रै हाथां में छाप'र पुगावणो म्हारै बस-बूते में ई कोनी हो। आं सगळां री हियोड़ी मिनखाई ने आपून मदद रा उपाव धिन-धिन। आपणी हियोड़ी लोगां री मातरभाषा राजस्थानी धिन-धिन।

सुगुणीदेवी/श्री रामरखजी पांडिया

श्री दादाबाड़ी
गांव केसरदेसर जाटान पांडियांळो
बीकानेर (राजस्थान)

सुगुणी प्रकाशन
विश्वाम्बिका भवन
आशापुरा नयाशहर, बीकानेर

श्रीमद्भगवद्गीता

भीमानन्दी राजस्थानी अनुवाद



सुगुणी प्रकाशन, बीकानेर

विश्वाम्बिका भवन

आशापुरा नयाशहर, बीकानेर (राज.)

समरपण रा सुर

भारत रा तीन राष्ट्रपतियां मांयलो डॉ. [illegible], डॉ. [illegible] और डॉ. [illegible] [illegible] विद्वानां [illegible] [illegible] "श्रीमद्भगवद्गीता" [illegible] आशीर्वाद दियो ।

[सार्वजनिक [illegible] १९५८ में [illegible] ।]

विद्याधर गुरु रा गुरु

धन्य भाग बीकाण, जन्मीया जद जिन हुई,
विद्याधर विख्यात, मींनी माहिम मुलक में ।
विज्ञोंणी री गार, संस्कृत – हिन्दी – मारुवी,
सूम-शुभ जस गाय, आयो भारत मुळकियो ।
नमण-नमण-भरपूर, मिनखी मीठा बोलणा,
गुरुणी गुरज-उजास, ऊजळ नांव कमाइयो ।
धन्य कुल में पाय, कोडावे मरुधर धरा,
नींव नवावें माथ, विद्याधर गुरु रा गुरु ।

घणंमान सूं

श्रीमद्भगवद्गीता

भीमानन्दी राजस्थानी अनुवाद

घणैं मान समरपित

श्री विद्याधरजी शास्त्री नैं



जन्म २ अगस्त १९०१
चूरू (राजस्थान)

निर्वाण २४ फरवरी १९८३
बीकानेर (राजस्थान)

श्रीमद्भगवद्गीता

भीमानन्दी राजस्थानी अनुवाद



जन्म १६ जुलाई १६२६ वीकानेर (राजस्थान) — भीमपांडिया — वि० सं० १६८६ आषाढ़ सुदी १३

श्रीमद्भगवद्गीता
भीमानन्दी राजस्थानी अनुवाद

पहलो अध्याय

अरजुन विषाद योग

धृतरासटर पूछ्यो–

धरम भोम कुरुखेत बिचाळै झगड़ो झोय हुया भेळा
कोरू-पाँडू-पूत कियो के संजय ! उण जुध री बेळा ।। १-१ ।।

संजय बतायो–
सजी पाँडवी सेना निरखी व्यूह तणी दुरजोधन राय
उण वेळा राजा जा बोल्यो द्रोण गुरू रै नेड़ै जाय ।। १-२ ।।

द्रुपद पुत्र ज्ञानी सिष द्युमणै पाण्डव सेन सजी व्युह ताण
गुरुवर आप निरखल्यो इणनैं दळ-वादळ ऊभी जुध ठाण ।। १-३ ।।

अरजुन-भींव जिसा धनुधारी इण सेना में वीर अनेक
सातक द्रुपद विराट महारथ ऊभा जुध री राखण टेक ।। १-४ ।।

धृष्टकेतु अर चेकितान है पुरुजित कुंतीभोज महान
कासीराज सैंव्य नर नाहर ऊभा सूर काळजो ताण ।। १-५ ।।

जुधामन्यु उतमौजा ऊभा अभिमन्यू वळवीर महान
पाँचूं पुत्र द्रौपदी रा भी सगळा महावळी मैंदान ।। १-६ ।।

व्राह्मणदेव म्हाँरळै पख में जोधा जाणो आप प्रधान
म्हाँरी सेना रा सेनापत थाँ सेती हूँ करूँ वखाण ।। १-७ ।।

थे हो, दादो भीष्म, करण है कृपाचार्य जुध जीतणिया
विकरण अर अस्वत्थामा है सोमदती भूरीसरवा ।। १-८ ।।

सुणो महीपत, 'हृषीकेस हे !' कह्यो कृष्ण नैं वचन उचार
अरजुन बोल्यो–
हे अच्युत ! रथ नैं थे थामो दोनूँ सेना मध ठहरार ।। १-२१ ।।

नेक निरखलूँ जुध मद-माता जोधावाँ नैं निजर पसार
जुध करणों लायक किण सागै सावळ करलूँ सोच-विचार ।। १-२२ ।।

दुरजोधन दुरबुध हित आया जका-जका राजा रणमाँय
उण सूराँ नैं हूँ निरखूँलो जको भलो उणरो मन चाय ।। १-२३ ।।

संजय बतायो–
धृतरासटर महाराज !, कृष्णजी सुण अरजुन री सारी बात
रणभोमी रै बीच-विचाळै उत्तम रथ नैं दीनो थाम ।। १-२४ ।।

भीष्म द्रोण राजावाँ सामैं कह्यो कृष्ण रथ नैं ठहरार
जुद्ध करणनैं आया कौरव निरख पारथा निजर पसार ।। १-२५ ।।

इण उपराँत अरजुनैं निरखी दोनूँ सेना निजर पसार
दादा काका भाई भतीजा मामा पोता गुरुवर त्यार ।। १-२६ ।।

सुसरा सजन सनेही ऊभा जुध भोमी में लड़ण तण्या
निरख्या निजर पसार अरजुनैं भाई–बेली सभी जणा ।। १-२७ ।।

सोक व्याप घण हुयो गळगळो अरजुन कह्यो कृष्ण भगवान
अरजुन बोल्यो–
सजन सनेही सगळा निरखत जूँझण ऊभा जुध मैदान ।। १-२८ ।।

सिथळावै सब अंग म्हाँरळा मुखड़ो भी सूखंतो जाय
तनड़ो काँप धूजणी छूटै रूँआळी सब तणती आय ।। १-२९ ।।

पड़ै धनुष गाण्डीव हाथ सूँ बळै घणी काया री चाम
मन भरमायो–सो है म्हाँरो ऊभण सकूँ न समरथ राम ।। १-३० ।।

उलटा लछण केसवा निरखूँ निजर पसारूँ जूनैं जोय
मार जुद्ध में सुजण–कुटुम्बी कुळ में श्रेय न दीसै कोय ।। १-३१ ।।

[illegible]
[illegible] ॥ १-३२ ॥

[illegible]
[illegible] ॥ १-३३ ॥

[illegible]
[illegible] ॥ १-३४ ॥

[illegible] मधुसूदन ! [illegible]
[illegible] ॥ १-३५ ॥

धृतराष्ट्र रा पुत्र [illegible]
[illegible] ॥ १-३६ ॥

धृतराष्ट्र रा पुत्र बंधु [illegible] नहिं जोग
[illegible] ॥ १-३७ ॥

लोभ-भ्रष्ट-चित्त हुया लोग जे [illegible]
मित्रों [illegible] पाप नहिं [illegible] कुळ नासण रो [illegible] दोस ॥१-३८ ॥

कुळ नासण रो दोस हुवै भी आपाँ आपाँ जका निहार
पाप करम सूँ बचणो [illegible] करणो नहिं क्यूँ न विचार ॥ १-३९ ॥

कुळ नास्याँ कुळ धरम सनातन नष्ट-भ्रष्ट सगळा हुय जाय
धरम नास सूँ सगळे कुळ ने काळो [illegible] पाप दबाय ॥ १-४० ॥

वणें पाप वधियाँ वण माड़ी कृष्ण सभी बिगड़ै कुळनार
जणें वरणसंकर संतानाँ कुराटण वण वै दोसण नार ॥ १-४१ ॥

कुळघाती कुळ नरक पठावण हुवै वरण संकर संतान
पतित हुवै सब पितर लोग भी लोप हुयाँ जळ-पिण्डाँ दान ॥ १-४२ ॥

वरणसंकरी इण दोसाँ रै व्याप्याँ सगळा भ्रष्ट हुवै
कुळघात्याँ कुळ धरम सनातन जात धरम सब नष्ट हुवै ॥ १-४३ ॥

इसो सुण्यो है म्हे जनारदन कानाँ करण जोग विसवास
नष्ट हुयो कुळ धरम मानखो अणँत काळ लै नरकावास ।। १-४४ ।।

हाय सोक है सुध-बुध धारी बडो पाप करणैं म्हे त्यार
राज भोग सुख लोभ कारणैं सँभिया कुळनैं देवण धार ।। १-४५ ।।

ससतर धारी धृतरासटर रा सुत लेवै जे रण में मार
बिन-ससतर बिन कियाँ सामनो मन्हें मारणों घण हितकार ।। १-४६ ।।

संजय बतायो–
रणभोमी में सोक-गळगळो अरजुन इणतर वचन उचार
धनुष-बाण नैं नाँख धनंजै रथ में जाय बैसियो लार ।। १-४७ ।।



कृष्ण जीतणो हूँ नहिं चाहूँ और राज सुख री नहिं चाह
राज भोग जीवण सूँ गोविंद कीं परयोजन दीसै नाँय ।। १-३२ ।।

राज भोग सुख री म्हे मन में जिणाँ कारणें राखाँ चाह
धन जीवण री आस छोड़नें वै ही आ ऊभा जुध माँय ।। १-३३ ।।

गुरुवर पितर पुत्र अर दादा पोता जुद्ध करण के जोग
मामा साळा सुसरा जुध में खड़ा सामनें समधी लोग ।। १-३४ ।।

मन्हें मारियाँ भी मधुसूदन! मारूँ इणाँ नहीं मन माँय
धरती तो तुछ तीन लोक रो राज मिलै तो भी नहिं चाह ।। १-३५ ।।

धृतरासटर रा पूत मारियाँ खुसी हुवै के म्हाँ मन माँय
इण पापीड़ाँ नें मार्‍याँ भी माधव पल्लै पाप वँधाय ।। १-३६ ।।

धृतरासटर रा पूत वंधु जण म्हे माराँ म्हाँरै नहिं जोग
कुटुम–कबीलो मार्‍याँ माधव कियाँ मिलैलो सुख रो भोग ।। १-३७ ।।

लोभ-भ्रष्ट-चित हुया लोग अै चेताचूक हुया खो होस
मितराँ बैर पाप नहिं जाणें कुळ नासण रो गिणें न दोस ।।१-३८ ।।

कुळ नासण रो दोस हुवै सो आपाँ जाणाँ जको विकार
पाप करम सूँ बँचणें सारू करणो चहियै क्यूँ न विचार ।। १-३९ ।।

कुळ नास्याँ कुळ धरम सनातन नष्ट-भ्रष्ट सगळा हुय जाय
धरम नास सूँ सगळै कुळ नें काठो लेवै पाप दबाय ।। १-४० ।।

घणों पाप बधियाँ घण माड़ो कृष्ण सभी बिगड़ै कुळनार
जणै वरणसंकर संतानाँ दुसटण बण बै दोसण नार ।। १-४१ ।।

कुळघाती कुळ नरक पठावण हुवै वरण संकर संतान
पतित हुवै सब पितर लोग भी लोप हुयाँ जळ-पिण्डाँ दान ।। १-४२ ।।

वरणसंकरी इण दोसाँ रै व्याप्याँ सगळा भ्रष्ट हुवै
कुळघात्याँ कुळ धरम सनातन जात धरम सब नष्ट हुवै ।। १-४३ ।।

इसो सुण्यो है म्हे जनारदन कानाँ करण जोग विसवास
नष्ट हुयो कुळ धरम मानखो अणँत काळ लै नरकावास ।। १-४४ ।।

ह़ाय सोक है सुध-बुध धारी बडो पाप करणैं म्हे त्यार
राज भोग सुख लोभ कारणैं सँभिया कुळनैं देवण धार ।। १-४५ ।।

ससतर धारी धृतरासटर रा सुत लेवै जे रण में मार
बिन-ससतर बिन कियाँ सामनो मन्हें मारणों घण हितकार ।। १-४६ ।।

संजय बतायो–
रणभोमी में सोक-गळगळो अरजुन इणतर वचन उचार
धनुष-बाण नैं नाँख धनंजै रथ में जाय बैसियो लार ।। १-४७ ।।

• • •

दूसरो अध्याय

सांख्य योग

संजय बतायो--

आकळ-बाकळ सोकाकुळ लख अरजुन आँख भरायो ज्यूँ
मधुसूदन भगवान दयाकर अरजुन नैं समझायो यूँ ।। २-१ ।।

भगवान बखाण्यो--

अधरम जोग कुजोग अरजुना वेमौकै क्यूँ मोह करै
सरग टाळ अपजस करवावै इसी आँख क्यूँ आज झरै ।। २-२ ।।

थारै जोग कायरी कोनी मत बण तूँ कायर-लाचार
हियो दूबळो मत कर अरजुन जुद्ध करण नैं हुयजा त्यार ।। २-३ ।।

अरजुन बोल्यो--

समरभोम में कियाँ चलाऊँ भीषम-द्रोण काळजाँ वाण
पूजनीक दोनूँ ही म्हाँरै ऊभा समुख काळजो ताण ।। २-४ ।।

वध न करूँ गुरुजन है म्हाँरा बाँनैं मार कियाँ तरसूँ
लोही-लिवड़िया भोग न भोगूँ भीख माँग भोजन करसूँ ।। २-५ ।।

म्हे नहिं जाणाँ के आछो है जुद्ध करां का माँगाँ भीख
समधी मार जियाँ नहिं इंछा किण री हार किणाँ री जीत ।। २-६ ।।

ममता मोह घिरायो छतरी चेताचूक न चित्त ठिकाण
हूँ सरणागत सिष्य आपरो भली सीख देवो भगवान ।। २-७ ।।

मनाँ-इन्दरियाँ सोक मिटावै लखूँ न कोई इसो उपाय
दुसमण देव सकळ वस करलूँ तो भी राज-भोग सुख नाँय ।। २-८ ।।

संजय बतायो--

राजन ! खुलो खुलासा बोल्यो कृष्ण तणों अरजुन मुख खोल
जुद्ध न करूँ बात इतणी-सी मौन हुयो अरजुन यूँ बोल ।। २-९ ।।

दो सेना रै बीच-बिचाळै अंतरजामी सकळ सुजान
सोकाकुळ अरजुन नैं कहियो होळै-सी हँस थी भगवान ।। २-१० ।।

भगवान बखाण्यो--

सोक करै पिंडत ज्यूँ बोलै जका सोक करणैं नहिं जोग
मर्याँ-जियाँ रो सोक न लावै पण मनड़ै में पिंडत लोग ।। २-११ ।।

किणीं काळ हूँ तूँ अै राजा कोनी हा अरजुन मत जाण
फेर भळै आगै न हुवाँला आ भी तूँ मन में मत आण ।। २-१२ ।।

बाळ जवानी बिरध अवसथा भोगै है ज्यूँ सकळ सरीर
खोळ बदळ भी करै आतमा मो-माया में फँसै न धीर ।। २-१३ ।।

छिणभंगुर सब भोग इन्द्रियाँ गरम-सरद सुख-दुख संजोग
भरत वंस रा लाल अरजुना करलै सहन सहन रै जोग ।। २-१४ ।।

आकळ-बाकळ कर न सकै रे धीराँ नराँ इन्द्रियाँ भोग
सम सुख-दुख समझै सो धीरो अरजुन मोख-मुगत रै जोग ।। २-१५ ।।

अरजुन नहीं असत री सत्ता सत रो कोनीं अठै अभाव
ज्ञानी तत्व छाण लख दोनूँ निरणैं कियो खुलासा साव ।। २-१६ ।।

चेतन तत्व सदा अविनासी अरजुन तूँ अविनासी जाण
उण चेतन नैं कूण विनासै कोई भी नहिं समरथवाण ।। २-१७ ।।

नासवाण है देह अरजुना पण नित रैवै आतमा-प्राण
उठ जुध कर बळवीर भारता अजर-अमर जीवातम जाण ।। २-१८ ।।

मरै न मारी जाय आतमा निसचै जो जाणैं सो जाणैं
मरण-मारणैं जोग आतमा जो जाणैं सो ठीक न जाणैं ।। २-१९ ।।

जलम न लै नहिं मरै आतमा हुयो न हुयसी भविस सुजाण
तन मरियाँ भी मरै न सासत अमर आतमा नित्य पुराण ।। २-२० ।।

अविनासी अज अमर आतमा पारथ जो नर जाण विचारै
वो नर भलाँ मारणैं खातर किणनैं तेड़ कियाँ किण मारै ।। २-२१ ।।

बोदा बसतर त्याग पुरुष ज्यूँ नूँ आ-निकोरा वसतर धारै
त्यूँ बोदो तन तजै आतमा नुँ ई-निकोरी काया धारै ।। २-२२ ।।

अमरी इसी आतमा इणनैं काटण सकै न ससतर पाय
गाळ न बाळ सकै जळ अगनी सकै न इणनैं पून सुखाय ।। २-२३ ।।

अणछेदी अणबळी आतमा अणभीजी अणसोख बराण
अेकरूप है सदा सनातन सरवाळै व्यापक थिर जाण ।। २-२४ ।।

अणभण अणचींत्यो अविकारी इसो आतमा रो है माण
सोक कदै नहिं करणों अरजुन इसड़ो ही मन में तूँ जाण ।। २-२५ ।।

नित जलमी अर मरी जु जाणैं इसौ आतमा रो जे माण
तो भी तो अरजुन इण तरियाँ सोक न करणों उचित सुजाण ।। २-२६ ।।

जो जलमै सो मरै जरूरी अरजुन तूँ निसचै ध्रुव जाण
इणतर अटळ विषै पर भी तो सोक न करणो जोग सुजाण ।। २-२७ ।।

जलमण सूँ ले मरण समैं तक दरसण भूत देवै संसार
मरयाँ पछैं हुय जाय अदीठा वाँरो सोक सफा वेकार ।। २-२८ ।।

इचरज देख सुणैं पिंडतजण इचरज भरी वखाणैं रे
पण कोई सुण पुरुष आतमा भली भाँत नहि जाणैं रे ।। २-२९ ।।

सकळ प्राणियाँ री देहाँ में वसी आतमा नहीं समाय
छोटा-मोटा इण जीवाँ हित तूँ अनुचित क्यूँ सोक समाय ।। २-३० ।।

धरम-करम सूँ विचळित होणो भलो न अरजुन लख संजोग
धरमजुद्ध सूँ वडो न कोई साधन श्रेय क्षत्रियाँ जोग ।। २-३१ ।।

धरमजुद्ध मुख पोळ सरग री धन्य जका क्षत्री जावै
मीन मेख इण में नहिं अरजुन अवस भोग सुख रा पावै ।। २-३२ ।।

जे तूँ धरम जुद्ध नहिं करसी धरम-करम-करतब टळसी
धरम-कीरती नास हुयाँ सूँ घोर पाप-भागी वणसी ।। २-३३ ।।

अपजस घणों बखाण्याँ जासी लोग-लुगाई घेर-घिराय
मरणैं सूं भी घण दुखदायी थिर अपकीरत सही न जाय ।। २-३४ ।।

गुणीं समझ आदर सूँ देखै वै नर भी करसी अपमाण
कायर जुद्ध-भगोड़ो कहसी अरजुन तन्हें हीण सब जाण ।। २-३५ ।।

थारै जोग हुवै के अरजुन इण सूं मोटी दुख री बात
दुसमणिया समरथ निंदैला तीखाँ बोल करैला घात ।। २-३६ ।।

जुध में मरयाँ सरग मिल जासी जीत्याँ मिलै राज सुख भोग
"का जीतूं का मरूँ जुद्ध में" दृढ़ निसचै कर जुद्ध सुयोग ।। २-३७ ।।

सुख-दुख हाणी-लाभ सरीसा हार-जीत सगळा सम जाण
इणतर कोई पाप न लागै अरजुन जुध करलै घमसाण ।। २-३८ ।।

ज्ञानयोग बुध सुणीं अरजुना करम योग बुध सुण चित लाय
जिणसूं करम बंधणाँ छूटै राग-द्वेष सब भरम मिटाय ।। २-३९ ।।

इण निसकामी करम योग में दोष न कोय बीज रो नास
थोड़ी-सी भी धरम ध्यावना मेटै जलम-मरण री त्रास ।। २-४० ।।

निसचै बुध निसकामी ज्ञानी अेक रूप अरजुन चित लाय
डाळ-डाळ अज्ञानी कामी बिखरोड़ा भटकै भरमाय ।। २।४१ ।।

फळ में कोरी प्रीत अरजुना कामी पुरुष लगावण लोय
घणी ओपती बात दिखाऊ कथै न इणसूँ मोटी कोय ।। २-४२ ।।

जलम करम-फळ सरग बडो है अज्ञानी जण भण बतलाय
भोगण भोग जोग धन दौलत किरिया करम घणा सिखळाय ।। २-४३ ।।

भरम भरी वाणी भटकाया धन-दौलत चित चेतो खोय
जका भोग पर लट्टू हुयग्या मन सुध बुध व्यापै नहिं कोय ।। २-४४ ।।

वेद काम तिगुणाँ जग व्यापै अरजुन तूँ हुयजा निसकाम
सुख-दुख योग-खेम टंटै सूँ टळजा बणजा आतमराम ।। २-४५ ।।

नदी नीर मिलियाँ कद भावै ताळ-तळाव छिलरियाँ नीर
ज्यूँ ही ब्रह्मानन्द मिल्याँ नर तजै परोजन वेद सरीर ।। २-४६ ।।

फळ में नहीं करम में थारो अरजुन तूँ करलै अधिकार
छोड़ वासना करम फळाँ री धरम करम सूँ करलै प्यार ।। २-४७ ।।

फळ अभिळाषा त्याग धनंजै धारण करलै तूँ थिर योग
सिध अर असिध दोऊँ सम जाणो धरम करम ही योग सुयोग ।। २-४८ ।।

फळ री आस करम करियो नर दीन-हीन अर हेठो जाण
समत योग री सरण जाय कर करम अरजुना सकळ सुजाण ।। २-४९ ।।

समत योग धारी निसकामी पाप-पुण्य दोउँ नाँ लिपटाय
जलम-मरण रा बंधण टूटै अरजुन परम मोक्ष पद पाय ।। २-५० ।।

बुध योगी ज्ञानी जन अरजुन करम जण्या फळ त्याग जरूर
जलम-बंध सूँ छूट परम पद पाय अमर रस सूँ भरपूर ।। २-५१ ।।

मोह रूप दळ-दळ सूँ तरसी जद अरजुन थारी बुध लाग
उण बेला निसचै तूँ पासी सुणण जोग सुणियो वैराग ।। २-५२ ।।

भाँतरका सिद्धाँत सुण्याँ सूँ बुध विचळित घण हुई अजोग
थिर सुध बुध कर लियाँ समाधी तूँ पासी रे समत-सुयोग ।। २-५३ ।।

अरजुन पूछ्यो

थिर बुधवाण पुरुप रा लक्षण लियाँ समाधी के बतळाय
केसव ! किंयाँ बो बोलै-चालै बैठै सभी देओ समझाय ।। २-५४ ।।

भगवान वखाण्यो–

मन री सभी कामना त्यागै जिण वेळा अरजुन तूँ जाण
आतम सूँ आतम संतूठै उण वेळा थिर सुध-बुधवाण ।। २-५५

दुख आयाँ मन पीड़ न व्यापै सुख आयाँ मन करै न कोड
थिर बुधवाण मुनी कहळावै त्यागै जको राग भय क्रोध ।। २-५६

सुभ अर असुभ न सुख-दुख संपै मन में नेह न राखै कोय
बो नर थिर बुधवाण अरजुना सरब काळ सरवाळै होय ।। २-५७

थिर बुधवाण जको नर होवै विषै भोग सब देवै मेट
काछबियो ज्यूँ अंग समेटै सभी इन्द्रियाँ लेय समेट ।। २-५८

विषै-भोग तज दियाँ इन्द्रियाँ विषै मिटै पण मिटै न राग
पण मिलियाँ परमातम छूटै सुण अरजुन उण री रस राग ।। २-५९

जतन करै बुधवाण घणा पण जीत न सकै पुरुष री जात
मन-मथणी मन मथै इन्द्रियाँ अरजुन चित नैं हरै बलात ।। २-६०

उण नर री बुध थिर है अरजुन जो वस करलै सकळ सरीर
संयम धार इन्द्रियाँ योगी भगत हुवै म्हाँरो ही धीर ।। २-६१

ध्यायाँ विषै आसकी व्यापै मन में उठै काम री सोध
मन-इंछा जद हुवै न पूरी अरजुन उपजै भारी क्रोध ।। २-६२ ।

उपज्याँ क्रोध मूढपण व्यापै खोय विवेक भरम भरमाय
भरमजाळ फँस सुमरण सगती सुध बुध साधन सभी गँवाय ।। २-६३ ।

राग-द्वेष सूँ मुगत आपवस भोगत विषै इन्द्रियाँ भोग
पा लेवै परसाद अरजुना मन पर काट न लागै रोग ।। २-६४ ।

निरमळ मन सगळा दुख हरदै चित व्यापै आनंद सवाय
अरजुन जिण रो चित परसण है उणरी सुध बुध थिर हुय जाय ।। २-६५ ।

साधन हीण पुरुष नहिं पावै सुध बुध और आसतिक भाव
बिनाँ आसतिक भाव न साँयत बिन साँयत सुख कूँ कर आय ।। २-६६ ।

विषै-इन्द्रियाँ विचरण करताँ मन सुध बुध रो हरण करै
पवन विचरतो ज्यूँ जळ माँही तिरती-फिरती नाव हरै ।। २-६७ ।।

जकै पुरुष री सकळ इन्द्रियाँ सगळा विषयाँ सूँ नित दूर
अरजुन जो राखै मन काबू उणरी सुध बुध थिर सैंपूर ।। २-६८ ।।

जोगी बुद्ध जागरण जागै हुवै भूत प्राणी री रात
नासवान सुख भूत जगै जद तत्वमुनी समझै सम रात ।। २-६९ ।।

नदियाँ नीर मिलै समदर ज्यूँ अचळ सांति सूँ जाय समाय
भोग भिळयाँ थिर बुध धारी ही पाय सांति पण कामी नाँय ।। २-७० ।।

जको कामना ममता त्यागै छोडै अहंकार रस–राग
अरजुन वो ही पुरुष आतमा मन में पावै सांति सुभाग ।। २-७१ ।।

ब्रह्म मिलण री आही पोड़ी मिलियाँ मोह न फँसै सुजाण
अंतकाळ तक थित रैवै तो अरजुन वो पावै निरवाण ।। २-७२ ।।

• • •

तीसरो अध्याय

करम योग

अरजुन पूछ्यो–

प्रभु जनारदन जे थे मानो ज्ञान करम सूँ श्रेष्ठ बताय
तो फिर थे क्यूँ घोर करम में केसव देवो म्हें लगाय ।। ३-१ ।।

फोर-बदळ कह मोटो-छोटो ज्ञान-करम-बुध मोह फँसाय
प्रभु म्हाँरो कल्याण करै सो निसचै अेक कहो समझाय ।। ३-२ ।।

भगवान वखाण्यो–

दोय भाँत री निष्ठा अरजुन भाखी पहली लोक वखाण
ज्ञान योग सूँ ज्ञानी मोखै करम योग सूँ योगी जाण ।। ३-३ ।।

करम न करणैं सूँ निसकरमी हुय अरजुन सिद्धी नाँ पाय
और न करम त्यागणैं मातर सूँ भी कोई सिद्धी आय ।। ३-४ ।।

निसचै जाण समझले अरजुन कुदरत रो गुण धरम वण्यो
करम विनाँ क्षण टिकै न प्राणी जो कुदरत सूँ जलम जण्यो ।। ३-५ ।।

काम रोक जो जबर इन्द्रियाँ विषै भोग मन चावै रे
अरजुन वो ही मिथ्याचारी दंभी पुरुष कवावै रे ।। ३-६ ।।

मन सूँ वस में करै इन्द्रियाँ अणआसक होयो वो जाण
करम इन्द्रियाँ करम योग रो करै आचरण श्रेष्ठ सुजाण ।। ३-७ ।।

करम श्रेष्ठ कर करम अरजुना नीती नियत वखाणी रे
करम विनाँ काया नहिं चाले कटै नहीं जिनगानी रे ।। ३-८ ।।

यज्ञ करम सूँ करम दूसरा लग्याँ पुरुष ही करम बँधाय
छोड आसकी सदाचरण कर पारथ करम परम हित लाय ।। ३-९ ।।

प्रजा यज्ञ सँग रच परजापत आद कळप में कह्यो उचार
इष्ट कामणा थाँ देवणियो यज्ञ वधेपो दै विसतार ।। ३-१० ।।

उनती करो यज्ञ देवाँ री थाँरी उनती देव कराय
इणतर फरज समझ आपस में परम श्रेय वध लेसो पाय ।। ३-११ ।।

यज्ञ बधायाँ देव तूठियाँ थाँरै हित देसी प्रिय भोग
निसचै चोर जाण जो भोगै विनाँ दियाँ ही दीना भोग ।। ३-१२ ।।

यज्ञ सेष ही जो अन खावै श्रेष्ठ पुरुष सब पाप छुटाय
पापी लोग पेट पोखण हित पाप पकाय पाप ही खाय ।। ३-१३ ।।

यज्ञ करम सूँ और यज्ञ सूँ बिरखा बरस्याँ अन उपजाय
सगळा भूत अन्न सूँ उपजै सब प्राण्याँ नै अन्न पळाय ।। ३-१४ ।।

वेद उपजियो अविनासी सूँ करम वेद सूँ उपज्यो जाण
इंयाँ सरब व्यापी परमेसर सदा यज्ञ थित समझ सुजाण ।। ३-१५ ।।

सृष्टिचक्र अनुसार न बरतै लोक चलायै इण परकार
पुरुष इन्द्रियाँ सुख भोगणिया पाप उमर जीवै बेकार ।। ३-१६ ।।

पण जो राख आतमा प्रीती तूठै तिरप आतमा माँय
अरजुन जाण उणाँ पुरुषाँ हित दूजो कोई करतब नाँय ।। ३-१७ ।।

कियाँ-अणकियाँ भी इण जग में पुरुष कोय परयोजण नाँय
स्वारथ-समध सकळ भूताँ में उण रो अरजुन कीं न लखाय ।। ३-१८ ।।

अणआसक होयो सैळँग कर करतब करम भलाँ आचार
अणआसक हुय करम करंतो अरजुन पुरुष परम साकार ।। ३-१९ ।।

जनक जिसा ज्ञानी जन भी तो करयाँ करम ली सिद्धी पाय
लोक संगरै लखताँ भी तू अरजुन जोगो करम कराय ।। ३-२० ।।

श्रेष्ठ पुरुष जो करै पारथा आप आचरण नैं वरतार
वो जिसड़ो परमाण वतावै दूजा बरतै उण अनुसार ।। ३-२१ ।।

अरजुन जदी कोई भी करतब म्हारो तीन लोक में नाँय
मिलणजोग-अणमिली न बसतू तो भी करम करूँ वरताय ।। ३-२२ ।।

सावधान हुय करम न बरतूँ तो दूजो कुण करम कराय
ज्यूँ बरतूँ हूँ दूजा बरतै म्हारी नकल करंता जाय ।। ३-२३ ।।

छोड चलूँ जे करम पारथा सगळा लोक भ्रष्ट हुय जाय
जणक वरण संकर मैं होऊँ अर परजा रो नास कराय ।। ३-२४ ।।

मूढ करम ज्यूँ करै रात दिन आसक मन इंछा फळ चाय
त्यूँ ही करंण जोग विदवानाँ छोड आसकी फळ विसराय ।। ३-२५ ।।

ज्ञानी छूट करै मतिहीणाँ किरथीणाँ बुध भेद न लाय
मूढाँ सूं विदवान विवेकी सदाचरण कर करम कराय ।। ३-२६ ।।

कुदरत रै गुण धरम करम सब आपोआप हुवै आ जाण
मोह जाळ पण उळझ बावळा जाण "हूं करूँ" चाढै पाण ।। ३-२७ ।।

गुण करमाँ रै रूप-भेद नैं जाणणियो ततवंत सुजाण
हुवै नहीं आसक बावळियो गुण में गुण वरतै आ जाण ।। ३-२८ ।।

कुदरत गुण मोह्यो जण अरजुन गुण करमाँ आसकती छाय
पण ज्ञानी उण अणसमझाँ रा मन विचळण नहिं करै उपाय ।। ३-२९ ।।

अरजुन तूँ सुध बुध अध्यातम म्हाँ अरपण कर करम सुजान
मो-माया ममता आसा अर सोक त्याग कर जुद्ध महान ।। ३-३० ।।

मानैं मत निरदोस म्हाँरळो वरतै नित इण मत अनुसार
पुरुष सकळ करमाँ रै फळ सूँ मुगत हुवै पावै छुटकार ।। ३-३१ ।।

दोसी जका न ओ' मत पाळै वै कल्याण भटकिया जाण
चेताचूक मूढ वै प्राणी समझ पारथा अवुध अजाण ।। ३-३२ ।।

कुदरत भाव-सभावाँ चालै सब परवस हुय करम करै
ज्ञानवान भी टळै न कुदरत हठ कर वो के करै-धरै ।। ३-३३ ।।

इन्द्री-इन्द्री रै अरथाँ में राग-द्वेष रा भोग टळाय
मोक्ष-मुगत रै मारगियै में वै ही बैरी विघन कराय ।। ३-३४ ।।

अरजुन गुण हीणो स्वधरम भी परधरमाँ उत्तम घण जाण
स्वधरम चरण मरण कल्याणी पर धरमाचर नरक समान ।। ३-३५ ।।

अरजुन पूछ्यो–

तो फिर कृष्ण कियाँ बिलमायो भँवरजाळ किण रै भटकाव
लाग्यो पुरुष बलाती ज्यूँही पापाचार करै अणचाय ।। ३-३६ ।।

भगवान बखाण्यो–

अरजुन काम रजोगुण उपज्यो वो ही तो है क्रोध सुजाण
भोगाँ तिरपै नहीं अगन ज्यूं घण पापी वैरी तूँ जाण ।। ३-३७ ।।

आग धुंअै सूँ मळ सूँ दरपण जर सूँ ढकियो गरभ सुजान
बींतर अरजुन उणीं काम सूँ इण जगती में ढकियो ज्ञान ।। ३-३८ ।।

काम कठण तिरपै अर पूरै समझ अरजुना अगन समान
काम ज्ञानियाँ रो नित बैरी उण सूँ ही ढकियो है ज्ञान ।। ३-३९ ।।

मन बुद्धी अर करम इन्द्रियाँ काम रूप घर करै निवास
जीव आतमा नैं उळझावै ज्ञान ढकै मो–माया फाँस ।। ३-४० ।।

भरत वंस रा लाल अरजुना काबू पैल इन्द्रियाँ धार
ज्ञान और विज्ञान विनासक पापी काम मिटादै मार ।। ३-४१ ।।

तन सूँ श्रेष्ठ इन्द्रियाँ अर मन मन, सूँ बुद्धी श्रेष्ठ सुजान
बुद्धी सूँ भी घणी श्रेष्ठ है अरजुन सदा आतमा मान ।। ३-४२ ।।

इणतर बुध सूँ श्रेष्ठ आतमा तूँ बुध सूँ मन वस करजाण
अपणी सगती समझ अरजुना मार काम बैरी बळवाण ।। ३-४३ ।।

• • •

चौथो अध्याय

ज्ञान करम सन्यास योग

भगवान बखाण्यो–

आदकाळ सूरज रै सेती भाख्यो मैं अविनासी योग
सूरज मनु नैं मनु इक्ष्वाँकु नैं कह बतळायो बो ही योग ।। ४-१ ।।

पीढ़ी दर पीढ़ी यूँ चलताँ जाण्यो राज रिस्याँ जो योग
पण वीत्यो घण काळ, लोक सूँ अरजुन लोप हुयो बो योग ।। ४-२ ।।

वो ही योग पुराणो भाख्यो मैं अरजुन थारै हित जाण
जको घणो उत्तम रहस्य पण तूँ है भगत'र सखो सुजाण ।। ४-३ ।।

अरजुन पूछ्यो–

जलम आपरो अबैं हुयो है पण सूरज रो जलम पुराण
आदकाळ में आप बतायो आ हूँ मानूँ कियाँ सुजाण ।। ४-४ ।।

भगवान बखाण्यो–

थारा-म्हारा जलम घणाँ ही हुय-हुय बीत्या काळ पुराण
पण तूँ जाण सकै नहिं अरजुन उणरी हूँ ही राखूँ जाण ।। ४-५ ।।

हूँ अविनासी अर अणजणियो भूतेसर हूँ तो भी जाण
पारथ योग माया सूँ प्रगटूँ हूँ म्हारी कुदरत रै ताण ।। ४-६ ।।

जद-जद धरम घटै धरती पर अधरम वढै धरम घेराय
प्रगट हुँवूँ पारथ हूँ ही तो उणीं काळ निज रूप रचाय ।। ४-७ ।।

साधू पुरुष उबारण जग में पापीड़ाँ रो करण विनास
धरम धजा थापण नैं प्रगटूँ जुग-जुग में हूँ जुगरी आस ।। ४-८ ।।

जलम करम वो दिव्य अलोकी अरजुन जको तत्व लै जाण
काया त्याग कदै नहिं जलमै पूगै म्हाँरी ठोड़-ठिकाण ॥ ४-९ ॥

छोड राग भय क्रोध घणकरा आय सरण हुय अेकारूप
पावन हुया ज्ञान रै तप सूँ पायो म्हाँरो साँत सरूप ॥ ४-१० ॥

जो म्हाँनैं ज्यूँ भजै अरजुना हूँ भी वींनैं भजूँ वियाँन
म्हाँरो ही मारग सव भाँती वरत्याँ चलै पुरुष वुधवान ॥ ४-११ ॥

जका करम फळ लोक चाँवताँ इण धरती पर पूजै देव
बै नर तुरता-फुरत जगत में करम जणीं बा सिद्धी लेय ॥ ४-१२ ॥

ब्राह्मण क्षत्री वैस्य सूद्र सव गुण-करमाँ मैं रच्या सुजाण
मैं अविनासी करता नैं भी अरजुन तूँ अणकरता जाण ॥ ४-१३ ॥

हूँ करमाँ रै फळ नहिं लेपूँ करम फळाँ पर मोहित नाँय
म्हाँनैं जको तत्व सूँ जाणैं वो भी करमाँ नहीं वँधाय ॥ ४-१४ ॥

म्हाँरी सरण बडेराँ पुरुषाँ करियो इँयाँ इणीतर जाण
सदा कियो जो करम बडेराँ वो ही अरजुन कर चित लाण ॥ ४-१५ ॥

के है करम और के अकरम मोहित है सगळा वुधवाण
इण कारण थारै हित करस्यूँ बंधण-मुगती करम वखाण ॥ ४-१६ ॥

अकरम करम निषिध करमाँ रो भलो जाणणैं जोग सरूप
कहूँ ध्यान सूँ सुणलै अरजुन जाण करम गत गहरो रूप ॥ ४-१७ ॥

जको करम में अकरम देखै अर अकरम में लखै करम
वो बुधवाण पुरुष मिनखाँ में योगी करतो करम धरम ॥ ४-१८ ॥

बिनाँ कामणा अर सँकळप है जिणीं पुरुष रा सकळ करम
ज्ञानी भी उणनैं पिंडत कह ज्ञान जगाया करम-धरम ॥ ४-१९ ॥

छोड आसरो संसारी रो परमाँणद नित तिरपत होय
त्याग करम फळ संग करम नैं भल वरत्याँ कीं करै न कोय ॥ ४-२० ॥

भोग लालसा सगळी त्यागी जिण जीत्यो चित और सरीर
विन आसा तन करम करंताँ पाप न व्यापै पुरुष सरीर ।। ४-२१ ।।

आपोआप मिल्याँ संतूठै झगड़ाँ-टण्टाँ जको न जाय
सिध-अणसिध दोनूँ सम समझै करताँ करम न करम बँधाय ।। ४-२२ ।।

जको ज्ञान में थिर चित लावै आसकती नैं देय मिटाय
यज्ञ आचरण करै मुगत नर उणरा सगळा करम नसाय ।। ४-२३ ।।

हवि अरपणिया ब्रह्म अगन भी है रे अरजुन ब्रह्म समान
ब्रह्म समाधी लियाँ जु पावै बो भी तो है ब्रह्म सुजाण ।। ४-२४ ।।

योगी पूजै देव यज्ञ नैं आछीतराँ उपासै मन
अर ज्ञानी जण ब्रह्म अगन में करै यज्ञ सूँ यज्ञ हवन ।। ४-२५ ।।

वस में करै विषै योगीजण तप संयम रै ताप तपाय
श्रोत सवद काबू कर सगळा होमै हवन कुण्ड भसमाय ।। ४-२६ ।।

करम इन्द्रियाँ अर प्राणाँ रा योगी कई ज्ञान दीपाय
आतम संयम योग अगन में सगळा होमै होम कराय ।। ४-२७ ।।

होमै द्रव्य लोक सेवा में स्वधरम पाळ तपै कीं लोग
ज्ञान यज्ञ स्वाध्याय अहिंसा रा व्रत वरतै जतनाँ जोग ।। ४-२८ ।।

प्राणवायु होमै अपाण में करै प्राण में होम अपाण
प्राण अपाण दोऊँ गत थामै प्राणायाम करै पाराण ।। ४-२९ ।।

खाण-पीण रो नेम निभावै होम करै प्राणाँ में प्राण
जकाँ यज्ञ कर पाप नसायो सकळ पुरुष है यज्ञ सुजाण ।। ४-३० ।।

ज्ञान अमरफळ भोग यज्ञ रो अरजुन ब्रह्म सनातन पाय
यज्ञ विनाँ नर लोक न सोखो वो परलोक कियाँ सुखदाय ।। ४-३१ ।।

भाँत-भाँत रा यज्ञ घणाँ ही वेदाँ री वाणी विसतार
तत्व जाण निसकाम करम कर उण करमाँ हुयसी निसतार ।। ४-३२ ।।

ज्ञान यज्ञ है श्रेष्ठ अरजुना द्रव्य यज्ञ सूँ मोटो जाण
ज्ञान यज्ञ में परा समावै आखा-सगळा करम सुजाण ।। ४-३३ ।।

तत्व जाणिया ज्ञानी जण री कर सेवा दण्डोत प्रणाम
कपट भाव तज ज्ञान पूछियाँ कर उपदेस वतासी ज्ञान ।। ४-३४ ।।

जिण जाण्याँ तूँ मोह न उळझै आतम में लखसी सब भूत
उण उपराँत लीण हुय आँणद मन्हें लखैलो पाण्डू-पूत ।। ४-३५ ।।

जे तूँ सब पाप्याँ सूँ पापी तो भी अरजुन निसचै जाण
ज्ञान रूप इण नाव बैठियाँ तरजासी सब पाप सुजाण ।। ४-३६ ।।

अगनी भसम करै ईन्धण नैं त्यूँ ही अरजुन निसचै जाण
भसम करै सगळा करमाँ नैं अगन ज्ञान री समझ सुजाण ।। ४-३७ ।।

ज्ञान बराबर कीं नहिं जग में निसचै पावन करै सुजान
सिध योगी जण कितै काळ सूँ अनुभव करै आतमा ज्ञान ।। ४-३८ ।।

जको जितेन्द्रिय सरधा लाग्यो बो ही पुरुष लाभलै ज्ञान
झटपट परम साँति नैं पावै अरजुन निसचै समझ सुजान ।। ४-३९ ।।

बिन सरधा संसै में भटक्यो भ्रष्ट हुवै वो पुरुष अजाण
लोक और परलोक न सुख है संसै में विनसै सब जाण ।। ४-४० ।।

जकै ज्ञान सूँ संसै मेट्यो अरप करम नैं योग सिधाय
पुरुष आतमा बँधै न अरजुन उणनैं करम कदै न बँधाय ।। ४-४१ ।।

समत योग थिर हुयजा भारत उठा ज्ञान रूपी तलवार
हिय संसै अज्ञान उपजियो काट ऊभ लड़ जुध ललकार ।। ४-४२ ।।

• • •

पाँचवों अध्याय

करम सन्यास योग

अरजुन पूछ्यो–

कृष्ण ! करम सन्यास वखाणो करम योग निसकाम बखाण
दोनाँ माँयलो अेक बखाणो कर निसचै कारक कल्याण ।। ५-१ ।।

भगवान वखाण्यो–

करम योग सन्यास दोउँ ही जाण परम कल्याण करै
करम योग पण श्रेष्ठ अरजुना सुगम साधणाँ श्रेय करै ।। ५-२ ।।

द्वेष ध्यावणा करै न अरजुन वो योगी सन्यासी जाण
राग-द्वेष रो दुंद न राखै वंधण मुगत हुवै सुखमान ।। ५-३ ।।

साँख्य योग सन्यास करम नैं मूरख न्यारोन्यार वताय
दोनाँ माँ सूँ किणीं अेक में भी थिर पुरुष परम फळ पाय ।। ५-४ ।।

ज्ञान योग जो करम योग सो वो ही परम धाम फळ पाय
जको पुरुष दोनाँ रै फळ नैं अेक लखै सो ठीक लखाय ।। ५-५ ।।

करम योग विन मिलणो मुसकल पण अरजुन सन्यास सुजाण
मुनिवर करम योग सूँ लाग्यो पाय ब्रह्म नैं झटपट जाण ।। ५-६ ।।

आतमजीत जितेन्द्रिय योगी सुध अंतर सूँ लगन लगाय
अेकाभाव परम में लाग्यो करम करंतो भी न लिपाय ।। ५-७ ।।

तत जाणणियो योगी मानैं हूँ तो कीं नहिं करूँ सुजाण
लखत सुणत परसत अर सूँघत खाँवत जाँवत सोंवत जाण ।। ५-८ ।।

साँस लेंवताँ और बोलताँ त्यागत ग्रहण करंताँ भी
खोलत मींचत आँख इन्द्रियाँ करम वरतताँ करूँ न कीं ॥ ५-९ ॥

कर अरपण सब करम ब्रह्म रै पुरुष आसकी जो छिटकाय
जळ सूँ कमळ पात री तरियाँ करताँ करम न पाप लिपाय ॥ ५-१० ॥

इन्द्रिय मन बुद्धी काया सूँ आसक भाव छोड छिटकाय
करम करै योगी ही केवळ आतम सुध हित लगन लगाय ॥ ५-११ ॥

योगी प्रभु नैं अरप करम फळ भगवत रूप सांति नैं पाय
फळ पर लट्टू पुरुष सकामी पणैं कामणा सूँ बँध जाय ॥ ५-१२ ॥

नव दरवाजा रूपी घर में सकळ करम मन सूँ छिटकाय
निसचै बो करतो न कराँतो तनकावू थिर सुखाँ समाय ॥ ५-१३ ॥

प्रभु नहिं रचै लोक करतापण नहीं करम अर करम सँजोग
पण कुदरत गुण में गुण वरतै है सगळो कुदरत रो योग ॥ ५-१४ ॥

ग्रहण करै नहिं प्रभू किणीं रा सुभ अर पाप करम आ जाण
पण माया सूँ ज्ञान ढकायो मोहित जीव हुवै सब जाण ॥ ५-१५ ॥

आतमज्ञान पणैं जिण अंतर मिटिया मेट कियो अज्ञान
सच्चिदानन्द परम पळकावै उणरो बो सूरज–सो ज्ञान ॥ ५-१६ ॥

मन बुद्धी उण रूप जिणाँ री उण में ही थिर अेकाभाव
खोय पाप नैं ज्ञान परायण वो ही पुरुष परम गत पाय ॥ ५-१७ ॥

विद्या–बिनै साँपियो ब्राह्मण गौ हाथी कुत्तो चिण्डाळ
ज्ञानी जण समदरसी देखै बाँ सगळाँ नैं अेक समान ॥ ५-१८ ॥

मन जिण रो थिर समत भाव में बाँ जीत्यो जींवत संसार
कारण सम निरदोस ब्रह्म है बो थिर सच्चिदानँद आधार ॥ ५-१९ ॥

प्रिय नैं पाय न हरखै–कोडै अणप्रिय पाय न मन दुख लाय
थिर बुधवाण न संसै राखै पुरुष ब्रह्म थित अेका भाव ॥ ५-२० ॥

विषै भोग अन्तर नहिं आसक जो भगवत सुख पाय सुखी
ब्रह्म योग में पुरुष लागियो आणद अनुभव करैं अखी ।। ५-२१ ।।

विषयाँ योग भोग सुख भासै पण निसचै दुख हेतू जाण
आद अन्त होवणिया अरजुन सुध-बुधवाण न रमै सुजाण ।। ५-२२ ।।

काया नास हुवण पैली ही काम क्रोध रो वेग मिटाय
वो नर ही योगी है अरजुन सुखी हुवै इण लोकाँ माँय ।। ५-२३ ।।

सुख आराम आतमा राखै निसचै आतम जोत सुजाण
अेकीभाव परम बो योगी अरजुन पाय ब्रह्म निरवाण ।। ५-२४ ।।

जिण रा सगळा पाप विनास्या दियो ज्ञान सूँ संसै मेट
भूत प्राणियाँ हित चित लाग्यो लाभै ब्रह्म सांति सूँ भेट ।। ५-२५ ।।

काम क्रोध सूँ रहित जीत चित परम ब्रह्म करियाँ साख्यात
च्यारूँ दिस वै ही ज्ञानी नर बरतै परम ब्रह्म में सांत ।। ५-२६ ।।

कर भँवराळी बीच नैंण थिर विषै भोग बारैं ही त्याग
प्राण-अपाण नासिका विचरै सम कर अरजुन साँस सुभाग ।। ५-२७ ।।

मन बुद्धी अर जीत इन्द्रियाँ मोख–परायण मुनी सुजाण
इंछा भय अर क्रोध विहूणो बींनैं सदा मुगत ही जाण ।। ५-२८ ।।

मन्हें यज्ञ तप भोगी जाणैं लखै महेसर लोकाँ माँय
सकळ भूत प्राण्याँ रो प्रेमी जाण तत्व सूँ साँयत पाय ।। ५-२९ ।।

• • •

छठो अध्याय

आतम संयम योग

भगवान बखाण्यो—

जको करमफळ नहीं चाँवतो करणैं जोगो करै करम
वो सन्यासी-योगी है पण नहीं जु त्यागै अगन करम ।। ६-१ ।।

जिणनैं यूँ सन्यास बखाणैं अरजुन योग उणीं नैं जाण
सँकळप त्याग्याँ बिनाँ न योगी पुरुष न कोई समझ सुजाण ।। ६-२ ।।

जको समत बुध योग चढण री इंछा करै मुनी मन माँय
योग हेतु निसकाम करम अर योगी हित संकळप अभाव ।। ६-३ ।।

करम इन्द्रियाँ रै भोगाँ में आसक नहीं हुवै जिण काळ
सब संकळपाँ रो त्यागी ही योगी पुरुष बजै उण काळ ।। ६-४ ।।

आपोआप आतमा तारै आप आतमा नहीं गिराय
बैरी-सजन आतमा अपणो दूजो नहीं कोई जग माँय ।। ६-५ ।।

जको जीतलै आप आतमा बंधु आतमा उणरी जाण
जको न जीतै आप आतमा बैरी ज्यूँ बरतै आ जाण ।। ६-६ ।।

सरदी-गरमी अर सुख दुख में साँयत भली माण-अपमाण
जको आतमा जीत अरजुना सचिदानन्द समायो जाण ।। ६-७ ।।

लिवी इन्द्रियाँ जीत आतमा तिरपत हुई ज्ञान-विज्ञान
कूड़ न कपट कहीजै योगी माटी-सोनो जिणाँ समान ।। ६-८ ।।

हींयाळू-बैरी अर मितर द्वेष बंधु मध-भाव उदाँण
धरमी अर पापी सम समझै वो अरजुन घण श्रेष्ठ सुजाण ।। ६-९ ।।

चित मन आतम जीत्यो योगी बिनाँ वासना-सँगरै ध्याय
थिर अेकलड़ो अेकाँयत में ध्यान लगोलग परम लगाय ।। ६-१० ।।

सुद्ध भोम में ऊपर-नीचै सुद्ध बसतराँ कुस--मृगछाळ
आसण घणो न ऊँचो-नीचो बैठै थिर थित आसण ढाळ ।। ६-११ ।।

उण आसण पर बैठ करै वो अेकागर मन योगाभ्यास
चित इन्दरियाँ किरिया काबू आतम सुध हित योग उजास ।। ६-१२ ।।

सिर-नस अर काया सम करलै अरजुन अचळ दिढाई धार
दूजी दिसा न देखै कोई निजर नासिका नोक पसार ।। ६-१३ ।।

थिर बुध ब्रह्मचारी व्रतधारी निरभै सावधान घण साँत
मन वस कर म्हाँरै में लाग्यो परम परायण थिर चित थाँत ।। ६-१४ ।।

इयाँ आतमा लगा लगोलग परम रूप योगी स्वाधीण
परम साँति निरवाण लाभलै जिणरो मन अपणैं आधीण ।। ६-१५ ।।

जो अणखाऊ का घणखाऊ जागै घणो और घण सोय
निसचै जाण उणाँ पुरुषाँ रो पारथ योग सिद्ध नाँ होय ।। ६-१६ ।।

जथा जोग आहार-विहाराँ करम चेसटा करै सुजाण
जथा जोग सोवै-जागै तो योग सिद्ध दुखनासी जाण ।। ६-१७ ।।

इणतर योगपरम थित करियो काबू कियो चित्त जिण काळ
बिनाँ कामणा और लालसा योग युगत बाजै उण काळ ।। ६-१८ ।।

हीण पून थित थाँह सँजोई हिलै न ज्यूँ दीपक री लोय
परम ध्यान लाग्यै चित जीत्यै योगी री उपमा ही सोय ।। ६-१९ ।।

सेयाँ योग पुरुष जिण बेळा कर काबू चित मुगत समात
सच्चिदानन्द मिलै संतूठै सुध-बुध पाय परम साख्यात ।। ६-२० ।।

जको अणत आणंद आतमा सुध-बुध ग्रहण करण रै जोग
भगवत रूप थितै जिण बेळा योगी अनुभव करै सुयोग ।। ६-२१ ।।

घणों लाभ दूजो नहिं मानैं अरजुन परम लाभ नैं पाय
भगवत रूप हुयाँ थित योगी घोर दुखाँ भी नाँ विचळाय ।। ६-२२ ।।

दुख-संजोग-विजोगाँ अरजुन जाण्यो चाव कहीजै योग
लगन लागियै चित सूँ निसचै है करतव्य धारणो योग ।। ६-२३ ।।

सँकळप उपजी सकळ कामना आसक भाव छोड-छिटकार
मन सूँ वस कर सकळ इन्द्रियाँ चारूँमेर भली परकार ।। ६-२४ ।।

होळै-होळै मिलै मुगत में पारथ परमाँ परम समाय
धीरज धार बुद्धि सूँ मन में थित कर परम-परम चिंताय ।। ६-२५ ।।

जिण-जिण कारण सूँ मन चंचळ भोगाँ फिरै-घिरै-विचरै
वारंबार रोक उण-उण सूँ योगी परम अधीण करै ।। ६-२६ ।।

जिण रो मन भल साँत अरजुना और पाप सूँ रहित सुजाण
घण उत्तम आणद लै योगी हुयाँ साँत रज ब्रह्म समाण ।। ६-२७ ।।

लगा लगोलग परम आतमा पाप रहित योगी इण भाँत
अनुभव करै अणत आणद नैं पारथ परम ब्रह्म सुख पाँत ।। ६-२८ ।।

योग युगत समदरसी योगी लग्यो परम में पाण्डू-पूत
लखै आतमा सब भूताँ में और आतमा में सब भूत ।। ६-२९ ।।

लखै सकळ भूताँ नैं मैं में सब भूताँ व्यापक म्हाँ जाण
वो म्हाँरै सूँ नहीं अदीठो अर हूँ उण सूँ नहीं सुजाण ।। ६-३० ।।

सगळाँ भूताँ मन्हें व्यापियो अेका भाव भजै सो आण
सव भाँती बरतंतो बरतै वो योगी मैं में ही जाण ।। ६-३१ ।।

आप जिसो ही सव भूताँ में अरजुन सम जो लखै सुजाण
वो ही परम श्रेष्ठ योगी है सुख-दुख देखै सम परमाण ।। ६-३२ ।।

अरजुन बोल्यो –

समत भाव सूँ ध्यान योग रो आप प्रभू जो कियो वखाण
मन चंचळ मधुसूदन इण री थिर थित कोनीं लखूँ सुजाण ।। ६-३३ ।।

मन चंचळ घण मथण स्वभावी कृष्ण घणों द्रिढ़ अर बळवाण
बायरियै ज्यूँ मन वस करणों हूँ जाणूँ घण कठण सुजाण ।। ६-३४ ।।

भगवान वखाण्यो–

मन चंचळ वस करणों मुसकल अरजुन इण में संसै नाँय
पण बैराग करत अभ्यासाँ वार-वार वो वस हुय जाय ।। ६-३५ ।।

योग परापत होणों मुसकल जो मनड़ो वस कर न सकाय
सहज साधनाँ जतन करंताँ हुवै आपवस म्हाँरी राय ।। ६-३६ ।।

अरजुन पूछ्यो–

सरधा थकाँ सिथळ जतनाँ पण जिण रो योग न सिद्धी पाय
डिगै योग सूँ मनड़ो उणरी कृष्ण गती के हुवै वताय ।। ६-३७ ।।

के न प्रभू मोहित ब्रह्म मारग पुरुष विनाँ आश्रम भटकाय
भ्रष्ट भोग-भगवान दोवाँ सूँ ज्यूँ बिखर्‌या बादळ मिटजाय ।। ६-३८ ।।

म्हारो संसो साफ मिटावण कृष्ण जोग ही आप सुजान
मिलै नहीं संसो मेटणियो दूजो कोई आप समान ।। ६-३९ ।।

भगवान वखाण्यो–

पारथ पुरुष विनासै कोनीं लोक और परलोकाँ माँय
कारण सुभ प्रिय करम करणियो कोई भी दुरगत नाँ पाय ।। ६-४० ।।

योग भ्रष्ट वो पुरुष पारथा पुण्य लोक पण पाय निवास
सुधचारी भाग्याँ घर जलमै उण लोकाँ कर बरसाँ वास ।। ६-४१ ।।

ज्ञानी अर योगी कुळ जलमै बैरागी उण लोक न जा'र
पण अरजुन इण भाँत जलमणो निसचै घण दुरलभ संसार ।। ६-४२ ।।

बठै साधिया पूरब देही लाभै पुरुष बुद्धि संयोग
उण सूँ जतन करै फिरुँ आछा पारथ परम परापत योग ।। ६-४३ ।।

वो निसचै वस विषै हुयो भी तजै परम पूरण अभ्यास
समत योग रो जिज्ञासू भी लाँघै सवद ब्रह्म परकास ।। ६-४४ ।।

घण जलमाँ पायोड़ा सिध अर योगी घण जतनाँ अभ्यास
धोय पाप सगळा उण साधण पावै परम गती परकास ।। ६-४५ ।।

तपियाँ और पिंडताँ सूँ भी मानीजै योगी घण श्रेष्ठ
करम सकाम करणियाँ आछो अरजुन तूँ योगी हुय श्रेष्ठ ।। ६-४६ ।।

योग्याँ में सरधाळू योगी जो म्हाँरै में लोय लगाय
परम श्रेष्ठ बो योगी मानूँ निस-दिन मन सूँ मन्हें भजाय ।। ६-४७ ।।

• • •

सातवों अध्याय

ज्ञान विज्ञान योग

श्री भगवान बखाण्यो–
तूँ आसक मन प्रेम परायण हुय म्हाँरै में योग लगाय
सब रो आतम रूप समझसी सुण तूँ संसै जियाँ मिटाय ।। ७-१ ।।

तत्व ज्ञान रै बीं रहस्य नैं हूँ थारै हित कथूँ खुलास
उण जाण्याँ अरजुन इण जग में जाणण जोग न सेस जरास ।। ७-२ ।।

कोई अेक हजाराँ मिनखाँ सिद्धी पावण जतन कराय
जतन करणियाँ विरळा जोगी मन्हें तत्व सूँ जाण सकाय ।। ७-३ ।।

अगन पवन जळ-थळ-नभ अरजुन मन बुद्धी अर अहंकार
इयाँ जाण आ म्हाँरी कुदरत पारथ वँटी आठ परकार ।। ७-४ ।।

आठ भाँत री अपरा कुदरत समझ अरजुना जड़ परकार
दूजी परा जीव कुदरत है जिण सूँ जग धारीजै धार ।। ७-५ ।।

आँ ही दो कुदरत सूँ उपज्या सकळ भूत तूँ समझ सुजाण
हूँ ही सरजूँ और विनासूँ इण सगळै जग नैं आ जाण ।। ७-६ ।।

निसचै जाण धनंजै जग में म्हाँरै सिवा न दूजो कोय
अेक सूत गुँथियो जग म्हाँ में सूताळा मिणियाँ ज्यूँ पोय ।। ७-७ ।।

जळ में हूँ रस जाण अरजुना चाँद-सुरज में हूँ परकास
वेदाँ में ओंकार, पुरुष में पौरस हूँ, हूँ सबद अकास ।। ७-८ ।।

हूँ धरती री पुण्य सुगंधी और अगन रो तेज सुजाण
सकळ भूत प्राण्याँ रो जीवण हूँ तपस्याँ रो तप हूँ जाण ।। ७-९ ।।

सकळ भूत प्राण्याँ रो कारण सदा सनातन हूँ हूँ जाण
बुधवाणाँ री बुध हूँ अरजुन तेज्याँ रो हूँ तेज सुजाण ॥ ७-१० ॥

बिनाँ कामणा अर आसकती सबळाँ रो हूँ समरथ सार
हूँ ही सकळ भूत प्राण्याँ में अरजुन काम धरम अनुसार ॥ ७-११ ॥

सत रज तम गुण भाव उपजिया सगळा मैं सूँ उपज्या जाण
पण हूँ आँ में अर वै मैं में नहीं असल में समझ सुजाण ॥ ७-१२ ॥

सत रज तम तीनाँ गुण भावाँ मोहित है सगळो संसार
तत सूँ लखै न अविनासी नैं तीन गुणाँ सूँ परियाँ-पार ॥ ७-१३ ॥

तीन गुणी म्हाँरी आ माया घणीं अलोकी अपरंपार
पण जो सैलँग भजै मन्हें ही तिर निसतारै परलै-पार ॥ ७-१४ ॥

माया मोहित ज्ञान गँवाया धारण करिया असुर स्वभाव
दोसी करम करणिया मूरख मन्हें न अरजुन इता भजाय ॥ ७-१५ ॥

उत्तम करमी अरथ लागिया आरत जिज्ञासू अर ज्ञानी
च्यार भगत जण भजै मन्हें ही अरजुन जो न असुर अज्ञानी ॥ ७-१६ ॥

बाँ में भी नित लग्यो भाव सूँ अनन-भगत जो सुज्ञानी
हूँ उण ज्ञानी नैं घण प्यारो और मन्हें बो ही ज्ञानी ॥ ७-१७ ॥

भजन भाव ध्यावै सो उत्तम पण ज्ञानी साख्यात सरूप
है म्हारो मत थिर बुध ज्ञानी उत्तम गत थित म्हाँरै रूप ॥ ७-१८ ॥

घण जलमाँ में जलम आखरी सब कुछ वासुदेव ही जाण
दुरलभ इसो मातमा अरजुन भजै मन्हें ही इयाँ सुजाण ॥ ७-१९ ॥

आप आपरै भाव सभावाँ बाँ-बाँ भोगाँ ज्ञान गँवाय
बै-बै नेम धार जो अरजुन ध्यावै दूजा देव भजाय ॥ ७-२० ॥

जो-जो भगत सकामी मनसा सरधा पूजै जो-जो देव
उणीं भगत री सरधा अरजुन हूँ थिर करदूँ उण ही देव ॥ ७-२१ ॥

पुरुष जको सरधा सूँ लाग्यो करे चेसटा पूजन देव
उणीं देव सूँ म्हाँरा सरज्या निसचै भोग बैही लै लेय ।। ७-२२ ।।

पण उण ओछी बुधवाळाँ रा नासवाण है फळ जो चाय
वाँनैं मिलै देवता बैही म्हाँरा भगत मन्हें ही पाय ।। ७-२३ ।।

म्हाँरो परम भाव अविनासी तत्व न लखै पुरुष बुध हीण
वै सरवोतम परा न समझै मानैं पुरुष भाव ही लीण ।। ७-२४ ।।

हूँ म्हाँरी माया सूं लुकियो सबनैं पिरतक नहीं लखाय
मूढ पुरुष अणजण अविनासी मन्हें न अरजुन जाँणण पाय ।। ७-२५ ।।

काल आज अर काल आँवताँ सब भूताँ हूँ राखूँ जाण
सरधा भगती हीण पुरुष पण मन्हें न कोई पावै जाण ।। ७-२६ ।।

इंछा-द्वेष उपजियाँ सुख-दुख दुंद मोह घिरिया सब प्राण
भरत वंस रा लाल अरजुना प्राणी पावै घण अज्ञान ।। ७-२७ ।।

पण जिण पुरुषाँ धरम करम सूँ पारथ दीनो पाप नसाय
दुंद मोह सूँ मुगत हुया वै द्रिढ़ बरती सब मन्हें भजाय ।। ७-२८ ।।

जरा मरण छुटकारो पावण म्हाँरी सरणाँ जतन कराय
परम करम सगळो अध्यातम जाणैं पुरुष ब्रह्म वो पाय ।। ७-२९ ।।

भूत देव अधियज्ञ सभी में जाणैं पुरुष मन्हें ही जोय
अरजुन निसचै वै नर चेत्या अंतकाल भी पावै मोय ।। ७-३० ।।

• • •

आठवों अध्याय

अक्षर ब्रह्मयोग

अरजुन पूछ्यो–

के है ब्रह्म करम अध्यातम पुरुषोतम जो कियो बखाण
के है जो अधिभूत बतायो अर के है अधिदेव सुजाण ।। ८-१ ।।

मधुसूदन अधियज्ञ कूण है अठै कियाँ बो इणाँ शरीर
अंतकाळ थे किंयाँ लखावो लगन लग्यै चित पुरुष सरीर ।। ८-२ ।।

भगवान वखाण्यो–

आखर परम ब्रह्म है अरजुन जीवातम अध्यातम जाण
भूत भाव उपजणियो, करियो यज्ञ-दान ही करम सुजाण ।। ८-३ ।।

उपजै-विनसै सकळ पदारथ बै अधिभूत भाव है जाण
समझ पुरुष अधिदेव अरजुना हूँ देहाँ अधियज्ञ सुजाण ।। ८-४ ।।

अन्तकाळ में मन्हें सुमरतो ही जो त्यागै पुरुष सरीर
इण में संसै नहीं अरजुना बो खुद म्हाँनैं पाय सरीर ।। ८-५ ।।

अन्तकाल में जिण-जिण भावाँ सुमरण करतो तजै सरीर
जकै भाव नैं सदा चींततो पावै बोही भाव सरीर ।। ८-६ ।।

सैलँग सुमर मन्हें ही अरजुन इणतर लाग जुद्ध भी कर
निसचै जाण मन्हें ही पासी मन बुध सूँ म्हाँ अरपण कर ।। ८-७ ।।

परम ध्यान अभ्यास योग लग चित नाँ डाँवाडोळ कराय
परम दिव्य परमातम पावै अरजुन जो सैलँग चिंताय ।। ८-८ ।।

सरव जाण अणु रै अणु नैं जो उण अनाद सासक सबरै
रवि बरणै दाता अचिंत्य नैं परा अविद्या नैं सुमरै ।। ८-९ ।।

अंतकाळ बो भगती भायो योग बळाँ भौं मध थित प्राण
निसचळ मनाँ सुमरतो अरजुन परम दिव्य ही पुरुष समाण ।। ८-१० ।।

ओंकार कह परम वेद विद जती वीतरागी जिण जाण
परम चावणा रह ब्रह्मचारी सो पद सुण संखेप बखाण ।। ८-११ ।।

काबू कर बै सगळा मारग मन हिरदै रै माँय थमाय
योग धारणा थित कर अरजुन मसतक में निज प्राण थपाय ।। ८-१२ ।।

ॐ अेक आखर उण ब्रह्म नैं जो उचारतो म्हाँरो रूप
त्याग जाय तन जको चींततो मुगत पाय बो परम स्वरूप ।। ८-१३ ।।

अनन चित्त सूँ सदा लगोलग अरजुन जको मन्हें सुमराय
बीं नित युगत हुयै योगी हित हूँ हूँ सुलभ सहज बो पाय ।। ८-१४ ।।

परम सिद्धि पाया महातमा पारथ मन्हें परापत होय
दुख रो थान जिको छिणभंगुर पुनरजलम पावै नहिं कोय ।। ८-१५ ।।

ब्रह्म लोक सूं ले सब लोकाँ सगळा पुनरजलम ही पाय
पण अरजुन जो मन्हें पायलै बो प्राणी न पुनरजलमाय ।। ८-१६ ।।

ब्रह्मा रो दिन और रात भी सैंस चौकड़ी युग परवाँण
काळ तत्व वै योगी जाणैं जका तत्व सूँ राखै जाण ।। ८-१७ ।।

ब्रह्मा रो दिन जद परवेसै उणसूँ ही जलमै सब भूत
और रात उणरी परवेस्याँ उण में ही लय होवै भूत ।। ८-१८ ।।

उतपन हुय-हुय वस कुदरत रै बो ही सकळ भूत समुदाय
आयाँ रात हुवै लय पारथ दिन आयाँ फिर जलम धराय ।। ८-१९ ।।

अरजुन ब्रह्म अनोखो है पण उणीं ब्रह्म सूँ धणों परै
परम भाव जो सदा सनातन भूत मर्‍याँ भी नहीं मरै ।। ८-२० ।।

आखर ब्रह्म कह्यो इण भाँती वो ही परम गती रो भाव
वो ही परम धाम है म्हाँरो मिल्याँ सनातन फेर न आय ।। ८-२१ ।।

सकळ भूत जिण में अर जिण सूँ परिपूरण है सगळो लोक
परम सनातन पुरुष अरजुना अनन भाव सूँ पावण जोग ।। ८-२२ ।।

त्याग गयाँ तन जिणीं काळ में योगी जण जो पाय सुजाण
पूठा आण न आवण री गत उणीं काळ नैं कहस्यूँ जाण ।। ८-२३ ।।

अगन जोत दिन अर चानणपख छव महिनाँ उतरायण माँय
गयाँ ब्रह्म जाण्या योगीजण पारथ परम ब्रह्म ही पाय ।। ८-२४ ।।

धूम रात अर अंधारैपख छव महिनाँ दिखणायण माँय
गयाँ सकामी करमी योगी चाँद जोत पा पूठा आय ।। ८-२५ ।।

सुकळ-कृष्ण दो भाँत जगत गत मारग लिया सनातन मान
अेकाँ पाय परम गत दूजाँ जलम-मरण फिर पूठा आण ।। ८-२६ ।।

जको तत्व जाणैं दोउँ मारग योगी मोहित हुवै न जाण
इण कारण हुय योग युगत तूँ सरबकाळ ही साध सुजाण ।। ८-२७ ।।

परम सनातन पद ही पावै योगी लेय तत्व सूँ जाण
वेद पढण तप यज्ञ दान रो निसचै पुन-फळ लाँघ सुजाण ।। ८-२८ ।।

• • •

नवों अध्याय

राज विद्या राज गुह्य योग

भगवान बखाण्यो–

तैं निरदोस भगत नैं कहस्यू गोपण परम ज्ञान-विज्ञान
दुख संसार मुगत हुयजासी अरजुन तूं निसचै जिण जाण ।। ९-१ ।।

राज रहस विद्या रो राजा अविनासी धरमी बो ज्ञान
सुध उत्तम पिरतक फळदायक सुगम साधना घणो सुजान ।। ९-२ ।।

ज्ञान धरम सरधा नहिं जिण री बो नर अरजुन म्हनें न पाय
मिरत लोक संसारी चकरी भुँवतो फिरै भुँवाळी खाय ।। ९-३ ।।

परम आतमा सचिदानँद सूँ सराबोर सगळो जग जाण
सकळ भूत सँकळप थित म्हाँ में पण हूँ थित बाँ में न सुजाण ।। ९-४ ।।

पण लख असर योग माया रो सकळ भूत म्हाँ में थित नाँय
भूत जणक धारक पोषक री थित न आतमा भूताँ माँय ।। ९-५ ।।

ज्यूँ सरवाळै सदा विचरणो आभै में थित पवन महान
सँकळप जण्या भूत वै सगळा म्हाँ में थित नित समझ सुजान ।। ९-६ ।।

वीत्याँ कळप हुवै सब अरजुन भूत म्हाँरळी कुदरत लीन
भळै कळप रो ऊदो आयाँ हूँ बाँनैं करदूँ सरजीण ।। ९-७ ।।

अंगीकार तिरगुणी माया वारंवार रचूँ सरजाय
परवस हुयै सुभावाँ कारण अरजुन सकळ भूत समुदाय ।। ९-८ ।।

विनाँ आसकी अणमणियै ज्यूँ वाँ करमाँ थित हुयै थिताय
मैं परमातम नैं वै सगळा करम पारथा नहीं वँधाय ।। ९-९ ।।

म्हाँरी देख-रेख में अरजुन इण हेतु माया गरणाय
सकळ जगत सचराचर सरजै जलम-मरण रो चक्र चलाय ।। ९-१० ।।

भूत महेसर परम भाव नैं नाँ जाणणिया मूढ जणाय
मैं मिनखा देही धारणियै परमातम नैं तुच्छ गिणाय ।। ९-११ ।।

बिरथा करम ध्यान धर आसा निपट अनाड़ी राखस जाण
असुर राखसाँ जिसी मोहणी तामस बिरती धरी अजाण ।। ९-१२ ।।

पण कुंती सुत बै महातमा जिका देव बिरती रै ताण
भजै अेक मन लगन लगायाँ समझ सनातन अमर सुजाण ।। ९-१३ ।।

सदा कीरतन करै भगत जण द्रढ निसचै भगती मन धार
जतन करंताँ निंवै ध्यान सूँ भज मन म्हाँनैं बारंबार ।। ९-१४ ।।

ज्ञान यज्ञ सूँ पूजन करता भजै उपासै अेकाकार
परम विराट रूप नै म्हाँनैं भाँत-भाँत मन भाव विचार ।। ९-१५ ।।

यज्ञ करम हूँ अन्न औषधी अगन घिरत हूँ मंत्र सुजाण
हूँ ही होम होमायत किरिया अरजुन तूँ निसचै मन जाण ।। ९-१६ ।।

मात पिता दादो हूँ जग रो हूँ ही हूँ धाता संसार
साम यजुर रिग वेद हूँ ही हूँ जाणण जोग सुद्ध ओंकार ।। ९-१७ ।।

हूँ स्वामी सुभ लाभ लखणियो गत मुगती सब रो भरतार
वास सरण हित उतपत परळै थान मुकाम अमर आधार ।। ९-१८ ।।

हूँ सूरज तप बिरखा बरसूँ अमरत और मरत हूँ जाण
सत अर असत हूँ ही हूँ सब कुछ समझ पारथा इयाँ सुजाण ।। ९-१९ ।।

तीनूँ वेद विधान करम सुभ साध सोम रस पान करै
जका सरग इंछा जिग पूजै दिव्य लोक पुन भोग करै ।। ९-२० ।।

सुरग भोग पुन खीण हुयाँ वै मिरत लोक भोगै नर-नार
जका भोग री करै कामना जलम-मरण लै बारंबार ।। ९-२१ ।।

अेक लगन सूँ जका भगत जण भजै भाव सूँ मन्हें चितार
हूँ खुद आप उणाँ पुरुषाँ रै खेम–कुसळ करदूँ संसार ।। ९-२२ ।।

जका भगतजण सरधा पूजै दूजा देव बिनाँ विध ज्ञान
तो भी वै म्हाँनैं ही पूजै सुण अरजुन तूँ समझ सुजान ।। ९-२३ ।।

सकळ यज्ञ भोगणियो स्वामी हूँ ही हूँ अरजुन तूँ जाण
वै नर मन्हें तत्व नहिं जाणें इणतर पाय पुनर-जलमाण ।। ९-२४ ।।

पूज्याँ देव देव ही पावै पितर पूजियाँ पितर समाय
भूत पूजियाँ भूताँ भेळा म्हारा भगत मन्हें ही पाय ।। ९-२५ ।।

पान फूल फळ जळ अरपण कर प्रेम भाव सूँ भेंट चढ़ाय
वो अरपणियो भोग भगत रो भोगूँ पिरतक प्रीत लगाय ।। ९-२६ ।।

जो कुछ करम करै तूँ खावै करै हवन तप देवै दान
कर म्हाँरै अरपण वै सगळा अरजुन तूँ मन में सुभ मान ।। ९-२७ ।।

सुभ अर असुभ करम फळ बंधण इणतर जोग धार तरसी
मुगत हुयो मतवाळो मनवो अरजुन तूँ म्हाँनैं पासी ।। ९-२८ ।।

हूँ समभाव सकळ भूताँ में व्यापक हूँ सगळाँ मन माँय
नाँ कोइ प्यारो नाँ कोइ खारो भजै सो म्हाँरो हूँ उण माँय ।। ९-२९ ।।

जो कोइ घणो दुराचारीं भी अेक लगन सूँ मन्हें भजाय
वो साधू ही जाणण जोगो भली भाँत निसचै मन माँय ।। ९-३० ।।

इणतर तुरत हुवै धरमातम परम साँयती सदा समाय
निसचै साच जाण तूँ अरजुन वै ही परम मोक्ष फळ पाय ।। ९-३१ ।।

नारी-वैस्य सूद्र सब कोई जो कोइ पाप जूण में आय
म्हाँरी सरण हुया जो अरजुन वै ही परम मोक्ष फळ पाय ।। ९-३२ ।।

ब्राह्मण राजरिसी के कहणो भगत परम गति पुण्य समाय
छिणभंगुर सुख हीण लोक नर-देह पाय तूँ मन्हें भजाय ।। ९-३३ ।।

अेकमनो हुय भज म्हाँनैं ही लुळ—लुळ सरधा भाव पुजाय
इणतर सरण आतमा कर तूँ मन्हें पारथा लेसी पाय ।। ९-३४ ।।

• • •

दसवों अध्याय

विभूति योग

भगवान वखाण्यो–

अर्जूं भळै सुण रे भुरजाळा म्हांरा परम रहस रा बोल
घणों प्रेम राखणियै तैं हित कहस्यूं जका खुलासा खोल ।। १०-१ ।।

देव महरिसी लोग न जाणैं म्हांरो उतपतियो अवतार
कारण देव महरिस्याँ री भी उतपत रो हूँ ही आधार ।। १०-२ ।।

मन्हें अजलमो और अनादी भळै जु जाणैं लोक महेस
मुगत हुवै सगळा पापां सूँ वो ज्ञानी मिनखाँ मरतेस ।। १०-३ ।।

सुध वुध ज्ञान खमाँ सत धारण दमण समण अणमोह सुजाण
डर अर निडर भाव सुख दुख रा उतपत-लय म्हाँ सूँ ही जाण ।। १०-४ ।।

तप संतोष अहिंसा समता दान किरत-अपकिरत वखाण
घण विध भाव भूत-प्राण्याँ रा हुवै सभी म्हाँसूँ ही जाण ।। १०-५ ।।

च्यार सनक मुनि सात महरिसी अर चवदह मनु सभी सुजाण
म्हाँरै भाव जण्या सँकळप सूँ बाँरी प्रजा लोक सव जाण ।। १०-६ ।।

जो नर योग–विभूती म्हाँरी तत सूँ जाणैं समझ सुजाण
निसचळ ध्यान योग लग निसचै अेक लगन म्हाँ में थित जाण ।। १०-७ ।।

हूँ ही जग उतपत रो कारण सकळ चेसटा रो आधार
तत्व जाण सरधा भगती सूँ भजै लगोलग मन्हें भजार ।। १०-८ ।।

चित मन प्राण मन्हें नित अरपै आपस परम प्रभाव वखाण
तूठ रमैं म्हाँरो गुण गावै वे म्हाँनै ही पाय सुजाण ।। १०-९ ।।

लगन प्रेम सूँ लगा लगोलग जका भगत जण मन्हें भजाय
हूँ देऊँ बुध योग उणाँ नैं जिण सूँ बै म्हाँनैं ही पाय ॥ १०-१० ॥

बाँ भगताँ पर किरप करण ही हूँ उण घट बैठूँ थित थान
जगमग जोत ज्ञान दीपक सूँ मेटूँ अंधकार अज्ञान ॥ १०-११ ॥

अरजुन बोल्यो–

परम ब्रह्म हो परम धाम हो आप परम पावन भगवान
सदा सनातन दिव्य पुरुष हो आदि देव अणजण्या महान ॥ १०-१२ ॥

देवल असित व्यास अर नारद देवरिसी सब करै बखाण
आप सरब व्यापक अणजणिया कहो आप खुद मन्हें सुजाण ॥ १०-१३ ॥

केसव आप कहो जो म्हाँनैं हूँ सब सत जाणूँ सत मान
दानव देव कोय नाँ जाणैं थाँरोड़ी लीला भगवान ॥ १०-१४ ॥

हे देवाँ रा देव जगत पति भूत जनक भूतेस महान
खुद ही आप आपनैं जाणो हे पुरुषोतम आप सुजान ॥ १०-१५ ॥

आप आपरी दिव्य विभूती पूरण रूप बखाणण जोग
जकी विभूत्याँ व्याप आप प्रभु थित व्यापक हो सगळाँ लोक ॥ १०-१६ ॥

कूँकर सदा चितारूँ थाँनैं योगेसर जाणूँ थाँ जाण
किण-किण भाव चितारण जोगा थे म्हाँरै सूँ हो भगवान ॥ १०-१७ ॥

योग सक्ति अर परम विभूती भळै बखाणो कर बिसतार
अमर वचन सुणताँ नहिं धापूँ हे जनारदन बारम्बार ॥ १०-१८ ॥

भगवान बखाण्यो-

अरजुन अन्त नहीं बिसताराँ जाण समझ कुरुश्रेष्ठ सुजाण
मोटी-मोटी दिव्य विभूत्याँ तैं हित करस्यूँ अबैं बखाण ॥ १०-१९ ॥

सब भूताँ रै हियै बिराजूँ हूँ सगळाँ रो आतम जाण
आदि मध्य अर अन्त हूँ ही हूँ ओ अरजुन तूँ समझ सुजाण ॥ १०-२० ॥

हूँ अदीत रो वेटो विष्णूँ जोत किरण सूरज हूँ जाण
पवनाँ में हूँ पवन मरीची अर नखताँ में चन्द्र सुजाण ॥ १०-२१ ॥

वेदाँ में हूँ सामवेद हूँ देवाँ में हूँ इन्द्र सुजाण
सकळ इन्द्रियाँ में हूँ मन हूँ भूताँ रो चेतो हूँ जाण ॥ १०-२२ ॥

यक्ष राखसाँ में कुबेर हूँ रुद्राँ में संकर हूँ जाण
सिखराँ में हूँ मेरु-सुमेरू वसुआँ में हूँ अगन सुजाण ॥ १०-२३ ॥

मुख पुरोहिताँ में विसपत हूँ सेनापत्याँ कारतिक जाण
जळाँ-सरवराँ में सागर हूँ मन्हें पारथा समझ सुजाण ॥ १०-२४ ॥

महरिसियाँ में भृगू रिसी हूँ वाणी अेकाक्षर ओंकार
यज्ञाँ में जप यज्ञ पारथा थिराँ हिमाळो हूँ थिरथार ॥ १०-२५ ॥

बिरछाँ-माँय विरछ पींपळ हूँ देव रिस्याँ नारद मुनि जाण
गंधरवाँ में समझ चित्ररथ कपिल मुनी हूँ सिधाँ सुजाण ॥ १०-२६ ॥

घोड़ाँ अमर उचैसरवा हूँ हाथ्याँ में अेरावत जाण
नराँ माँयलो निरप पारथा म्हाँनैं ही तो समझ सुजाण ॥ १०-२७ ॥

ससतरियाँ में बजर अरजुना कामधेन धेनाँ रै माँय
पूत जणण हित कामदेव हूँ सरपराज सरपाँ रै माँय ॥ १०-२८ ॥

नागाँ में हूँ सेसनाग हूँ जळ जीवाँण वरुण हूँ जाण
पितराँ में करयम पितरेसर राजाँ में जमराज सुजाण ॥ १०-२९ ॥

दैत्याँ में पैळाद पारथा काळ गिणतकाराँ हूँ जाण
पसुआँ में हूँ सिंघ अरजुना पाँखीड़ाँ में गरुड़ सुजाण ॥ १०-३० ॥

सुद्ध करणियाँ पवन पारथा ससतर धार्‌याँ राम सुजाण
माछलियाँ में मगरमच्छ हूँ नदियाँ में हूँ गंगा जाण ॥ १०-३१ ॥

आद अंत मध हूँ सिसट्याँ रो विद्या में ब्रह्मविद्या जाण
वादाँ में हूँ सारवाद हूँ अरजुन आ ही समझ सुजाण ॥ १०-३२ ॥

आखरियाँ में हूँ अकार हूँ और समासाँ दुंद समास
काळाँ में हूँ महाकाळ हूँ धाता रूप विराट उजास ॥ १०-३३ ॥

मौत सरबनासी हूँ ही हूँ अर भावी उतपत हूँ जाण
नारयाँ श्री धृति वाक कीरती स्मृति मेधा अर क्षमा सुजाण ॥ १०-३४ ॥

श्रुतियाँ में हूँ बृहतसाम हूँ छंदाँ में गायत्री जाण
मिगसर मास हूँ ही मासाँ में रितुआँ माँय बसंत सुजाण ॥ १०-३५ ॥

छळगाराँ में हूँ जूवो हूँ तेज तेजस्याँ में हूँ जाण
जीत जिताराँ नेहचाँ नेहचो सत पुरुषाँ सत भाव सुजाण ॥ १०-३६ ॥

वृष्ण वंसियाँ वासुदेव हूँ पाण्डू-सुताँ धनंजै जाण
मुनियाँ में हूँ वेदव्यास हूँ कवियाँ सुकराचार्य सुजाण ॥ १०-३७ ॥

दमण करणियाँ रो हूँ डंडो नीत जीत चावणियाँ जाण
हूँ ही मौन गुपत भावाँ में ज्ञानवान रो ज्ञान सुजाण ॥ १०-३८ ॥

अरजुन सकळ भूत उतपत रो बीज जको हूँ ही हूँ जाण
म्हाँ बिन भूत चराचर कोनी कोई भी तो समझ सुजाण ॥ १०-३९ ॥

अंत परंतप नहीं म्हाँरळी दिव्य विभूत्याँ रो तूँ ज़ाण
थोड़ै में बिसतार उणाँ रो तैं हित कहियो समझ सुजाण ॥ १०-४० ॥

दीसै जठै विभूती जोती कांति सक्ति बींनैं ही जाण
म्हाँरै तेज अंस सूँ उतपत सकळ पारथा समझ सुजाण ॥ १०-४१ ॥

घण जाणण सूँ के परयोजन जाण तत्व सूँ मन्हें सुजाण
अेक अंस माया सूँ सगळो धार जगंत थित हूँ नित जाण ॥ १०-४२ ॥

• • •

इग्यारवों अध्याय

विस्व रूप दरसण योग

अरजुन बोल्यो–

गुपत ज्ञान रा वचन वखाण्या भारी महर करी भगवान
परम ज्ञान री जोत जगाई मिटा दियो म्हारो अज्ञान ।। ११-१ ।।

श्रीमुख सूँ मैं सुणी खुलासा भूत जगत उतपती विनास
अविनासी हो आप प्रभुजी परम जोत हो परम उजास ।। ११-२ ।।

आप वखाणो सो सव साचो हे परमेसर है विसवास
पण पिरतक दरसण करणैं री म्हाँरोड़ै मनड़ै अभिलास ।। ११-३ ।।

दरसण दैंण जोग जे जाणो तो योगेसर परम सुजान
परम रूप रो पिरतक दरसण अविनासी देओ भगवान ।। ११-४ ।।

भगवान वखाण्यो–

भाँत-भाँत रा वरण हजारूँ दिव्य रूप थारै हित धार
हूँ ऊभो निजराँ रै सामो निरख पारथा निजर पसार ।। ११-५ ।।

भरत वंस रा वीर अरजुना देख अदित हूँ वसू सुजाण
रुद्र असविनी पवन सभी हूँ अणलखियो इचरजियो जाण ।। ११-६ ।।

गुडाकेस थिर निजर निरखलै सकळ चराचर जगत निहार
भळै जको भी निरखण चावै भली भाँत लख निजर पसार ।। ११-७ ।।

पण तूँ थारी इण निजराँ सूँ निरख सकै नहिं म्हाँरो रूप
इण कारण दूँ दिव्य–नेतरा निरख पारथा दिव्य सरूप ।। ११-८ ।।

संजय बतायो–

संजय बोल कह्यो राजा नैं, इण उपराँत कृष्ण भगवान
अपणो दिव्य रूप दरसायो अरजुन नैं प्रभु परम सुजान ।। ११-९ ।।

अणगिण मुख नेतर उदबुदिया भाँत-भाँत रा रूप सँवार
दिव्य भुजावाँ दिव्य भूषणाँ अणगिण दिव्य ससतराँ धार ।। ११-१० ।।

दिव्य माळ सुभ वसतर सोभै दिव्य सुगंधी री महकार
अरजुन दरस प्रभु रो करियो इचरज भरियो अपरंपार ।। ११-११ ।।

आभैयै में ऊग हजारूँ सूरज सागै करै उजास
तो भी राजन इसो न जिसड़ो विस्वरूप रो परम प्रकास ।। ११-१२ ।।

इचरज भरियो रूप देखताँ अरजुन निरख्यो निजर पसार
परम प्रभू री काया में थित न्यारोन्यार सकळ संसार ।। ११-१३ ।।

उण उपराँत रुँआँ फुरकंताँ इचरज सूँ अरजुन हरषाय
हाथ जोड़ सरधा सूँ बोल्यो लुळ-लुळ प्रभु नैं सीस नवाय ।। ११-१४ ।।

अरजुन बोल्यो–

प्रभु थाँरी काया में दीसै सकळ देव-भूतळ समुदाय
कँवळ आसणाँ ब्रह्मा राजै महादेव रिसि साँप सुझाय ।। ११-१५ ।।

हाथ पेट मुख नैंण अनेकूँ अणत रूप स्वामी दरसाय
आद मध्य अर अंत न दीसै विस्वरूप रो पार न पाय ।। ११-१६ ।।

गदा मुगट अर चक्र प्रकासै दसूँ दिसा में जोत पसार
सूरज अगन जिसो पळकारो रूपळ रूप पड़ै भळकार ।। ११-१७ ।।

जाणण जोग परम आखर हो परम ब्रह्म परमातम आप
पुरुष सनातन धरम रुखाळा जग रो अेक आसरो आप ।। ११-१८ ।।

आद मध्य अर अंत बिनाँळा लखूँ अणत प्रभु समरथवान
सूरज चाँद नैंण जग तापै अगण भुजा मुख अगन समान ।। ११-१९ ।।

सरग धरा मध आसमान अर दसूँ दिसा परिपूरण आप
तीनूँ लोक डरंता काँपै निरख भयंकर अद्‌भुत आप ।। ११-२० ।।

सकळ देव परवेस आप में डर कर जोड़ करै गुणगान
सिद्ध महरिसी मंगळ गावै विनती करै हुवो कल्याण ।। ११-२१ ।।

रुद्र अदित वसु और साधगण मरुत असविनी विसवेदेव
सिद्ध पितर गंधर्व यक्षगण राखस लखै अचूँभा लेय ।। ११-२२ ।।

अणगिण हाथ पाँव मुख नेतर उदर जाड़ सब करुड़ कराळ
हूं डरपूँ सब लोक डरपिया निरख रूप थाँरो विकराळ ।। ११-२३ ।।

हे विसणूँ गिगनार परसता गमकतड़ा थाँरा बहुरूप
जगमग मुख मोटा नेतर लख डरपूँ धीर न सांति अनूप ।। ११-२४ ।।

परळै री अगनी मुख जगता विकराळी जाड़ाँ लख माँय
दिसा न सूझै मिलै न सुखड़ो जगदाधार प्रभू तूठाय ।। ११-२५ ।।

भीषम द्रोण करण सब जोधा धृतरासटर-सुत नृप समुदाय
हूँ सब लखूँ करै परवेसो बेगोबेग आपरै माँय ।। ११-२६ ।।

म्हाँरै भी पख रा मुख जोधा विकराळी जाड़ाँ मुख माँय
भळै केई भुरभुरिया माथाँ लखूँ आप दाँताँ लिपटाय ।। ११-२७ ।।

ज्यूँ नदियाँ रो नीर वेग सूँ जाय समँदराँ माँय समाय
विस्व रूप मुखड़ाँ परवेसै सूरवीर नर रा समुदाय ।। ११-२८ ।।

ज्यूँ मो–माया पड़ै पतंगा नष्ट हुवणनैं वळती लाय
त्यूँ सगळा ही लोग विनासण घणैं वेग सूँ आप समाय ।। ११-२९ ।।

आप सकळ लोकाँ नैं चाटो जगमग मुखड़ाँ माँय ग्रसाय
जवर जोत सूँ विसणूँ जगनैं दिव्य तेज सूँ ताप-तपाय ।। ११-३० ।।

करुड़ रूप धारी थे कुण हो प्रभु म्हाँरै हित करो वखाण
नमूं तत्व पिरकरती जाणण हे देवाँ-रा देव तुठाय ।। ११-३१ ।।

भगवान बखाण्यो–

सब लोकाँ रो नास करणियो महाकाळ बधियो हूँ जाण
प्रगट हुयो हूँ लोक विनासण तें बिन मिटसी विपख सुजाण ।। ११-३२ ।।

जस री जोत जगा उठ अरजुन दुसमण जीत राज सुख भोग
सूर सव्यसाची मैं मारया निमित मात्र बण समझ सुयोग ।। ११-३३ ।।

भीषम द्रोण करण जयद्रथ सब जोधा म्हाँ मारया तूँ जाण
डर मत मार जीतसी निसचै उठ अरजुन कर जुध घमसाण ।। ११-३४ ।।

संजय बतायो–

सुण केसव रा वचन काँपतो डरतो अरजुन कर जोड़ाय
नमसकार कर घणों गळगळो प्रभु सूँ बोल्यो सीस निवाय ।। ११-३५ ।।

अरजुन बोल्यो–

नाँव कीरतन सूँ जग प्रभुवर हरख-हरख अनुराग लगाय
दिस-दिस में राखस डर भागै नमै सिद्धगण रा समुदाय ।। ११-३६ ।।

आद देव ब्रह्मा रा करता नमसकार वै क्यूँ न कराय
आप अणत देवेस जगत रा ब्रह्म आखराँ सभी समाय ।। ११-३७ ।।

आद सनातन पुरुष आप प्रभु परम अणत हो जगदाधार
ज्ञानी आप जाणणैं जोगा परम विस्व व्याप्यो परसार ।। ११-३८ ।।

अगन पवन अर वरुण चन्द्रमा आप प्रभू ही हो यमराज
ब्रह्मा रा भी आप ब्रह्म हो नमूँ हजारूँ वार प्रणाम ।। ११-३९ ।।

नमसकार है सकळ दिसा सूँ आगै-लारै सूँ सब रूप
आप अणत समरथ विकरम हो जग व्याप्यो है विस्व सरूप ।। ११-४० ।।

प्रभुवर मैं महिमा नहिं जाणी सखा भाव सूँ समझ सुजाण
कह्यो प्रेम सूँ का आळस सूँ कृष्ण सखा यादव अणजाण ।। ११-४१ ।।

हँसी मसखरी आसण सैया अपमाण्यो आहार-विहार
अेकलड़ाँ का सखाँ सामनैं करी भूल दो प्रभू विसार ।। ११-४२ ।।

पूजनीक गुरुवर विसवेसर जगत चराचर पिता सुजान
तीन लोक में थाँसूँ मोटो कोनीं दूजो आप समान ।। ११-४३ ।।

पिता पुत्र रा सखा सखा रा पति पतनी रा सह अपराध
प्रभु तूठण निव करूँ वीनती सहण जोग म्हाँरा अपराध ।। ११-४४ ।।

प्रभु इचरजियो अलख रूप लख हरखूँ पण मनड़ै भय लाय
जगदाधार प्रभूजी तूठो रूप चतरभुज ही दरसाय ।। ११-४५ ।।

विस्व रूप हे सहसबाहु प्रभु विष्णूँ रूप धरो प्रगटाय
रूप चतरभुज दरसण चाहूँ गदा चक्र धर-मुगट धराय ।। ११-४६ ।।

भगवान बखाण्यो–

आद अनंत तेज दरसायो अरजुन किरप योग बळ रूप
तैं सिवाय दूजै नहिं लखियो ओ' विराट अर परम सरूप ।। ११-४७ ।।

वेद यज्ञ रा पाठ करो या दान करम कर तपो अनूप
तैं सिवाय लख सकै न दूजो मिरत लोक में विस्व सरूप ।। ११-४८ ।।

लख विकराळ रूप मत घबरा मूढ भाव अरजुन मत लाय
संख चक्र अर गदा पदम धर निडर प्रीत मन भळै लखाय ।। ११-४९ ।।

संजय बतायो–

इण तरियाँ भगवान बोल फिर रूप चतरभुज दियो दिखाय
आकळ-वाकळ अरजुन नैं प्रभु साँवर सूरत धीर बँधाय ।। ११-५० ।।

अरजुन बोल्यो–

प्रभु थाँरो लख रूप साँवरो हुयो सांत चित हूँ चित लाय
हे जनारदन निरख आपनैं अब पायो मैं निजू सभाव ।। ११-५१ ।।

भगवान बखाण्यो–

तैं निरख्यो जो आज अरजुना दुरलभ धणों चतरभुज रूप
देव सदा दरसण नैं तरसै निरखण म्हाँरो इसो सरूप ।। ११-५२ ।।

अरजुन मन री अचळ थापना कर न सकै जे म्हाँरै माँय
तो तूँ कर अभ्यास जोग सूँ म्हाँ पावण इँछा मन लाय ।। १२-९ ।।

जे न सकै अभ्यास करण तूँ म्हाँ हित परम करम अपणाय
म्हाँरै अरथ करम करतो भी तूँ सिद्धी ही लेसी पाय ।। १२-१० ।।

भळै जदी कर सकै न ओ भी तो तूँ म्हाँरै सरणैं आय
सरब करम फळ त्याग जोग सूँ मन जीत्योड़ो म्हाँनैं पाय ।। १२-११ ।।

ज्ञान बडो अभ्यास जोग सूँ और ज्ञान सूँ ध्यान विसेस
बडो करम फळ त्याग ध्यान सूँ ततखण हुवै साँति परवेस ।। १२-१२ ।।

बैर भाव बिन सब भूताँ में बिन स्वारथ मितर किरपाळ
अहंकार ममता नहिं व्यापै सम सुख दुख नर जको खमाळ ।। १२-१३ ।।

जको रात दिन ध्याय ध्यान सूँ हाण—लाभ राखै संतोस
द्रिढ़ निसचै मन वस राखणियो अरपणियो प्रिय भगत निदोस ।। १२-१४ ।।

जिण सूँ कोई जीव न बिदकै आप किणीं सूँ नाँ बिदकाय
हरख क्रोध भय बिदक बायरो सो ही म्हाँनैं भगत सुहाय ।। १२-१५ ।।

भगत पुरुष म्हाँनैं बो प्यारो जिण मन नाँ कोई इंछाळ
माँय-बार सुध चतर निरपखो दुख टळियो त्यागी सरबाळ ।। १२-१६ ।।

हरख सोच अर बैर न व्यापै जको कामना करै न कोय
सुभ अर असुभ करम फळ त्यागी सो ही भगत मन्हें प्रिय होय ।। १२-१७ ।।

संतरू-मितर भेद न राखै जको मान-अपमान समान
जगत आसकी भाव न व्यापै सरद गरम सुख दुख सम जाण ।। १२-१८ ।।

निन्दा अर इसतुति सम समझै मौन तूठ ज्यूँ-त्यूँ निभ जाय
थान-मुकाम न राखै ममता थिर बुध भगत मन्हें वो भाय ।। १२-१९ ।।

धरम धार निसकाम भाव भर कर सरधा इमरत लै पाण
परम भगत जो इयाँ बखाण्या पण प्यारा तूँ समझ सुजाण ।। १२-२० ।।

• • •

तेरवों अध्याय

क्षेत्र क्षेत्रज्ञ विभाग योग

भगवान बखाण्यो–

आ काया ही क्षेत्र कहीजै जो इणनैं जाणैं क्षेत्रज्ञ
अरजुन जका तत्व नैं जाणैं बै ही इयाँ बखाणैं विज्ञ ।। १३-१ ।।

सब क्षेत्राँ क्षेत्रज्ञ अरजुना म्हाँनैं ही तूँ समझ सुजाण
तत्व क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ जाणणो म्हाँरै मत है बो ही ज्ञान ।। १३-२ ।।

जो है क्षेत्र जिसो जिण कारण जिणाँ विकाराँ जिसै सभाव
थोड़ै में सब सुण म्हाँरै सूँ बो क्षेत्रज्ञ जिसै परभाव ।। १३-३ ।।

भाँत–भाँत रा वेद मंतराँ रिसियाँ तत्व कह्यो समझाय
और जुगत सूँ कर भल निसचै ब्रह्मसूत्र पद में भी गाय ।। १३-४ ।।

पाँच भूत बुध अहंकार अर तीन गुणी माया तूँ जाण
दसूँ इन्द्रियाँ मन अेकलड़ो पाँच इन्द्रियाँ विषै सुजाण ।। १३-५ ।।

सुख दुख इंछा द्वेष देह अर धृती चेतना अरजुन जाण
इणतर क्षेत्र विकाराँ भरियो मैं थोड़ै में कियो बखाण ।। १३-६ ।।

बिनाँ दंभ रै खमा अहिंसा ऊँचपणैं रो नहीं गुमान
घणैंमान सरधा गुरु सेवा थिर सुध बुध सूँ आतमवान ।। १३-७ ।।

भोग लोक परलोक विरागी और न राखै अहंकार
जलम मरण अर ज़रा रोग में लखै दोष दुख वारंवार ।। १३-८ ।।

पतनी पूत न घर दौलत में ममता और आसकी लाय
हरख-सोक अरजुन नहिं व्यापै प्रिय-अप्रिय नित सम चित चाय ।। १३-९ ।।

अेक भाव थिर ध्यान जोग सूँ प्रभुवरता भगती सूँ ध्याय
सेवै सुध अेकाँत न रीझै विषै डूबियाँ नर समुदाय ।। १३-१० ।।

नित थित रह अध्यातम ज्ञान में तत्व ज्ञान सगळै दरसाय
ओ ही ज्ञान कहीजै इणसूँ उलटो सब अज्ञान कवाय ।। १३-११ ।।

कथसूँ जाणण जोग जाण जिण पुरुष परम आणद ही पाय
अकथ अनादी परम ब्रह्म है सत अर असत कह्यो नहिं जाय ।। १३-१२ ।।

च्यारूँमेर हाथ पग नेतर च्यारूँमेर सीस मुख कान
कारण सकळ लोक कर व्यापत थित है परम आतमावान ।। १३-१३ ।।

सकळ इन्द्रियाँ रा गुण जाणैं पण सगळचाँ सूँ निपट वियोग
निरगुण हुयो योग माया सूँ भोगै धार पोख गुण भोग ।। १३-१४ ।।

माँय-बार सगळा भूताँ में सकळ चराचर परम सरूप
सुखम तत्व अणदीठो बो ही घण नैड़ो-अळगो थित रूप ।। १३-१५ ।।

अेकल और सकळ भूताँ थित दीसै न्यारोन्यार सुजाण
धार पोख संहार करणियो जलम देणियो ब्रह्मा जाण ।। १३-१६ ।।

जोताँ माँली परम जोत पण माया सूँ घण श्रेष्ठ कहाय
जाणण जोगो परम ज्ञान थित तत्व ज्ञान सब हियाँ समाय ।। १३-१७ ।।

इणतर क्षेत्र ज्ञान अर ज्ञेयम मैं थोड़ै में दिया बताय
परम रूप नैं जाण तत्व सूँ म्हाँरो भगत मन्हें ही पाय ।। १३-१८ ।।

तिरगुणती माया जीवातम दोनूँ रूप अनादी जाण
गुण विकार सागै उतपतिया कुदरत सूँ ही समझ सुजाण ।। १३-१९ ।।

करम करण उतपती कारणैं कुदरत हेतु बखाणी जाय
अर अरजुन आ पुरुष आतमा सुख दुख भोगण हेतु कहाय ।। १३-२० ।।

कुदरत में थित हुयो पुरुष ही कुदरत रा गुण भोग लगाय
गुण संगत सूँ ही जीवातम भली बुरी जूणी जलमाय ।। १३-२१ ।।

पुरुष भोगता अणदीठा अर मंता भरता परम बताय
इण काया थित हुयाँ भी पर है सब देवाँ रा देव कहाय ।। १३-२२ ।।

इणतर पुरुष और गुण कुदरत जो नर लेय तत्व सूँ जाण
वो इणनैं हरज्यूँ बरतंतो पुनरजलम भी लै न सुजाण ।। १३-२३ ।।

सुध बुध ध्यान हियै धर देखै कइयक पुरुष योग कर ज्ञान
कइयक देखै करम योग सूँ परम आतमा परम सुजान ।। १३-२४ ।।

पण कइयक अणजाण जीवड़ा तत्व ज्ञानियाँ सूँ सुण ध्याय
इणतर कान लगावणिया भी निसचै भवसागर तिर जाय ।। १३-२५ ।।

जियाजूण सब थावर जंगम अरजुन जो उपजै तूँ जाण
क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ योग सूँ हुई सकळ उतपती सुजाण ।। १३-२६ ।।

पुरुष नासता भूताँ देखै अविनासी प्रभु थित सम भाव
जको लखै सो लखै अरजुना परम आतमा सही लखाय ।। १३-२७ ।।

सगळाँ में समभाव व्यापियै परमेसर नैं लखत समान
आप नष्ट नहिं करै आपनैं पुरुष परम गत पाय सुजान ।। १३-२८ ।।

जको पुरुष सगळा करमाँ नैं कुदरत सूँ ही हुया लखाय
अण करता जो लखै आतमा बो ही अरजुन ठीक लखाय ।। १३-२९ ।।

न्यारोन्यार भाव भूताँ रो अेक परम थित जणाँ लखाय
और परम में भूत पसारो निरखै तणाँ ब्रह्म नैं पाय ।। १३-३० ।।

अरजुन हुयाँ अनादी निरगुण ओ' अविनासी परम लखाय
काया में थित हुयाँ थकाँ भी कीं न करै बो नाँ लींपाय ।। १३-३१ ।।

आभैयै ज्यूँ सरब व्यापतो सुखम कारणैं नाँ लींपाय
त्यूँ थित सकळ देह में आतम देह गुणाँ सूँ नाँ लींपाय ।। १३-३२ ।।

अरजुन जियाँ अेकलो सूरज सकळ लोक में करै प्रकास
वीयाँ ही तो सकळ क्षेत्र में अेक आतमा करै उजास ।। १३-३३ ।।

क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ भेद नैं भूत-प्रकृति सूँ मोक्ष उपाय
ज्ञान नेतराँ जो जन जाणैं बो ही परम ब्रह्म पद पाय ।। १३-३४ ।।

० ० ०

चवदवों अध्याय

गुण त्रय विभाग योग

भगवान बखाण्यो–

ऊँचो परम ज्ञान ज्ञानाँ में करसूँ थारै काज बखाण
मुनि सब परम सिद्धि ले तरग्या भव सूँ मुगत हुया जिण जाण ॥ १४-१ ॥

धार आसरो इणीं ज्ञान रो म्हाँरो परम रूप नर पाय
जलमै नहीं सृष्टि रै उदै परळै में भी नहिं अकुळाय ॥ १४-२ ॥

म्हाँरी ब्रह्मजूण घण मोटी हूँ उण में दूँ बीज थपाय
जड़ चेतन संजोग भारता सकळ भूत उतपती उगाय ॥ १४-३ ॥

भाँत-भाँत री सब जूण्याँ में जिती मूरत्याँ धरै सरीर
वाँ सबरी माँ तिरगुण माया अर हूँ बाप बीज रो हीर ॥ १४-४ ॥

सत रज और तमो गुण अरजुन जण्या प्रकृति तीनूँ गुण जाण
अविनासी जीवातम बाँधै गुण देही रै माँय सुजाण ॥ १४-५ ॥

वाँ तीनाँ में जोत करणियो निरविकार निरमळ सत जाण
सुख अर ज्ञान आसकी भावाँ वो बाँधै निसपाप-सुजाण ॥ १४-६ ॥

राग रूप तिसणा रज उपज्यो है अरजुन म्हाँसूँ तूँ जाण
करम करमफळ री आसकती जीवातम लै बाँध सुजाण ॥ १४-७ ॥

अरजुन सकळ देह मोवणियो तम अज्ञान उपजियो जाण
घण गुमान आळस निंदरा सूँ जीवातम लै बाँध सुजाण ॥ १४-८ ॥

अरजुन सत्व लगावै सुख में और रजोगुण करम लगाय
ढकै ज्ञान नैं अंध तमोगुण घण गुमान में दै उळझाय ॥ १४-९ ॥

रज तम दबा सतोगुण छावै सत रज दबा तमोगुण छाय
कदै रजोगुण बधै अरजुना तमो-सतोगुण बिंयाँ दबाय ॥ १४-१० ॥

इण देही अर सकळ बारणाँ हुवै चानणो जद ही जाण
और ज्ञान सगती जद उपजै बध्यो सतोगुण समझ सुजाण ॥ १४-११ ॥

बधयाँ रजोगुण लोभ प्रवरती सकळ काम आरंभ कराय
अरजुन मन चंचेड़ असाँयत विषे भोग री लाळ लगाय ॥ १४-१२ ॥

बधयाँ तमोगुण घुटै अँधारो अरजुन नर करतब भटकाय
अन्तरकोर इन्द्रियाँ विगड़ै अहंकार अर मोह धिराय ॥ १४-१३ ॥

मरै सतोगुण री बिरधी में अरजुन जद जीवातम जाण
ऊँचा थान मुकाम निरमळा सुरग लोक ही पाय सुजाण ॥ १४-१४ ॥

मरयाँ रजोगुण री बिरधी में करमी-जणाँ माँय जलमाय
और तमोगुण री बिरधी में मूरख-जणाँ उतपती पाय ॥ १४-१५ ॥

सात्विक करम करयाँ तो सात्विक अर निरमळ फळ कह्यो सुजान
राजस करम करयाँ रो फळ दुख तामस रो फळ है अज्ञान ॥ १४-१६ ॥

समझ सतोगुण ज्ञान ऊपजै लोभ रजोगुण निसचै जाण
उपजै मोह गुमान तमोगुण और भळै अज्ञान सुजाण ॥ १४-१७ ॥

सुरग लोक में जाय सतोगुण मिरत लोक में राजस जाय
और नीच भूँडी बिरती रा तामस नरक लोक ही पाय ॥ १४-१८ ॥

दरसक तीन गुणाँ सूँ न्यारो दूजो करता जद न लखाय
तीन गुणाँ सूँ श्रेष्ठ परम तत जाण पुरुष म्हाँ रूप समाय ॥ १४-१९ ॥

पुरुष देह इण उतपत कारण गुण तीनाँ सूँ जद लंघाय
जलम मरण अर जरा दुखाँ सूँ मुगत हुयो परमाणँद पाय ॥ १४-२० ॥

अरजुन पूछ्यो–

अै तीनूँ गुण पुरुष लँघै जद किसा-किसा वो लक्षण पाय
और करै वो किसा आचरण प्रभु लाँघै वो किसै उपाय ॥ १४-२१ ॥

भगवान वखाण्यो–

सत उजास रज री परवरती अरजुन तम रै मोह भराव
पुरुष हुयाँ रत वुरो न समझै विरत हुयाँ मन करै न चाव ।। १४-२२ ।।

जको विरत थित गुणाँ न विचळै गुण में गुण वरतै आ जाण
अेकांभाव परम थित रैवै हिलै न डोलै पुरुष सुजाण ।। १४-२३ ।।

सुख दुख में सम हुवै निरोगो भाटो धूड़ हेम सम जाण
धीर गिणैं सम खारो-मीठो सम निंदा इसतुती सुजाण ।। १४-२४ ।।

गिणैं मान–अपमान वरावर वैरी-मितर अेक समान
गुणाँ लाँघियो पुरुष कहीजै करतापण नहिं गरव-गुमान ।। १४-२५ ।।

जो सत पुरुष सदा ही सेवै भगत योग सूँ म्हाँनैं जाण
परम लीण हुवणैं हित जोगो वो तीनूँ गुण लाँघ सुजाण ।। १४-२६ ।।

अविनासी पर व्रह्म सनातन धरम और इमरत रो थान
हूँ अखण्ड आणन्द आसरो ओ अरजुन तूँ समझ सुजान ।। १४-२७ ।।

• • •

पनरवों अध्याय

पुरुषोतम योग

भगवान बखाण्यो–

ऊपर जड़ाँ डाळियाँ नीचै जग पींपळ अविनासी जाण
पत्ता वेद तत्व जो जाणैं बो जाणणियो वेद सुजाण ।। १५-१ ।।

ऊँची-नीची साख पसारी विषै कूँपळयाँ तिरगुण छाय
मिरतलोक में करम बँधाणी जड़ाँ जमीं सब लोकाँ माँय ।। १५-२ ।।

आद-अंत थिति नाँ जग-पींपळ अठै न इसड़ै रूप लभाय
द्रिढ मूळाँळै उण पींपळ नैं द्रिढ़ ससतर बैराग कटाय ।। १५-३ ।।

पछै परम पद नैं भल सोधो सोधणिया फिर नाँ जलमाय
घण पुराण परवरती पसरी उणीं परम री सरण धराय ।। २५-४ ।।

मोह मिटयाँ सब दोस जीतियाँ नित थित हुयाँ परम नैं ध्याय
सुख दुख मुगत कामनाँ छोडयाँ ज्ञानी पद अविनासी पाय ।। १५-५ ।।

सूरज चाँद न अगन उजासै जोत प्रकासै आपोआप
पाय परम पद फेर न जलमैं बो ही परम म्हाँरळो धाम ।। १५-६ ।।

म्हाँरो ही तो अंस सनातन इण देही जीवातम जाण
थित तिरगुण माया मन पाँचूँ इन्दरयाँ करषै समझ सुजाण ।। १५-७ ।।

पवन गंध लै जियाँ अरजुना जाम गंध रै थान मुकाम
त्यूं जीवातम देह-त्याग सूँ ले इन्दरयाँ जा नूँई जाम ।। १५-८ ।।

कान आँख अर जीभ चामड़ी और नाक मन साथ लगाय
नुँई देह में जा जीवातम विषयाँ नैं सेवण में लाय ।। १५-९ ।।

तजताँ देह धारताँ देही विषै भोगताँ तिरगुण माँय
ज्ञान नेतराँळा तत जाणैं पण अज्ञानी जाणैं नाँय ।। १५-१० ।।

जोगी हियै माँय थित आतम करताँ जतन तत्व लै जाण
असुध आतमा अज्ञानी तो जतन करंता भी अणजाण ।। १५-११ ।।

जको तेज सूरज में थित हुय सकळ जगत परकासै जाण
चाँद-अगन में थित है बो भी म्हाँरो ही है तेज सुजाण ।। १५-१२ ।।

हूँ धरती में बड़ सगती सूँ सब भूताँ नैं धारूँ जाण
चाँद रसीलो हुय, सगळी ही औषध पोखूँ समझ सुजाण ।। १५-१३ ।।

हूँ थित सकळ प्राणियाँ देही वैस्वानर रो रूप धराय
हूँ ही प्राण-अपाण जुगत हुय, देऊँ च्यारूँ धान पचाय ।। १५-१४ ।।

हूँ थित सकळ जियाँ रै हिवड़ै हूँ उँपणण अर सुमरण ज्ञान
हूँ ही वेद रचणियो ज्ञानी वेदाँ जाणण जोग सुजान ।। १५-१५ ।।

दोय भाँत रा पुरुष जगत में नासवान-अविनासी जाण
सब भूताँ री काया नसवर अविनासी जीवातम जाण ।। १५-१६ ।।

उत्तम नर दोनाँ सूँ न्यारो तीनूँ लोक धार पोखाय
अविनासी ईसर परमातम कहियो इयाँ अरजुना जाय ।। १५-१७ ।।

नासवान सूँ जाबक न्यारो अविनासी सूँ उत्तम जाण
इणीं कारणैं हूँ पुरुषोतम लोक–वेद में नाँव सुजाण ।। १५-१८ ।।

ज्ञानी पुरुष तत्व सूँ म्हानैं पुरुषोतम ही जको जणाय
सरब जाण बो सब भावाँ सूँ जाण भारता मन्हें भजाय ।। १५-१९ ।।

ओ निसपाप अरजुना ! इणतर गुपत सास्त्र मैं कियो बखाण
इणनैं जाण तत्व सूँ ज्ञानी धन्य-धन्य हुय जाय सुजाण ।। १५-२० ।।

• • •

सोळवों अध्याय

दैवासुर सम्पद विभाग योग

भगवान बखाण्यो–

निरभै अंतसकरण सुधारै ज्ञान योग द्रिढ़ धार विचार
दान इन्द्रियाँ दमन हवन अर तप स्वाध्याय सरल चित धार ।। १६-१ ।।

सत्य अहिंसा त्याग सांति धर निंदा और क्रोध नहिं लाय
अळी चेसटा विसै लजाळू भूत हिंयाळू दया सुभाय ।। १६-२ ।।

अरजुन तेज क्षमा धर धीरज तन मन राखै सुद्धी जाण
हिवड़ै वैर गरब नहिं पाळै देव सम्पदा पुरुष सुजाण ।। १६-३ ।।

पारथ जाण भळै अै लक्षण जठै दंभ धण गरब-गुमान
असुर सम्पदा पाया पुरुषाँ करड़ा वचन क्रोध अज्ञान ।। १६-४ ।।

देव सम्पदा मुगती खातर बाँधण असुर सम्पदा जाण
तूं है देव सम्पदा पायो अरजुन मत कर सोच सुजाण ।। १६-५ ।।

अरजुन इयै लोक में मान्या दोय भाँत रा भूत स्वभाव
देव असुर में देव वखाण्यो अब म्हाँसूं सुण असुर स्वभाव ।। १६-६ ।।

करतव लग अण करतब टळणो नाँ जाणैं नर असुर स्वभाव
वाँ में सूघ न श्रेष्ठ आचरण साँच कैंण रो सफा अभाव ।। १६-७ ।।

असुर कवै जग सफा झूठ है ईसर और आसरो नाँय
नर-नारी संजोग जण्यो है हेतु न भोगण भोग सिवाय ।। १६-८ ।।

मिथ्या ज्ञान आतमा खोया बुधमंदा अपकार कुभाव
करम करूड़ा मिनख जगत नैं नास करणनैं ही जलमाय ।। १६-९ ।।

दंभ मान मद सूँ भरियोड़ा अड़क कामणा हियै धराय
ले मिथ्या सिद्धान्त मोह सूँ भ्रष्ट आचरण जग बरताय ।। १६-१० ।।

चिता न छूटै इसड़ी चिन्ता अणँत आसरो हियै जड़ाय
विषै भोग भोगण में लाग्या इणीं मान आणँद बिलमाय ।। १६-११ ।।

आसा फाँस सैकड़ाँ बँधिया काम क्रोध में घण उळझाय
विषै भोग पूरण री खातर अधरम धन संचण घण धाय ।। १६-१२ ।।

ओ' पायो मैं आज मनोरथ अजूँ पायसूँ आ' मन माँय
म्हाँरै हाथ इतो धन आयो और भळै मिळसी धन आय ।। १६-१३ ।।

बीं बैरी नैं मार लियो मैं अर बींनैं भी लेसूँ मार
हूँ ईसर भोगाँ भोगणियो सिद्ध सुखी हूँ जोराँदार ।। १६-१४ ।।

घण धनवान बडो परवारी म्हाँ जिसड़ो दूजो नहिं कोय
हवन दान करसूँ हरखासूँ इणतर बो अज्ञान विमोय ।। १६-१५ ।।

चित भरम्या अर मोह उळझिया विषै भोग में घण डूबाय
भाँत-भाँत सूँ पुरुष पड़ै रे इणतर घोर नरक में जाय ।। १६-१६ ।।

आपोआप फुटाणी फोड़ै पुरुष गुमानी धन मद माण
बिनाँ सास्त्र विध करै होमड़ा जका दंभ सूँ यजण-यजाण ।। १६-१७ ।।

अहंकार बळ गरब कामणा और क्रोध में जका भराय
बै पर निंदक देही-देही थित म्हाँसूँ ही द्वेष कराय ।। १६-१८ ।।

वाँ बैरी पापी नीचाँ नैं करम करूड़ाँ नैं छिटकार
असुर जूण में ही हूँ नाँखूँ इण जगती में बारंबार ।। १६-१९ ।।

बै नर मूढ़ असुर जूणी में जलम-जलम ही भटका खाय
मन्हें न पाय भळै घण नीची दुरगत घोर नरक में जाय ।। १६-२० ।।

काम क्रोध अर लोभ तीन विध अरजुन तीन नरक रा वार
वै तीनूँ ही आतमनासी वाँ सूँ टळणो ही हितकार ।। १६-२१ ।।

अरजुन तीन नरक दरवाजाँ मुगत हुयो नर निसचै जाण
करै आतम कल्याण आचरण परम गती लै पाय सुजाण ।। १६-२२ ।।

सास्त्र विधी नैं त्याग जको नर आपोआप करम बरताय
सिध पावै न परम गत पावै भळै न बो सुखड़ो ही पाय ।। १६-२३ ।।

ओ' निरणो करतब-अण करतब तैं हित जाण सास्त्र परवाण
अरजुन सास्त्र विधी निरणीज्यो करम करण ही जोग सुजाण ।। १६-२४ ।।

● ● ●

सतरवों अध्याय

श्रद्धा त्रय विभाग योग

अरजुन पूछयो–

सास्त्र विधी तज सरधा ध्यावै पूजै जका कृष्ण भगवान
सत रज और तमोगुण माँसूँ बाँरी कुणसी थिती सुजान ।। १७-१ ।।

भगवान बखाण्यो–

देह स्वभाव ऊपजी सरधा सत रज तम तिरभाँत सुजाण
इणतर तीन गुणी बा सरधा अरजुन तूँ म्हाँ सूँ सुण जाण ।। १७-२ ।।

अरजुन सकळ जणाँ री सरधा बाँरै ही मन माफक जाण
जिसड़ी सरधा हुवै जिणाँ री बिसड़ो समझ स्वरूप सुजाण ।। १७-३ ।।

सात्विक पुरुष देवता पूजै राजस पुरुष राखसाँ जाण
और जका तामस जण पूजै भूत प्रेत गण समझ सुजाण ।। १७-४ ।।

विनां सास्त्र विधि रै मन मान्या जका घोर तप तपै तपाय
वै नर दंभ घणा गरबीज्या काम राग अभिमान भराय ।। १७-५ ।।

देह रूप थित काया रोसै मन में थित म्हाँनैं भी ताण
वाँ पुरुषाँ नैं समझ अरजुना असुर भाव अज्ञानी जाण ।। १७-६ ।।

भोजन भी सगळाँ नैं प्यारो आप आपरै तिरविध भाव
त्यूँ ही यज्ञ दान तप तिरविध सुण तूँ भेद कथूँ समझाय ।। १७-७ ।।

वुध बळ और निरोगी आयू सुख अर प्रीत वधावण सार
थिर रस भरियो घणों चीकणो सात्विक मन प्यारो आहार ।। १७-८ ।।

खारो खाटो गरम लूणियो तीखो लूखो दाह भराय
सो भोजन राजस जण प्यारो दुख भय सोक जको उपजाय ।। १७-९ ।।

अधपकियो गतरसियो कोझो बासी-कूसी जो गिंधाय
बो अैंठो-चूंठो ही भोजन तामस जण रुच–रुच नैं खाय ।। १७-१० ।।

यज्ञ सास्त्र विधि सूँ ही करणो करतब है मन धार सुजाण
करै बिनाँ फळ री इंछा जो जिग बो ही है सात्विक जाण ।। १७-११ ।।

दंभ अरथ हित करै यज्ञ जो फळ री ताक राख मन जाण
बो राजस रो यज्ञ अरजुना तूँ उणनैं यूँ समझ सुजाण ।। १७-१२ ।।

अन्न दान बिन दान दक्षिणा बिनाँ मंत्र बिन सास्त्र विधान
बिन सरधा सूँ यज्ञ कियोड़ो तामस यज्ञ कहीजै जाण ।। १७-१३ ।।

ब्रह्मचर्य व्रत भाव अहिंसा सूध-सुधाई धार सुजाण
पूजण ब्रह्म देव गुरु ज्ञानी तन-तप करण कहीजै जाण ।। १७-१४ ।।

मन में वेग नहीं लावणियो प्रिय हितकर जो सत्य वखाण
वेद सास्त्र पाठण अभ्यासण वाणी-तप निसचै कह जाण ।। १७-१५ ।।

सांत मगन मनड़ै नैं राखै मून धार आतम तूठाय
हिरदै में सुध भाव संपजै बो मानस-तप कहियो जाय ।। १७-१६ ।।

फळ न चाय निसकाम नराँ जो घण सरधा सूँ करियो जाय
इणतर जको बखाण्यो अरजुन तिरविध तप सात्विक कैवाय ।। १७-१७ ।।

आदर मान और पूजा हित घणैं दंभ सूँ करियो जाय
जको न निसचै और नहीं थिर वो राजस तप कहियो जाय ।। १७-१८ ।।

जो तप करै मूढपण हठ सूँ आप आतमा नैं पीड़ाय
अर दूजाँ रो अहित करण नैं वो तप तामस तप कैवाय ।। १७-१९ ।।

देस काळ अर मिल्याँ सुपातर करतव जाण करीजै दान
वदळ-भाव री आस न राखै कहियो सात्विक दान सुजाण ।। १७-२० ।।

वदळ–भाव री आस राखताँ दुख सूँ जको दिरीजै दान
फळ पावण री इंछा राखै कहियो राजस दान सुजान ।। १७-२१ ।।

बिन आदर बिन देस काळ रै दान कुपातर करियो जाय
बोही तामस दान अरजुना इणतर समझ बखाण्यो आय ।। १७-२२ ।।

तीनूँ सवद ॐ तत सत सूँ परम ब्रह्म रो धरियो नाँव
ब्राह्मण वेद यज्ञ सब रचिया आद सिष्टि में ब्रह्म रचाय ।। १७-२३ ।।

ब्रह्म बखाणणियाँ पुरुषाँ री नियत विधी सूँ करी विचार
यज्ञ दान तप री सब किरिया आरंभै नित ॐ उचार ।। १७-२४ ।।

तत रै भाव बिनाँ फळ चायाँ भाँत-भाँत री किरिया जाण
यज्ञ दान तप रूप करम सब मोक्ष चाणिया करै सुजाण ।। १७-२५ ।।

सत्य भाव अर साधु भाव में सत परमातम नाँव सुजाण
उत्तम करम करंताँ अरजुन सत रो सबद जुड़ै नित जाण ।। १७-२६ ।।

यज्ञ दान तप में जो थिति है बा भी सत ही जाय बखाण
इणतर करम परम हित करिया निसचै सत है समझ सुजाण ।। १७-२७ ।।

बिन सरधा रै हवन होमियो दियो दान तप कियो तपाय
कियो करम सब असत कहीजै लोक और परलोक गँवाय ।। १७-२८ ।।

○ ○ ○

अठारवों अध्याय

मोक्ष सन्यास योग

अरजुन पूछयो–

वासुदेव हे अंतर जामी महाबाहु प्रभु तत्व बखाण
न्यारोन्यार जाणणों चाहूँ त्याग और सन्यास सुजाण ।। १८-१ ।।

भगवान बखाण्यो–

कामण करम त्याग नैं पिंडत जन जाणै सन्यास सुजाण
सकळ करम फळ त्याग अरजुना कुसळ पुरुष कह त्याग बखाण ।। १८-२ ।।

दोस भरचा सब करम बखाणैं त्यागण जोग केई विदवान
कई कैवै नहिं त्यागण जोगा यज्ञ दान तप करम सुजाण ।। १८-३ ।।

हे अरजुन उण त्याग विषै में तूँ म्हाँरो निसचै सुण जाण
पुरुष श्रेष्ठ है सत रज तामस तीन भाँत रा त्याग सुजाण ।। १८-४ ।।

त्यागण जोग नहीं पण करतब यज्ञ दान तप करम सुजाण
बैं तीनूं ही यज्ञ दान तप परम पुनीत करै बुधवान ।। १८-५ ।।

यज्ञ दान तप करम समूचा फळ आसकती त्याग कराय
निसचै जाण अरजुना करतब आ म्हाँरी है उत्तम राय ।। १८-६ ।।

नियत करम रो त्याग अरजुना उचित कोयनीं रे तूँ जाण
हियै मोह भर करम त्यागणो कहियो तामस त्याग सुजाण ।। १८-७ ।।

करम जिता है दुखदायक है काय-काँस डर त्याग कराय
तो नर राजस त्याग कियाँ भी नहीं त्याग रै फळ नैं पाय ।। १८-८ ।।

सास्त्र विधी सूं नियत कियोड़ा करम करै जो करतब जाण
फळ आसकती त्याग अरजुना मान्यो सात्विक त्याग सुजाण ।। १८-९ ।।

हितकर करम नहीं आसकती और अहितकर नाँ दुखराय
निसचै ही ज्ञानी त्यागी है पुरुष सतोगुण सूँ सुळझाय ।। १८-१० ।।

कारण पुरुष देह धारी तो सकळ करम नहिं त्याग सकाय
जको करम फळ त्यागै अरजुन बो इणतर त्यागी कैवाय ।। १८-११ ।।

पुरुष सकामी रै करमाँ रो तिरविध फळ मरियाँ भी आय
बो आछो मंदो रळकटियो फळ सन्यासी कदैं न पाय ।। १८-१२ ।।

सकळ करम सिध साधण सारू पाँच साँख्य सिद्धाँत सुजाण
बै पाँचूँ ही कारण म्हाँसूँ अरजुन भली भाँत तूँ जाण ।। १८-१३ ।।

भाँत–भाँत रा न्यारा-न्यारा करता करण जतन आधार
और पाँचवों देव कहीजै इणीं विषै में न्यारोन्यार ।। १८-१४ ।।

जो नर मन वाणी काया सूँ अरजुन सास्त्र गीत-विपरीत
जका अगैरै काम उणाँ रा ही अै कारण पाँच पुनीत ।। १८-१५ ।।

इयाँ हुयाँ भी पुरुष असुध बुध कारण उणीं विषै रै माँय
केवळ करता लखै आतमा सो दुरमत नहिं सूल लखाय ।। १८-१६ ।।

"हूँ करता हूँ" भाव न राखै जको पुरुष हिरदै रै माँय
जिण री बुध नाँ करम लिपावै लोक मार नहिं पाप बँधाय ।। १८-१७ ।।

ज्ञान ज्ञेय अर ज्ञाता तीनूँ अरजुन हियै करम उपजाय
करता करम करण मिल तीनूँ करमाँ रो भण्डार भराय ।। १८-१८ ।।

करता करम करण गुण भेदाँ तिरविध साँख्य शास्त्र कैवाय
बै भी तूँ म्हाँरै सूँ अरजुन भली भाँत सुण कान लगाय ।। १८-१९ ।।

न्यारोन्यार सकळ भूताँ में लखैं अेक अविनासी ज्ञान
परम भाव समभाव हुयो जो लखै सु सात्विक ज्ञान सुजान ।। १८-२० ।।

भाँत-भाँत सूँ सब भूताँ में न्यारोन्यार अनेकूँ भाव
जकै ज्ञान सूँ जाणैं अरजुन बो ही राजस ज्ञान जणाय ।। १८-२१ ।।

काया अेक करम ज्यूँ पूरै जको आसकी में भरमाय
बिनाँ जुगत अर तत्व बायरो तुच्छ ज्ञान तामस कैवाय ।। १८-२२ ।।

सास्त्र विधी सूँ नियत करम जो करतापण रो नहीं गुमान
बिन फळ चायाँ राग द्वेष बिन कियो सु सात्विक करम सुजाण ।। १८-२३ ।।

घणैं परिश्रम सूँ जो जुड़ियो अहंकार सूँ करम धिराय
फळरी चाह गरब सूँ भरियाँ कियो सु राजस करम कवाय ।। १८-२४ ।।

फळ हाणी हिंसा निज-समरथ बिनाँ विचारयाँ मोह भराय
करम जको आरँभियो अरजुन बो ही तामस करम कवाय ।।१८-२५ ।।

बिनाँ आसकी अहंकार बिन मन धीरज धर कर उमगाव
हरख सोक सिध असिध न राखै बो सात्विक करता कैवाय ।। १८-२६ ।।

आसक हुयो करम फळ चावै हिंसा लोभ असुध आचार
हरख सोक सूँ लींप कळीज्यो सो राजस करता-करतार ।। १८-२७ ।।

सीख हीण चितभँग आळसियो धूत घमंडी सोक सभाव
दिरघ-सूतरी रोजी खोसक सो तामस करता कैवाय ।। १८-२८ ।।

अरजुन बुध धारण सगती भी गुणाँ कारणैं तिरगुण जाण
न्यारोन्यार भेद सँपूरा सुण म्हाँरै सूँ किया बखाण ।। १८-२९ ।।

परवरती–निरवरती मारग करतब–अणकरतब तत जाण
भै-निरभै मुगती अर बंधण बा बुध सात्विक समझ सुजाण ।। १८-३० ।।

धरम और अधरम नहिं जाणैं करतब अणकरतब नहिं जाण
पारथ जो न यथारथ जाणै बा बुध राजस समझ सुजाण ।। १८-३१ ।।

अरजुन जो बुध घिरी तमोगुण अधरम गिणै धरम ही जाण
ऊँधा अरथ लगावै सगळा बा बुध तामस समझ सुजाण ।। १८-३२ ।।

ध्यान योग धर सुद्ध धारणा करम इन्द्रियाँ मन अर प्राण
अरजुन जको पुरुष यूँ धारै धरी धारणा सात्विक जाण ।। १८-३३ ।।

फळ इंछाळू राख आसकी अरजुन जको धारणा पाण
धरम अरथ अर काम धरावै धरी धारणा राजस जाण ।। १८-३४ ।।

पारथ पुरुष दुष्ट बुध धारी धरै धारणा तजै न बाण
भय निंदरा चिंता दुख मद में धरी धारणा तामस जाण ।।१८-३५ ।।

अरजुन तूँ म्हाँसूँ अब सुणलै सुख भी तीन भाँत रो पाय
जिण सुख में साधक अभ्यासाँ रमण करै दुख अंत कराय ।। १८-३६ ।।

पहलाँ जो सुखड़ो विष भासै पण फळ में इमरत ज्यूँ जाण
आतम बुध परसाद उपजियो बो सुख सातविक कियो बखाण ।। १८-३७ ।।

भोगण काळ लखावै इमरत जो सुख विषै इन्द्रियाँ भोग
पण फळ में विष है जो अरजुन बो सुख राजस कह्यो सुयोग ।। १८-३८ ।।

जो सुख भोगकाळ अर फळ में आतम नैं मोहणियो जाण
आळस नींद गुमानाँ उपज्यो बो सुख तामस कह्यो सुजाण ।। १८-३९ ।।

धरती सुरग और देवाँ में अरजुन इसो न कोई जीव
कुदरत जण्याँ तीन गुण न्यारो गुणाँ बायरो जको सजीव ।। १८-४० ।।

ब्राह्मण क्षत्री वैस्य सूद्र भी समझ परंतप इयाँ सुजाण
करम सुभाव उपजियै गुण सूँ न्यारोन्यार बाँटिया जाण ।। १८-४१ ।।

सम दम खमा ऊरमा अर तप सुद्ध आसतिक सुध बुध जाण
ज्ञान और विज्ञान कुदरती ब्राह्मण रा सुभ करम सुजाण ।। १८-४२ ।।

सूरापण अर तेज धीरता दान चातरी स्वामी-भाव
जुध सूँ कदै न मुखड़ो मोड़ै अै क्षत्री रा करम सुभाव ।। १८-४३ ।।

विणज और खेती गोपाळण करम स्वभाव वैस्य रो जाण
सब वरणाँ री सेवा करणी सूद्र सुभावी करम सुजाण ।। १८-४४ ।।

आप आपरा करम करंताँ पुरुष परम सिध पाय सुजाण
जियाँ करम करता सिध पावै बा विध तूँ म्हाँसूँ सुण जाण ।। १८-४५ ।।

जिण परमातम भूत जलमिया जिणसूँ सकळ जगत प्रगटाय
करम सभावाँ ही सिध पावै उणीं परम नैं पुरुष पुजाय ।। १८-४६ ।।

सुध आचार धरम दूजै सूँ अपणों धरम श्रेष्ठ गुणबार
नियत सुभाव करम करतो नर पड़ै न अरजुन पाप फळार ।। १८-४७ ।।

दोस भरया भी करम आपरा नहीं छोडणा समझ सुजाण
आग धुँवै ज्यूँ दोस घिराया सगळा करम अरजुना जाण ।। १८-४८ ।।

विनाँ आसकी और कामणा सरव सुबुध जीवातम जाण
साँख्य योग सूँ भी पाजावै करम हीण सिध परम सुजाण ।। १८-४९ ।।

सिध पायोड़ो पुरुष अरजुना परम ब्रह्म में जियाँ समाण
तत्व ज्ञान री विद्या सरधा वा थोड़ै में म्हाँसूँ जाण ।। १८-५० ।।

तात्विक सुध वुध धरै धारणा जो मनड़ो काबू कर पाय
सवद विषै सगळा तज देवै राग द्वेस सव देय मिटाय ।। १८-५१ ।।

सुध अेकाँत सेव मितहारी मन वाणी काया लै जीत
ध्यान योग में लीण हुयो चित द्रिढ बैरागी पुरुष पुनीत ।। १८-५२ ।।

अहंकार वळ गरव परिग्रै काम क्रोध सब देय तजाय
ममता हीण साँत चित राखै जको ब्रह्म में जाय समाय ।। १८-५३ ।।

ब्रह्मलीण होयो परसण चित करै न इंछा करै न सोग
सव भूताँ समभाव हुयोड़ो परम भगति वो पाय सुयोग ।। १८-५४ ।।

परम भगति सूँ तत्व रूप जो भली भाँत लै म्हाँनैं जाण
और तत्व सूँ जाण-पाणताँ म्हाँ में आय समाय सुजाण ।। १८-५५ ।।

जको करम योगी निसकामी सरव करम नित करतो जाय
वो भी तो अविनास सनातन म्हाँरी महर परम पद पाय ।। १८-५६ ।।

सकळ करम मन सूँ म्हाँ में ही अरपण कर तूँ मन्हें भजाय
बुद्धि योग रो राख आसरो म्हाँ में ही चित सैलँग लाय ।। १८-५७ ।।

म्हाँ में सैलँग लाग्योड़ो चित म्हाँरी महर दुखाँ तिरजाय
जे न सुणैंलो अहंकार में तो मिटसी तूँ नास मिलाय ।। १८-५८ ।।

अहंकार कारण जे माँनैं "हूँ जुध नहीं करूँ", तो साव
झूठो है थारोड़ो निसचै जुध जूझासी तन्हें स्वभाव ।। १८-५९ ।।

अरजुन मोह घिरायो भी तूँ जको करम करणों नहिं चाय
उणनैं भी परवस हुय करसी बँध्यो आपरै करम स्वभाव ।। १८-६० ।।

काया-कळ रै माँय बिराज्या सकळ प्राणियाँ नैं भरमाय
परमेसर अपणीं माया सूँ थित है सरब भूत हित माँय ।। १८-६१ ।।

सरब भाँत उण परमेसर री अरजुन अेक सरण ही जाय
परम साँति अर धरम सनातन उणरी ही किरपा सूँ पाय ।। १७-६२ ।।

ज्ञान गुपत सूँ गुपत घणैंरो मैं थारै हित कियो बखाण
जो चावै सो ही कर अरजुन ! भली भाँत सब सोच सुजाण ।। १८-६३ ।।

सरब गुपत सूँ गुपत अरजुना म्हाँरा परम वचन सुण जाण
कारण तूँ म्हाँरो घण प्यारो तैं हित करसूँ हितू बखाण ।। १८-६४ ।।

म्हाँनैं ही कर नमसकार तूँ अेकमनो हुय पूज—भजाय
लूँ सत प्रण म्हाँ में ही मिलसी तूँ म्हाँरो प्यारो इधकाय ।। १८-६५ ।।

धरम करम सब त्याग अरजुना अेक म्हाँरळै सरणैं आय
सोक मती कर सब पापाँ सूँ तन्हें मुगत करसूँ चितलाय ।। १८-६६ ।।

जठै न तप भगती मत वाँचो परम ज्ञान ओ' कदै सुजाण
म्हाँ निंदै जो सुण्यो न चावै उण आगे मत करो वखाण ।। १८-६७ ।।

म्हाँ में परम प्रेम कर जो नर परम गुपत ओ' ज्ञान सुजाण
म्हाँरै भगताँ में वखाणसी निसचै वो मिलसी म्हाँ जाण ।। १८-६८ ।।

म्हाँरो प्यारो काम करणियो उण सूँ बडो न मिनखाँ माँय
इण धरती पर उण सूँ मोटो दूजो कोय हुवैला नाँय ।। १८-६९ ।।

ओ' धरमी संवाद आपणों जो नित करसी पाठ सुजाण
ज्ञान यज्ञ पूज्यो जाऊँलो हूँ उणसूँ म्हाँरो मत जाण ।। १८-७० ।।

सुद्ध नजर सरधा सूँ जो नर ओ' सुणसी निज कान लगाय
वो भी मुगत हुयो पापाँ सूँ पुन करमाँ सुभ लोकाँ जाय ।। १८-७१ ।।

पारथ के अेकागार चित सूँ तैं सुणियो ओ' वचन सुजाण
मोह मिट्यो के थारो अरजुन जो उपज्यो अज्ञान–अजाण ।। १८-७२ ।।

अरजुन बोल्यो–

हे भगवान आपरी किरपा मोह मिटायो सुमरण पाय
संसै मिट्यो हुयो थित थाँ में पाळूँ थाँरा वचन फळाय ।। १८-७३ ।।

संजय बतायो–

सुणो महीपत हे राजन मैं इणतर बो सुणियो संवाद
घणों उदबुदो रूँ–फुरकाऊ वासुदेव अरजुन संवाद ।। १८-७४ ।।

महर व्यासजी री मैं सुणियो परम गुपत घण योग सुजाण
खुद साख्यात कृष्ण योगेसर श्रीमुख करताँ योग वखाण ।। १८-७५ ।।

घण उदबुद कल्याण करणियो प्रभु-अरजुन रो ओ' संवाद
हूँ सुमरण कर बारंबाराँ राजन हरखूँ खोय विषाद ।। १८-७६ ।।

रूप घणों अदभुत श्री हरि रो राजन सुमर्‌याँ वारंबार
चित में इचरज हुवै घणेंरो हूँ हरखाऊँ वारंवार ।। १८-७७ ।।

जठै कृष्ण योगेसर है अर जठै धनुरधर अरजुन जाण
वठै विजय श्री अर विभूति है अचळ नीति म्हाँरो मत मान ।। १८-७८ ।।

• • •

— ॐ तत्सत् —

गीता महातम

महाभारत

पुरुष हुयो पावन चित ध्यावै जो भी गीता सास्त्र सुजाण
प्रभु विष्णूँ रै पद नें पावै भय अर शोक हीण हुय जाण ।। १ ।।

जो गीता ही पढै लगोलग प्राणायाम करै नित जाण
बाँ पुरुषाँ रा पाप मिटै सब पुरब जलम रा समझ सुजाण ।। २ ।।

जळ सूँ स्नान नितूको कर नर काया रो तो काट धुपाय
पण गीता-गंगा में अेकर न्हायाँ भवसागर तिरजाय ।। ३ ।।

प्रभु विस्णूँ रै मुख सूँ निसरचो महाभारत सब इमरत जाण
पान करचाँ गीता–गंगाजळ पुनरजलम नहिं हुवै सुजाण ।। ४ ।।

गौ माता ज्यूँ सब उपनिषदाँ दूध दुहणियो श्री गोपाळ
वाछड़ियो पारथ बुध ज्ञानी दूध पियै गीतामृत ढाळ ।। ५ ।।

卐 卐 卐

नर क्यूँ दूजा सास्त्र संगरै के परयोजन पुरुष सुजाण
खुद भगवान विष्णु री वाणी अठै अमर गीता रो गान ।। १ ।।

सरब वेद सूँ जड़ी मनुस्मृति सरब सास्त्रमय गीता ज्ञान
गंगा में सब तीर्थ समाया सरब देव विष्णूँ भगवान ।। २ ।।

गीता अर गंगा गायत्री अर गोविंद अै च्यार गगार
जिणरै हिवड़ै माँय विराजै वै नहिं आय पुनरजलमार ।। ३ ।।

सार महाभारत रस इमरत साररूप मथ गीता ज्ञान
होम दियो अरजुन रै मुख में परम प्रभू श्री कृष्ण सुजान ।। ४ ।।

स्कन्द पुराण

बंधण मोक्ष नहीं रे अरजुन ब्रह्म निरामय विस्व सुजान
द्वैत और अद्वैत न कोई सचिदाणंद सरब तूं जाण ॥ १ ॥

गीता सकळ सास्त्राँ रो रस सकळ सास्त्र सिद्धांत सुजाण
कियो वेद–सास्त्राँ जो निरणैं ब्रह्मज्ञान बो ही तूं जाण ॥ २ ॥

गूढ़ अरथ वेदाँ रो दरपण गीता सास्त्र बखाण्यो जाण
मन काबू कर पढै जो पारथ पाय सनातन विष्णुं सुजाण ॥ ३ ॥

पढै विष्णुं रो उत्तम महातम और सुणैं जो ध्यान लगाय
पुण्य बढा नित पाप घटावै धन्य करै दुख देय मिटाय ॥ ४ ॥

च्यार वेद नव व्याकरणाँ मुनि व्यास अठारूँ मथ्या पुराण
जद रचणा इण महाभारत री घणैं जतन सूँ हुई सुजाण ॥ ५ ॥

मथ्यो समंदर महाभारत जद प्रगट हुई आ गीता जाण
कृष्ण आप अरजुन रै मुख में धरचो अमर रस सार सुजाण ॥ ६ ॥

गंगा स्नान नितूको कर नर काया रो तो काट धुपाय
पण गीता गंगा में अेकर न्हायाँ भवसागर तिर जाय ॥ ७ ॥

गीता सहस्र नाँव रस रचियो राजै राज स्तवन रूप
हियै धार मन ही मन सुमरै नारायण साक्षात स्वरूप ॥ ८ ॥

सरब धरम सूँ जड़ी मनुस्मृति सरब वेद मय गीता ज्ञान
गंगा में सब तीर्थ समाया सरब देव विष्णूँ भगवान ॥ ९ ॥

आधो चरण चरण इक धारै अेक सिलोको आधो धार
जो नर पढै नितूको गीता मोक्ष लाभ करलै संसार ॥ १० ॥

कृष्ण रूप इण विरछ नीपजी क्यूँ न हरड़ गीतामृत खाय
सेवण करचाँ मिनख री काया सकळ काळमळ काट मिटाय ॥ ११ ॥

कळजुग में गंगा अर गीता सन्यासी अर कपिळा गाय
पींपळ पूजण करण इग्यारस सूँ घण पावन किसो उपाय ॥ १२ ॥

नर क्यूँ दूजा सास्त्र विसतरै के परयोजन पुरुप सुजान
खुद भगवान विष्णुं री वाणी जठै अमर गीता रो ज्ञान ॥ १३ ॥

गीता रो नित पाठ करणियो आपद घोर नरक नहिं जाय ॥ १४ ॥

वाराह पुराण

धरती पूछयो—

हे भगवान प्रभू परमेसर देव देओ थे मन्हें बताय
भाग्य भोग करता मिनखाँ नैं अनन भगति कूंकर मिल पाय ।। १ ।।

श्री विष्णूं बखाण्यो—

परालवध रो भोग करंताँ जको सदा गीता नैं ध्याय
वो ही मुगत सुखी नर जग में कदै न करमाँ सूँ लींपाय ।। २ ।।

गीता ध्याय करणियै सूँ जे कोई महापाप हुय जाय
देव योग बो पाप न परसै ज्यूँ न कमळ दळ जळ लींपाय ।। ३ ।।

जठै ग्रन्थ गीता पूजीजै गीता पाठ सदा सरसाय
वठै सकळ तीरथ प्रयाग-सा इण में कोई संसै नाँय ।। ४ ।।

जठै पाठ गीता रो निसदिन सणैं पारसद वास कराय
सकळ देव रिसि नारद ऊधव गोपा-गोपी नाग जुड़ाय ।। ५ ।।

जठै पठण-पाठण अर सुणवण गीता पर ही हुवै विचार
सुण धरती हूँ बठै निवासूं निसचै सदा जाण आधार ।। ६ ।।

हूँ गीता रै रहूँ आसरै गीता म्हाँरो उत्तम धाम
गीता ज्ञान आसरै पूरूँ तीन लोक पाळण रो काम ।। ७ ।।

गीता जाण परा विद्या है निसचै ब्रह्म स्वरूपा जाण
अणनासाणी अरध मातरा अणभण रूपा समझ सुजाण ।। ८ ।।

चिदानन्द भगवान कृष्णजी निज श्रीमुख सूँ कियो बखाण
अरजुन हित परमाँणद रूपी तत्व ज्ञान तिरवेद सुजाण ।। ९ ।।

थिर चित हुयो पुरुष जो नित ही ध्याय अठारै जपै सुजाण
ज्ञान रूप सिद्धी झट पावै अर लेवै परमाँणद जाण ।। १० ।।

पूरो गीता पाठ न संपै तो नित आधै नैं ही ध्याय
इणतर पाठ कियाँ नहिं संसै बो गोदान जिसो फळ पाय ।। ११ ।।

भाग तिहाई पाठ करणियो गंगा रो न्हावण फळ पाय
छठै अंश रो जाप करणियो सोमयाग फळ लाभ लभाय ।। १२ ।।

अेक ध्याय नित भगती ध्यावै रुद्रलोक नैं पावै जाण
बठै रुद्र रो गण बण बो नर अणत काळ सुख बसै सुजाण ।। १३ ।।

अेक ध्याय रै अेक स्लोक रो अेक चरण ही जो नित ध्याय
मनवंतर भर सुभ वसुंधरा आछो मिनख जमारो पाय ।। १४ ।।

अेक-दो-तीन-च्यार पाँच-सात-दस अर आधो स्लोक जको ही ध्याय
निसचै दस हजार बरसाँ तक बो नर चन्द्रलोक बस जाय ।। १५ ।।

जो नर गीता पाठ सुणंतो मरै सो जलमै मिनख जमार
फेर भळै गीता अभ्यास्याँ उतमी-गती मोक्ष मुगतार ।। १६ ।।

गीता सबद मात्र उचरंतो मरै जको नर सदगत पाय ।। १७ ।।

गीता अरथ सुणण चित लाग्यो पापी भी बैकूण्ठ सिधाय
प्रभु विष्णूँ भगवान संग बो आणद ही आणद फळ पाय ।। १८ ।।

करम घणा करतो भी जो नर गीता अरथ नीतूको ध्याय
बींनै जीवण मुगत समझणो मर्याँ परम पद ही तो पाय ।। १९ ।।

राजा लोग जनक–सा कोई गीता रो आसरियो धार
पाप मुगत हुय जस जगती में सुणियो आप परम पद सार ।। २० ।।

गीता पाठ करणियो जो नर पछैं महातम जको न ध्याय
उण रो पाठ हुवै बिरथा ही श्रम करियो सब अळियो जाय ।। २१ ।।

गीता पढै महातम सागै बो ही पूरै फळ नैं पाय
इणतर जो नर करै ध्यान धर दुरलभ परम मोक्ष पद पाय ।। २२ ।।

सदा सनातन गीता महातम मैं जिण रो नित कियो बखाण
जो गीता पढ पढै अन्त में वो नर लभै सकळ फळ जाण ।। २३ ।।

• • •

श्रीमद्भगवद्गीता भीमानन्दी राजस्थानी अनुवाद

सम्मतियां एवं शुभकामनाएं

राजस्थानी भाषा रै गौरव री घणी श्रीवृद्धि

श्री भीमपांडिया बीकानेर री लेखणी सूं लिख्योड़ो श्रीमद्भगवद्गीता रो भीमानन्दी राजस्थानी अनुवाद सुण्यो। घणों-घणों आणंद हुयो। अनुवाद मूळ रै घणो नेड़ो है। इण अनुवाद सूं राजस्थानी भासा रै गौरव री घणी श्री वृद्धि हुयसी, ओ म्हारो भरोसो है।

करणीसिंह
1 जनवरी 1984
डॉ० करणीसिंह ऑफ बीकानेर

कोई सामान्य कवि नहीं

कविवर श्री भीमपांडिया केवल बीकानेर के ही नहीं अपितु समस्त राजस्थान के प्रख्यात राजस्थानी के सुकवि हैं। आपकी यह विशेषता है कि आप केवल राजनीतिक और सामाजिक गीतों के ही नहीं अपितु गहन से गहन आध्यात्मिक विषयों के भी रहस्यों के प्रतिपादक काव्य-प्रणेता हैं। आपने श्रीमद्भगवद्गीता के गहन से गहनतम भावों को जिस मधुर और सुगम भाषा में अपने मनोहर गीतों में अभिव्यक्त किया है वह इस बात को स्पष्ट रूप से प्रमाणित कर देता है कि श्री भीमपांडिया कोई सामान्य कवि नहीं है। इनके काव्य से राजस्थानी भाषा और राजस्थान का साहित्य निश्चित रूप से समृद्ध होता है।

विद्याधर शास्त्री
24.5.1978

माँ राजस्थानी भासा रै भंडार नै भरता रैसी

बीकानेर रा रैवणिया माँ राजस्थानी रा जाणीता मांणीता कवि अर गायक श्री भीमपांडिया जी गीता रो सोरी-सोवणी कविता में भावानुवाद कर'र एक घणी खटकती कमी नैं दूर की है।

गीता प्रैस गोरखपुर सूं छपियोड़ी गीता रो सोरै सूं सोरो हिन्दी अनुवाद लागत मात्र री कीमत ऊपर बाँटणै पर भी राजस्थान रै, खास कर लुगायाँ अर टाबराँ नै सोरप सूं समझणै में कठिनाई ई लागी। कारण वाँरी मातरी भासा राजस्थानी होवण सूं बै राजस्थानी बैगी समझ सकै है। आ कमी भीमपाँडियाजी पूरी करदी जिणसूं बै वधाई रा पूरा हकदार है। विसवास करूं हूँ कै श्री भीमपाँडियाजी इसी ही अमोलक रचनावाँ सूं माँ राजस्थानी भासा रै भंडार नै भरता रैसी, इणी शुभ कामनावाँ व आसीष देंवते विनयावनत

मुरलीधर व्यास राजस्थानी

निजी अर अनोखी कळा

श्री भीमपाँडिया घणा बरसा सूं माँ राजस्थानी री सेवा करता आय रेया है। जनकवि रै रूप में वाँ आछी प्रसिद्धि पाई है। वाँरी रचनाशैली और उण री रचनावाँ नै गाय'र सुणावणरी कळा निजी अर अनोखी है। घणै हरख री बात है कि वाँ भारत रै सर्वश्रेष्ठ और सिगलाँ सूं घणो प्रचलित भगवद्गीता जिसै ग्रंथ रो पद्यानुवाद कियो है। आ जीवण री एक बड़ी सफळता है। गीता जिसो बडो ग्रंथ अबै आपाँरी मातृभासा में सर्वसुलभ हुयग्यो है। आसा है इणरो आछो प्रचार हुसी घणा लोग लाभ उठासी।

अगरचंद नाहटा
4.6.78

भगीरथ प्रयास

श्रीमद्भगवद्गीता जैसे तत्व प्रधान ग्रंथ का राजस्थानी जैसी विकासशील भाषा में यथार्थ अनुवाद बहुत ही दुरूह कार्य है तथापि राजस्थानी मंचों के सुप्रसिद्ध चित्ताकर्षक कवि श्री भीमपाँडिया ने राजस्थानी में गीता-गङ्गावतारण का भगीरथ प्रयास किया है।

स्वामी सोमेश्वरानंद भारती
अधिष्ठाता धनीनाथ गिरि पंच मंदिर, बीकानेर
14.7.78

साहित्य जगत की अपूर्व सेवा

राजस्थानी भाषा के जाने माने कवि श्री भीमपाँडिया ने श्रीमद्भगवद्गीता

को अपनी जनभाषा में लाकर/अनुदित कर साहित्य जगत की अपूर्व सेवा की है।

श्री भीमपाँडिया ने गीता जैसे श्रद्धा और प्रेरणा स्रोत ग्रंथ को अनुदित कर मारवाड़ की शुष्क धरा को भी सरस और हरा भरा करने का भगीरथ प्रयास किया है।

जिनचन्द्र सूरि
बड़ा उपासरा, बीकानेर
10.6.83

जन्मजात कवि

श्री भीमपाँडिया से मैंने राजस्थानी भाषा में श्रीमद्भगवद्गीता का छंद बद्ध अनुवाद सुना। कई वर्ष पूर्व हिन्दी के विख्यात विद्वान कवि बच्चन की "नागर गीता" खड़ी बोली में और "जनगीता" अवधी में देखने का सुअवसर मिला था। तब मन में सोच आया था कि क्या ही अच्छा हो यदि कोई राजस्थानी का कवि इस पुनीत भगवद्वाणी को हमारी जनवाणी में अनुदित कर दे।

श्री भीमपाँडिया जन्मजात कवि हैं। राजस्थानी भाषा पर उनका सहज अधिकार है और छंद उनके श्वास-प्रश्वास का सहयोगी है।
राजस्थानी में यह प्रथम सार्थक प्रयास है और श्री भीमपाँडिया इसमें सफल हुए हैं।

छगन मोहता
27.7.78

भाषा की असाधारण मधुरता

इस अनुवाद में "श्रीमद्भगवद्गीता" के गंभीर भावों की पूरी पहुँच के साथ ही भाषा की असाधारण मधुरता भी मिश्रित है। मैंने स्वयं श्री पांडियाजी के मुख से प्रस्तुत अनुवाद के बहुसंख्यक प्रसंग सुने हैं और विषय के साथ ही कवि की अनुपम काव्य-पाठ शैली का भी आनंद लिया है। मुझे विश्वास है कि यह अभिनव अनुवाद और भी अधिक ख्याति तथा लोकप्रियता प्राप्त करेगा।

डॉ. मनोहर शर्मा
31.5.78

प्रवाहपूर्ण प्रासादिक एवं प्रेषणीय अनुवाद

कालजयी गीता का राजस्थानी भासा में रसानुवाद लोककवि भीमपांडिया ने किया है। कवि राजस्थान के लोकजीवन से, यहाँ की धरती से भाषा-परम्परा से जुड़ा हुआ है इससे यह अनुवाद प्रवाहपूर्ण, प्रासादिक एवं प्रेषणीय हो सका है।

अक्षय चन्द्र शर्मा
17.7.83

सृजनात्मक कुशलता का निर्वाह

श्रीमद्भगवद्गीता का राजस्थान के यशस्वी कवि-शिक्षक श्री भीमपांडिया द्वारा रचित राजस्थानी अनुवाद सुना। बहुत पसंद आया। बड़ी सशक्त अभिव्यक्ति है। इनका यह अनुवाद मूल के इतना निकट रहा है कि श्रोता या पाठक को लगता ही नहीं कि वह किसी अन्य कृति का अनुवाद है। शुरू से अंत तक आपने इस सृजनात्मक कुशलता का बराबर निर्वाह किया है।

शिवरतन थानवी
13.7.79
पंजीयक शिक्षा विभाग परीक्षाएँ
राजस्थान

माँ राजस्थानी रो लूँठो सपूत

सावण री ऊजळी तेरस, बिसपतवार, अर वो धोळो दोपारो। बड़ी अस्पताल रै कोटेज-वार्ड में पूजयपाद पितरदेव नरोत्तम दासजी स्वामी छेकड़ला साँस लेवै हा। राजस्थान—सरस्वती रै लाडलै री बोली उण वगत चिर विराम लेवै ई ही कै आप उणाँ रा आखरी दरसण करण नैं वठै पधारया हा। गीता सुणावण री वात चाली जद आप उणाँसूं आशा लेय नैं आपरो ताजो त्यार करयोड़ो श्रीमद्भगवद्गीता रो राजस्थानी अनुवाद सुणावणो सरू करयो। आपरै मधुर कंठा री सुमधुर गूंज शब्दाँ रो लालित्य, भावाँ री गहनता-काँई-काँई सरावूं—सै आपरै जिसा एक ही है। माँ राजस्थानी रै अप्रतिम पुजारी री जीवणसाध पूरी हुवण में इणसूं वत्तो काँई सुयोग हुय सकै है कै उणाँ नैं अंतिम शयन री वेळा-गीता भी सुणायीजै है तो राजस्थानी में अर सुणावण आळो भी है तो माँ राजस्थानी

रो ई लूंठो सपूत भीमपांडिया ।

सनत कुमार स्वामी
सावण सुदी तेरस २०४०

घणै मान सूं बधाई

वाकई अनुवाद बड़ो फूठरो नैं प्रभावी बण्यो है । हूं क्या कैवूं-भासा सूं भाव खुद ही फूट-फूट पड़ै । इसी सुन्दर रचना खातर पाँडियाजी नैं म्हारी तरफ सूं घणै मान सूं बधाई है ।

जतीन्द्र कुमार जैन
20.10.83
निर्देशक राजस्थान राज्य अभिलेखागार

हियाळै सो मोटो करम पूरो हुयो

राजस्थानी भासा में घणी खिमता है ई वास्तै गीता दरसण रो पद्यां में भी अनुवाद कियो जाणो चाईजै । कवि भीमपाँडिया रो हिवड़ो जाग्यो और लगन लागग्यो । हियाळै सो मोटो करम पूरो कियो । अनुवाद आपरै करकमळां में है । कवि री कलम रो कमाल है कै पूरी गीता रो ओ राजस्थानी पद्यानुवाद आछो-फूठरो अर घणो मधुर हुयो है । आ भारी गौरव री बात है ।

डॉ. पी. आर. आचार्य
9.6.78
महासचिव, अंतरराष्ट्रीय विचार विहार

गीता री आ गीतिका

भीमपाँडियाजी रो गीता रो ओ अनुवाद राजस्थानी भासा में एक जागा राखेला क्यूंकि भासा सरस व बोलचाल री है । "गीता" री आ गीतिका है—गीत सुणो अर झूमो, गीत सुणो और अरथ लगावतां चितण में खो जावो ।

आनंदराज थानवी
15.6.78
उपजिला शिक्षा अधिकारी बीकानेर

बेलूर मठ (गंगा किनारे) गीता का अंतिम स्पर्श

आज दिनांक 20 जनवरी सन. 1984 की सुबह मैंने बेलूर मठ गंगा

(हुगली) किनारे पर श्री भीमपाँडिया रचित "भीमानन्दी गीता" के अंतिम स्पर्श रूपी पठन का आनंद लिया। मैंने पूरी भीमानन्दी गीता कविश्री के मधुर कंठ से ही सुनी। गंगा किनारे शांत वातावरण में सुर, स्वर, छंद और भाव का मेला सा लग गया। करीब चार घण्टों तक मैं मंत्र मुग्ध सा सुनता रहा।

प्रकाश पारख
बी. एस. सी. एल. एल. बी.
प्रकाश टैक्सटाईल एजेन्सी
कलकत्ता

गीता रो घणों फूठरो अनुवाद

श्रीमद्भगवद्गीता रो राजस्थानी भासा में कवि श्री भीमपाँडिया रो कियोड़ो "भीमानन्दी राजस्थानी अनुवाद" घणों ओपतो अर घणों फूठरो अनुवाद बजसी। राजस्थान ही नहीं आखै भारत में लोग गीता रै ई अनुवाद नैं गा-गा घणों-घणों आणंद लेसी। राजस्थानी भासा फळसी फूलसी। श्री भीमपाँडिया नैं घणैं राम स्नेह सूं बधाई है।

हरिनारायण शास्त्री
रेण पीठाधीश्वर रामस्नेही धर्माचार्य
दरियाव नगर, रेण (नागौर)

अनुभव रो धन

भीमजी राजस्थानी में गीता रो उलथो कर भासा अर साहित्य री सेवा करी है। म्हारै वास्तै ई गीता नैं सुणनो अनुभव रो धन लैणो रैयो है। घणैं हरख साथै हूं भीमजी री ई गीता रो स्वागत करूं।

हरीश भादानी

लोकगीता के रूप में

श्रीमद्भगवद्गीता का राजस्थानी अनुवाद साहित्य जगत में महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जायेगी। भाई भीमपाँडिया ने गीता का यह अनुवाद गेय-रूप में किया है और लोकमानस पर लोक गीता के रूप में यह व्यापेगी ऐसा मेरा विश्वास है।

भाई भीमजी ने यह श्रमसाध्य कार्य कर राजस्थानी साहित्य जगत का ही उपकार नहीं किया अपितु लोक जीवन को भी कृतार्थ किया है। वास्तव

में यह कार्य भीमजी जैसा व्यक्तित्व ही कर सकता था।

शुभू पटवा

जी सोरो हुयग्यो

श्रीमद्भगवद्गीता रो भीमानन्दी राजस्थानी अनुवाद सुण'र जी सोरो हुयग्यो। आछो-फूठरो लिखीज्यो है। म्हाँ सगळाँ नैं प्रेरणा देसी।

मोहम्मद सद्दीक

आभार

मायड़ भासा राजस्थानी री ओबिरधी अर संविधानी मानता सारु श्रीमद्भगवद्गीता रै भीमानन्दी राजस्थानी अनुवाद री रचणा-परकासण जोग घणीं मोकळी बधाई दिवी अर घणों उमाव दियो।

१. डॉ० करणीसिंहजी ऑफ वीकानेर
(डॉ० करणीसिंह फाउण्डेशन ट्रस्ट, वीकानेर)
२. श्री मनूलाल आत्मज श्री मगनमलजी पारख बीकानेर-कलकत्ता
३. श्री चांदमल आत्मज श्री भीकमचंदजी अभाणी ,, ,,
४. श्री वालचंद आत्मज श्री सोहनळालजी सांड ,, ,,
५. श्री रामदेव आत्मज श्री छगनलालजी भट्टड़ ,, ,,
(भट्टड़ सेवानिधि ट्रस्ट)
६. श्री नारायणदास आत्मज श्री आसारामजी मूँधड़ा ,, ,,
७. श्री माणकचन्द आत्मज श्री सौभाग्यमलजी रामपुरिया ,,
८. श्री भँवरलाल आत्मज श्री मेघराजजी कोठारी वीकानेर
९. श्री कन्हैयालाल आत्मज श्री जेसराजजी राठी ,,
१०. श्री गोपाल जोसी आत्मज श्री छोटूजी जोसी ,,
छोटू मोटू जोसी, होटल जोशी, वीकानेर)
११. श्री हरिवाबू आत्मज श्री रावत जी (विश्वज्योति) ,,

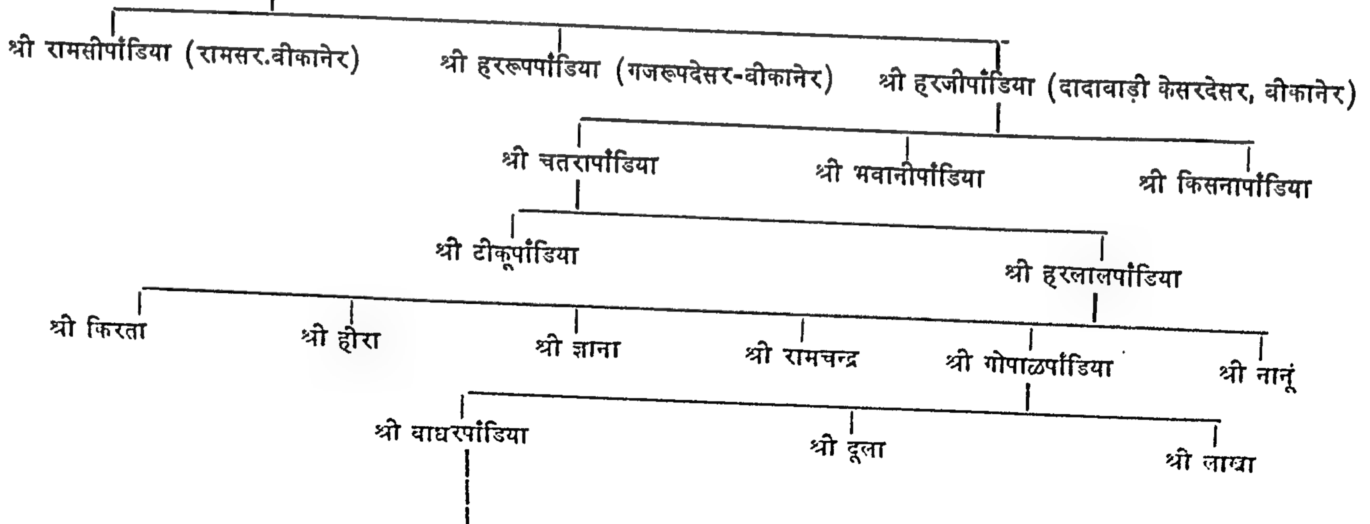
सुगुणी प्रकाशन रै सहयोग वास्तै धिन-धिन !

राजू रमेस पांडिया
सुगुणी प्रकाशन वीकानेर

श्री स्यामपाँडिया सूँ लगभग १२१वीं पीढ़ी में भीमपाँडिया री वंसावळी

(राव वही रै आधार माथै)

आदिमूळ श्री भगवान→ब्रह्मा→वसिष्ठ→सक्ति→परासर→वेद व्यास→सुखदेव→उपमन्यु→उपनस्य→काहल→कविदेव : स्यामपांडिया→भदेसर→देहुदड़े : राहू→हरपत→ऊदा→गीगा→राघा→मेहापांडिया आपरा तीन वेटा—श्री रुघा, काना, कुसळा सागै वि० सं० १७०५ में भरणावा (लाडनूं) सूं रामसर (वीकानेर) वस्या। पांच दस वरस वाद श्री कुसळापांडिया रा वेटा हरजीपांडिया गांव केसरदेसर जाटान (वीकानेर) वस्या। (पारीक पांडिया आदिमूळ सूरज-चन्द्रवंसी क्षत्रियां रा कुळ-गुरूपद परम्परा में पल्लू कोट कलूर रा वाजै)



श्री रामरखपांडिया

श्री रणजीतपांडिया

श्री भागीरथपांडिया



श्री सिवदासपांडिया



श्री हजारीपांडिया

भीमपांडिया
(जन्म वि.सं. १९८६)
१९ जुलाई, १९२९
बीकानेर

छोटूपांडिया
(गोद : श्रीकाळूजीपांडियारै)

ईसरपांडिया

रामकिसनपांडिया
(गोद : श्रीकानाजीपांडियारै)

सतनारायणपांडिया

स्व.हरीरामपांडिया



असोक

राजेस

बलदेव

मुकेस

स्याम

मनोज

जीतेन्द्र

सुरेन्द्र

नन्दू

राजू

मनोज

भंवरप्रमोदपांडिया

उमेसपांडिया

महेसपांडिया

रमेसपांडिया

दिनेसपांडिया

अनन्तराजूपांडिया



बाखल़-आँगण-बाड़ी

जीवण रा चितरामाँ में

भीमपाँडिया

अेक सरजणा रो सुर





भींव भणें, 'श्री भगवद्गीता' ज्ञान-ध्यान-परसाद चखावें
करण जोग के धरम-करम है सीधोड़ो मारग दिखळावें ।
पढे सो पिंडत धरम-करम कर मुगती-मोक्ष परम पद पावें
गीता ज्ञान गंग रो पाणी पियें सो नर-नारी तर जावें ।।



भीमपाँडिया के पिता
श्री रामरखजी पाँडिया



भीमपाँडिया की माँ सुगुणी देवी
पोते–पोती के साथ



भीमपाँडिया



भीमपाँडिया की पत्नी सूरज पाँडिया

केसरदेसर जागान निवासी —
पितामह श्री बाधरजी - पिता श्री रामेश्वरजी - माता श्री सुगुणी देवी

卐 श्री जन्मांगम् भीमपाँडिया 卐

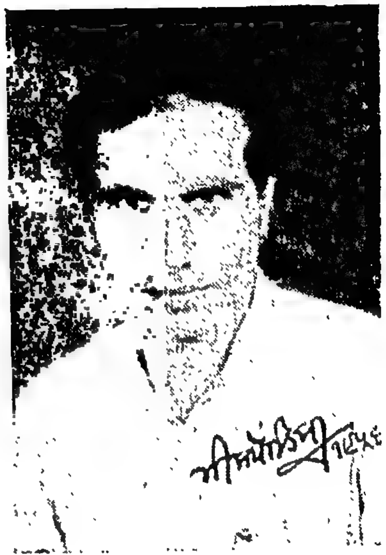
नक्षत्र - मूल चतुर्थपाद चरण
जन्म स्थान - बीकानेर
समय रात्री ११-५६

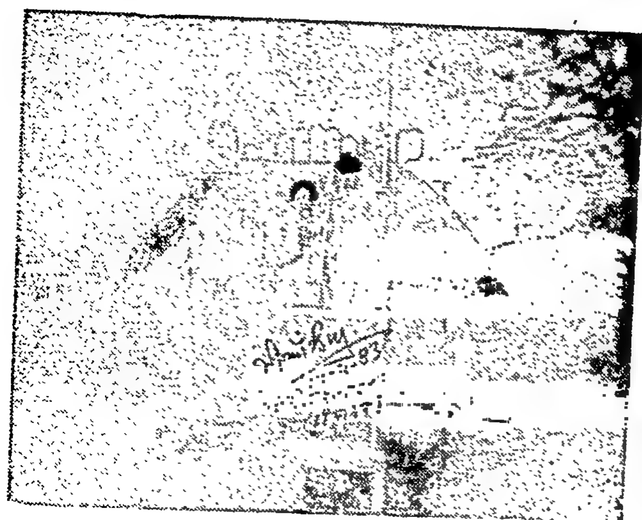
१ रा०	श्री ल० १२	११	१०
बृ० शु० २	३ गु०	९ चं०	८ श०
४ सू०	६		७ बु० के०
५ मं०			

जन्म :- वि० सं० १९८६, आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी
तदनुसार दि० १९ जुलाई 1929 शुक्रवार

भीमपाँडिया
सिद्धान्तिक का भवन
आशापुरा नगर, बीकानेर
राजस्थान, भारत

भीमपाँडिया की जन्म कुण्डली





भीमपांडिया दादावाड़ी
माताथान केसरदेसर जाटा
(पैतृक गांव में) जिसे
आजादी के बाद जुलमी
जाटों ने नष्ट भ्रष्ट किया



भीमपांडिया
संत पगला बावा
के दर्शनों में, बीकानेर



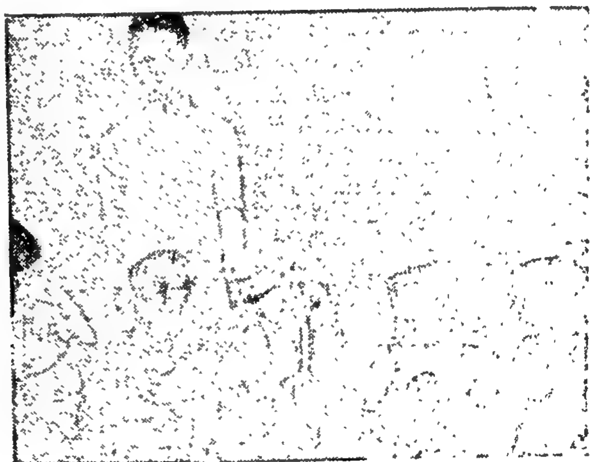
भीमपांडिया अपने
अध्ययनकक्ष
बीकानेर में



भीमपाँडिया की माँ सुगनीदेवी अपने पोते-पोतियां के साथ



नवजात पोता दिनेश पाँडिया (पुत्र श्री रमेश पाँडिया)



भीमपांडिया का सबसे छोटा पुत्र अनन्त राजू पाँडिया व पोते पोतियां और दोहीते-दोहीतियां



भीमपांडिया के पुत्र पुत्रियां प्रमोद, कृष्णा और उमेश



भीमपांडिया डफली वजाते
हुए, किसान सेवा में
सूरतगढ



भीमपांडिया अपने पुत्र
उमेश के साथ किसानों
की सेवा में, सूरतगढ



माइक और कैमरा लिये
भीमपांडिया किसानों के
प्रदर्शन के नेतृत्व में
सूरतगढ



भीमपांडिया अभिनन्दन मंच पर श्री हरीश भादानी व श्री चन्द्रदान चारण के साथ श्री गौरीशंकर आचार्य 'अरुण' अभिनन्दन कर रहे हैं ।



भीमपांडिया की माँ सुगुनीदेवी अपनी भजन मंडली के साथ
मीरा, सूवटी व मनोहरी

□□□



भीमपांडिया अभिनन्दन के क्षणों में श्री हरीश भादानी के साथ



भीमपांडिया रेगूंता बजाते हुए



भीमपाँडिया स्व० श्री मुरलीधर जी व्यास 'राजस्थानी' की चिता के पास समूह में



भीमपाँडिया कविता पाठ करते हुए जननेता श्री मुरलीधर व्यास मूर्तिमंच पर



भीमपाँडिया द्वारा माल्यार्पण श्री मोहनलाल सुखाड़िया के शव पर बड़ी अस्पताल, बीकानेर



भीमपाँडिया एक भाव भूमिका में

आद्या साहित्य संस्थान बीकानेर द्वारा अभिनन्दन के क्षणों में भीमपाँडिया और श्री भँवरलालजी स्वर्णकार।



भीमानन्दी राजस्थानी गीता सार

गजट तणीं मनवार और कँई नहिं चावणा
सब रस सूँ भरपूर गुटका-गुटको प्रेमसा !
—भीमपांडिया

ओ' गीता रो सार

शिवलिंगी पर हाथ फेरलै
जळजूणों सूँ आँख्याँ खोळ
भींव भणैं सागरियाँ पाळाँ
टावरियाँ में तन-मन घोळ
भींव वजावै चंग प्रेमसा
संगत साज वजावै रे
टावरिया रमावै सो ही
वेकूँठाँ में जावै रे
ओ' गीता रो गीत प्रेमसा !
ओ' गीता रो सार
अेक पुरुष रो पुरुषो माया
आपाँ सगळा बाळ गोपाळ
अेक खून रग रग में रमतो
जळ सागरियाँ छोळमछोळ
ओ' गीता रो सार
धरमखेत कुरुखेत मुळकतो
धरम करम ही जग रो सार
अेक सनातन धरम मिनख रो
अग जग उरळै-परळै पार
ओ' गीता रो सार
हूँ मिंदर मसजिद गुरुद्वाराँ
चरचाँ में सरवाळै हूँ
अगन पवन जळ थळ नभ व्याप्यो
हूँ सगळाँ में हूँ ही हूँ
ओ' गीता रो सार
हूँ भारत भारतदेसम हूँ
जाण भारता न्याय निचोड़
मिनखपणों राखण जग व्याप्यो
मिनखापण ही म्हारो मोड़
ओ' गीता रो सार
साँस जितो ही दाणों-पाणीं
साँस जितो हो है संसार
साँस अमर वन सुख-दुख सम्पै
अमर आतमा जग आधार
ओ' गीता रो सार

हूँ धाकड़ हूँ धाड़फाड़ हूँ
भगताँ रै वस में हूँ जाण
जग जीतै म्हारै ही सरणैं
धरम धजा थरपै जस माण
ओ' गीता रो सार
ममता आँधी घणीं बावळी
पण ममता मत पाप झकोळ
जो माया महकावै म्हारी
वो ही म्हारो म्हारी ओळ
ओ' गीतारो सार
धाकड़-धाडफाड़ जग जाण्या
गीता रा उपदेस सुजाण
जठै कृष्ण योगेसर अरजुन
वठै जीत निसचै जग जाण
ओ' गीता रो सार
सारवाद वेदाँ रो सुर है
मिनखपणों ही धरम सुजाण
जद-जद कृष्ण जलमसी सागै
वीर धनंजै अरजुन जाण
ओ' गीता रो सार
मिनखा धरम घटै जद जग में
प्रभु अरजुन सागै जण आण
मिटा अनीती नीति धरावै
ध्रुव निसचै नित अटळ सुजाण
ओ' गीता रो सार

भींव रे ! ओम हि ओम उचार

कण-कण सिरजणहार,
भाव भर भँवराँ रो भणकार
रगोरग रूँ-रूँ में रणकार
भींव रे ! ओम हि ओम उचार
ओम नाँव रो जग निसतारो
चमकै अपरंपार
सारवाद रो सुर संदेसो
ऊँडै मनड़ै धार
भींव रे ! ओम हि ओम उचार

धाकड़ धाड़फाड़ जग जाणैं
नारायण आकार
घटी-बढ़ी री घड़ी बतावै
नित टणकाँ टणकार
भींव रे ! ओम हि ओम उचार

काळ पुरुष नित काळ जीतिया
विजिया रा असवार
सुख-दुख रा संजोग सनातन
करमाँ रा आधार
भींव रे ! ओम हि ओम उचार

आतम हेलो करै ओम खुद
अन्तस में गरणार
आखो विश्व सरण सुख सम्पै
मिनखपणें नैं धार
भींव रे ! ओम हि ओम उचार

ओम नाँव ही मुगती मिणियो
ओम नमो ओंकार
रिध-सिध साथ गजानँद गूँजै
अेक ओम ही सार
भींव रे ! ओम हि ओम उचार

ओम ताज अर तखत सजावै
राज काज सरकार
ओम चढै अेडी सूँ चोटी
ओम बिनाँ अँधकार
भींव रे ! ओम हि ओम उचार

ओम सदा सगपण रो साचो
सँगळियाँ रो प्यार
ओम नाम अल्ला रो अपणो
सरबाळै संसार
भींव रे ! ओम हि ओम उचार

ऊँडी सूँडां ओम उचरलै
लाल धजा फरुकार
अेक ओम ही नेता जगरो
धरलै सत्य विचार
भींव रे ! ओम हि ओम उचार

मन रे ! मिनखपणों आधार

मन परमातम दियो चाव सूँ
मन री मन में धार
जो मन सूँ मन री गत जाण
बो ही मिनखाचार
मन रे ! मिनखपणों आधार

बो मिंदर, मसजिद में वो ही
चरचाँ अर गुरुद्वाराँ में
अेक हि राम रहीम सनतान
कण-कण कोर किनाराँ में
परस जठै परमातम परसै
निसचै मन में धार
मन रे ! मिनखपणों आधार

कँवळ नाळ सू कँवळ कुळकियो
आद पुरुष अवतार लियो
गरभ बीज धरती धण धारयो
सिसटी रो सिणगार कियो
मायड़ कूख कळी धण फूली
काढ भाग री कार
मन रे ! मिनखणों आधार

अेक रंग रग-रग में रमतो
जीवण रो संचार करै
हियै-हियै में अेक अलख सुर
सुख-दुख सब संसार भरै
आखो विश्व अेक ही माया
प्रभु ही पाळणहार
मन रे ! मिनखपणों आधार

प्रभु री जोत सकळ जग पळकै
दसूँ दिसा पळकार करै
अगन पवन जळ थळ नभ कणकण
जिया जूँण रो पेट भरै
हद-अनहद प्रभु री किरपा जग
पावै तप्याँ-तपार
मन रे ! मिनखपणों आधार

अकामेक आपणों फळसो
मिनखपणें री कार
कमसल ही कळमस में रळसी
मिनखापण नित मार
मन रे ! मिनखपणों आधार
ओम नाँव ही अेक मंत्र है
जीवण रो आधार
ॐ अेक आखर गीता में
सारवाद रो सार
मन रे ! मिनखपणों आधार

जीवण अेक झपक पळकाँरी

जीवण अेक झँपक पळकाँ री
साँस-नळी रुणझुण रळकावै
कदै हियै री कोर किलोळाँ
कदै अधर रूँ-रूँ फुरकावै
सुख-दुख रो संजोगी जोड़ो
धीर-वीर सब विघन टळावै
काळजियाँ रा खुलाँ-किवाड़ाँ
सदा सनातन साख निभावै
नित निरभै निधड़क जीवणियो
नर नाहर संज्ञा जग पावै
संकर ही पर कँकर नाचै
तीन लोक में धूम मचावै
जातक अेक जात मिनखाँ री
सुरखी लाल लोही लहरावै
कण-कण अेक ॐ रो कुण्डळ
अगन-पवन जळ थळ नभ छावै
विष इमरत री अेक जळेबी
रस ही रस में रास रचावै
आखर ब्रह्म अेक ही मंतर
सुर-सुर सरस-सरस सरसावै
सकळ अेक प्रभु रो पळकारो
जियाजूणँ री जोत पसारै
रग-रग राम रमै रुणझुणतो
मान सरोवर थाँरै-म्हाँरै
आ रे राम-रहीम पुकारूँ
बाँथ भरूँ उमराव उचारै
भँवरजाळ में जीवण नैया
जूँझ-जूँझ लग जाय किनारै
अेक सुखद साँयत ही ओखद
लाख-किरोड़ रोग नसटावै
मुळक अेक गुटको पी जहरी
सात समंदर जहर सुखावै

उगायो भोर रो तारो

उगायो भोर रो तारो
समैं रो कण सुरीलो कर
अमर आसीस लै प्रभु री
हियै में चानणों भर-भर
उगायो भोर रो तारो
सबधवेधी चलै पग-पग
दसूँ दिस बाण रो घेरो
उठा गाण्डीव तूँ अरजुन
अमर कर मृत्यु में वर-वर
उगायो भोर रो तारो
सधी है साख साँसाँ री
हवा रा लैरका आवै
समैं रो वायरो चालै
अंजळी फूलड़ाँ झर-झर
उगायो भोर रो तारो
गिण्या अर अणगिण्या सगळा
नाँव अर काम प्रभु रा धर
अलख ही विश्व आँगै में
अेक ही धाम है घर-घर
उगायो भोर रो तारो

सिध श्री म्हाँरी राजस्थानी रा हेताळू आगूँचा उमावक गाहकगणाँ रै लाड-प्यार सूँ गीता रो ओ' भीमानन्दी राजस्थानी अनुवाद रचीजो-छापीज्यो

भींतड़ा ढहजासी-गीतड़ा रहजासी

श्रीमद्भगवद्गीता रो भीमानन्दी राजस्थानी अनुवाद आप मानीता लोगां रै हाथां में सूँपतां घणो हरख हुवै। इण अनुवाद नैं घणाँ विद्वानां सरायो तो घणीं आछी बात, पण वडा बोल भगवान नैं छाजै। इण अनुवाद रै परकासण में घणां लोगां मदद करी श्री सोमेश्वरानंदजी भारती, श्री पूज्यजी जिनचंद्र जी सूरी, श्रीशंकरनाथजी महाराज, रा. गायत्रीदेवीजी जयपुर, डा. करणी सिंह जी बीकानेर, श्री मन्नुलालजी पारख, श्री चाँदमलजी आभाणी, श्रीवालचन्दजीसांड, श्रीभवानीं-शंकरजी व्यास'विनोद' श्रीभंवरलालजीकोठारी, श्रीमाणकचन्दजीरामपुरिया श्रीना-रायणदास वजाज, श्रीरामदेव भट्ठड़ श्रीनारायण दास मूंधड़ा, श्री कन्हैयालाल जेसराज जी राठी, श्रीमाधोदास नरसिंहसामूँधड़ा श्रीमांगीलाल वागड़ी, श्री भागीरथ राठी, डॉ. भीमराज शर्मा, डॉ. देवी प्रसाद गुप्त, श्रीमहवूव अली, श्रीनन्द किशोरआचार्य, श्री हरीश भादानी, श्री शुभूपटवा, श्री राम प्रसाद जी सहल, श्रीशिवकुमारजी किराड़ू, श्री प्रकाश पुरोहित, श्री हनुमान प्रसादजी पुरोहित, श्री गिरघरजी आचार्य, श्री विद्या सागर आचार्य, सरदार मोहकम सिंह, श्री नमामी शंकरजी आचार्य श्री रघुपतसिंह वैद, श्री वृजूभा, श्रीद्वारका प्रसाद पुरोहित श्री लाल नथमल जी जोशी, श्री गौरीशंकर जी पारीक, श्री रुद्र कुमारजी स्वामी, चौधरी वद्री प्रसाद जी, श्री गोपालजी आचार्य एडवोकेट, श्री विनोदचन्द्रजी पाण्डे, श्री भगवानसहायजी जोशी, श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता, श्री अजीतसिंहजी सिंघवी, श्री युगलनारायणजी पुरोहित एडवोकेट, श्री सत्यनारायण जी पारीक, श्री वासुदेव प्रसादजी विजयवर्गीय, श्री रामेश्वर जी पाँडिया, श्रीभंवरलालजी स्वर्णकार, श्रीमूलचन्दजीपारीक, श्री सूर्य शंकर जी पारीक, डा. प्रेमसा आचार्य श्री चन्द्रदानजी चारण, श्री मांगीलालजी माथुर, श्री सुन्दरदास अवतररमाणी, वैद्य श्री गोविन्द नारायणजी, श्री महेश सिंह तंवर घूड़ाराम जी जोशी कालूराम हठीला श्रीदेवकृष्णजी व्यास, श्रीरामचन्द्रजी कल्ला, सरदार मक्खन सिंहजी, श्रीगौरीशंकर जी आचार्य, श्री दुर्गा शंकरजी आचार्य, डा० जय चंद्र जी शर्मा, श्री गंगा दत्त रंगा। श्री भवानी भाई शर्मा, श्री भँवरलाल शर्मा, श्री मोहन पूनमिया, श्री हनुमान सोंदी श्री रामआचार्य, श्री मुकुनसिंह राठौड़, श्री लक्ष्मीकान्त शर्मा, श्री चम्पालालरांका

श्री रावत सारस्वत, श्री किशोर कल्पनाकान्त, श्री रेंवत दान चारण कल्पित, श्री मुकुलजी, श्री कल्याण सिंह शेखावत श्री हणूँतसिंह देवड़ा श्री गोविन्द श्रीमाली, श्री मोहनसिंह निर्वाण श्रीगिरधारीलाल व्यास, श्री के० राज, श्रीप्यारे मोहन जे० वगरहट्टा, श्री अम्बालाल माथुर, श्री अभय भटनागर, श्री पदम मेहता, श्री नृसिंह राजपुरोहित, श्रीरायचन्दजी जैन, श्रीमालचन्दजी जैन, श्रीदिलातम जैन, श्रीहीरालाल जी सत्यवादी, श्रीओमप्रकाश मिश्रा, श्री सोहनलाल सेकसरिया, श्री सोहनलालजी डागा, श्री मोतीलाल जी चाण्डक, श्री नारायणसिंहजी घंटेल, श्री दिलीपसिंहजी, श्री भागीरथ रायजी विश्नोई, श्री एम. पी. त्रिपाठी, श्री महेन्द्रनाथ धवन, श्री रोहिताश्व कुमार, श्री जीवराजसिंह राठौड़, श्रीजे. पी. मिश्रा, श्री रमेश चन्द्रजी गुप्ता, श्री पनेचन्दजी सिंघवी, श्री सुदर्शन चोहड़ा, श्री दीनदयाल जी सूद, श्री अमृतलाल विसानी, श्री राजेन्द्रराय मिश्रा, श्रीगोपालराम गोदारा, श्री देवी सिंह भाटी, श्री रामकृष्णदास गुप्ता, श्रीनारायणजी पुरोहित, श्रीगोकुलजी पुरोहित, डॉ. एस. एस. पुरोहित, श्री हीरा लाल आचार्य, श्री सत्य नारायण अमन, श्री मनोहर चावला, प्रो. केदार, पं. टेकचंद शर्मा, श्री दीपचन्दजी भूरा, श्रीमंतकुमार व्यास, श्री त्रिलोक शर्मा, श्री हनुमानदत्त व्यास, श्री मंगतराम गुप्ता, श्रीपूर्णानंद व्यास, श्री कांतिभाई, श्री ठाकुर प्रसादजी वैद्य, श्री झमण लालजी व्यास, श्री पूनमजी मिस्त्री, आचार्य विश्वनाथजी शास्त्री, डा. मदनकेवलिया, डा. पुरुषोत्तम आसोपा, श्री सूर्यप्रकाश विस्सा, श्री शिवजी जोशी, इंद्र नारायण मूथा, श्रीरामनरेश सोनी, श्रीसूरजमालसिंह राठौड़, श्री ऋषिकेश शर्मा, श्री शिवनारायणजी बोहरा, श्री गोपाल जोशी, श्री हरि बाबू, श्री हिम्मत भाई पारीख, ठा. दीपसिंहजी, श्रीबाबू खाण्डा, श्री जोशी 'निर्भीक' श्री गीधामहाराज कल्ला, श्री मक्खन जोशी, कन्हैयालाल झंवर (नोखा)। जोशी श्री हजारी जी पंडित नरसीजी, रामदयाल जी, भँवर लाल जी, अमरचन्द जी, खेताराम-सतनारायण जी जोशी और श्री भीखारामजी पांडिया नापासर। वैद्य श्री ठाकुर दत जी तिवाड़ी, श्री हड़मानजी जोशी राजलदेसर, श्री नत्थूजी व्यास पहलवान सांडवा-कलकत्ता। पुरोहित श्री गंगाविशनजी, खुमाणजी, सोहनलालजी, फूसराजजी, तोळारामजी, अर्जुनलालजी मालचन्दजी, जगदीशजी मदनलालजी जेसराजजीपूर्णारामजी। जोसी श्रीरामरखजी। 'पांडिया श्रीलिखमा रामजी सीताराम, कानीरामजी, सुगनारामजी, श्री डूँगरगढ़। श्री केसरारामजी बोहरा पूलासर-सरदार शहर। जोसी श्री माली रामजी, रामदयालजी, भैरूँजी, हिमटसर। जोसी श्री ईसरमहाराज, चम्पादेवी लूणारामजी। तिवाड़ी घासीरामजी साळगरामजी। पांडिया गंगादेवी काळूरामजी, छोटूलाल, और श्रीरामकृष्ण खत्री नोखामंडी,। तिवाड़ी श्रीमोहनलालजी, बद्रीनारायणजी-शिवनारायणजी सूरतगढ़। श्री धरमचन्दजी चोपड़ा गंगाशहर। जोशी श्रीमेघराजजी, मद्रास। जोशी श्रीनन्दलालजी, दाऊलालजी, बुलाकीजी, लालचन्द जी, मघारामजी, सूरजमलजी, नरसिंगजी, रमणलालजी, रामप्रतापजी, भागीरथ

जी, फकीरचन्दजी, दाऊलालजी मघराजजी, गोकल-भागीरथजी लाबूरामजी-बूड़ारामजी। व्यास श्रीवृजूजी बुलाकीजी वकील शिवरतनजी तीवाड़ी। घमजी-शिवजी हड़मानजी-लाधूरामजी व्यास। पाँडिया श्रीवगसीरामजी, सोहनलालजी, तोळाराम जी, गोरधनजी खाजू जी, भँवरलालजी-चम्पालालजी, गंगादेवी-भागीरथजी, राम गोपाळजी, हड़मानजी-गोपाळजी, चेतरामजी, अंणतलालजी। तिवाड़ी श्री रासमेर जी, रतनलालजी श्री सुखा रामजी। श्री गौरीशंकरजी पुरोहित, चाँद रतन आचार्य नन्द किशोर जोशी, वैद्य भंवर लाल आचार्य, गोपालजी व्यास, लक्ष्मणजी सुथार, हरीराम वर्मा, शिवनारायण जोशी, श्री रतनलाल-किसन लाल चाँडक, श्रीमोतीलाल चाँडक, नथमलजी चाँडक, खींवराजजी राठी, श्रीलालचन्दजी, कोठारी उपध्यानजी कोचर, श्री सुरेश कटारिया, रामकृष्ण लोहिया, श्री वेदनिधि, कमल नयन पुरुषोत्तम शर्मा, श्री काशीरामजी वोहरा, श्री नन्दरामजी–नथमल्जी राव श्रीविष्णु आचार्य, जुगलकिशोर जोशी, सुभाष पुरोहित वीकानेर। श्री शिवचरण कश्यप, श्री जसकरण गोस्वामी श्री उमेशआचार्य, डॉ. दिवाकर शर्मा, इब्राहीम गाजी, गुलाम शाद, सदीक, रफीक-मुनीर मो० जफर, मुश्ताक भाटी, लियाकत अली, अजीज आजाद-अब्दुलवहीद कमल, शिवराज छंगाणी-गौरीशंकर अरुण, गौरी शंकर मधुकर लालचंद भावुक-वुलाकी वावरा, नवल वीकानेरी विशन मतवाला-कृष्णजनसेवी दिनेश रंगा। माणकवंधु, भँवर व्यास, श्रीराजेन्द्रमित्तल चौधरी शिवकुमार सिंह-बद्री प्रसाद गहलोत वृजगोपाल पुरोहित-असरफ अली, सरस्वती स्वामी, मक्खन स्वामी, रामेश्वर साध डॉ. सत्यनारायणस्वामी। रमेश खन्ना, पन्नालाल पहलवान. डॉ. डी. पी. पुरोहित। सोहन कँवर-मेजर पूर्णसिंहराठौड़ भँवर लालजी जीतमलजी पुरोहित, श्री भँवरलाल हर्ष (ज्योतिष वैज्ञानिक) श्री छगनजी माली, श्री काशी नाथ व्यास, श्री हीरालाल आचार्य, श्री कुंजी लाल जी गहलोत, श्री शिव कृष्ण-डूँगरमल जी जोशी, श्री रामू-कृष्ण-अनंतलाल जी व्यास श्री अद्‌भुत शास्त्री श्री कृष्ण कुमार मूंधड़ा श्री हनुमान दास धनसुखदास रामदयाल जी चाँडक श्री भतमल ऊधोदास जी चाँडक श्री दाऊजी-आसारामजी आचार्य श्री मेधराज जी आचार्य, श्री मंगल चन्द जी आचार्य, श्री चकोर-मकोर पुरोहित, श्री कृष्णजी विसनोई श्री ईसरदासजी स्वामी श्री सोहन लाल जी मोदी श्रीभगवान सहायजी वोहरा। श्रीजयनारायण हनुमानजी श्रीतुलसीराम-भँवर पाँडिया। डॉ. काली चरण माथुर, श्री देव कृष्ण पाँडिया श्रीसुरपति सिंह, श्रीपूनम चंद खड़गावत, श्रीमुन्नालाल गोयल श्रीमोतीलालजीपाँडिया, श्रीदीना नाथजीव्यास श्री केदार वद्री प्रसाद जी व्यास, श्री रमणसा विस्सा, श्री आनन्द चन्द्र कल्ला, श्री वाबूलाल सोमदत्त श्री माली, श्री भँवर लाल चोरड़िया, श्री हनुमान प्रसाद, श्री कांति कोचर श्री नारायण रंगा श्री गिरधरजी व्यास (अध्यापक) श्री मनूलाल डागा श्रीभँवरलालजी ताराचंदजीवोथरा, श्रीकेसरीसिंह आचार्य, श्रीरामकृष्ण झा, सतीशशर्मा। पाँडिया श्रीमुळतानजी हजारीजी नन्दरामजी केमरदेसर जाटान, श्री मोहनलालजी पाँडिया भरणावा(लाडणूं)श्रीकिसनसिंह गहलोत, श्रीद्वारका प्रसाद

सोलंकी श्री माणकचन्द सेठिया, रामचन्द्रजी व्यास (नगजी) और स्वं. चम्पादेवी मुरली धरजी व्यास डा. राजानन्द श्री आर. जे. मजीठिया, श्रीमुन्नालालजी गोयल श्री वृज भूपण शर्मा, श्रीकन्हैयालालजीसेठिया श्रीमानसिंह जी-दिलीपसिंहजी शिव-चरण कश्यप, अमरनाथ कश्यप, हर प्रसाद वगरहट्टा श्रीहरिश्चन्द्र तिवाड़ी श्री प्रेम-प्रकाश अवस्थी, श्री वृजलाल ओमप्रकाश मिश्रा (सूरतगढ) श्री लाजपत भान श्रीहनुमान जी पुरोहित, श्री गणेशी लाल माथुर श्री चिरंजी लाल पुरोहित श्री के. के. व्यास श्री शिवरतन डावाणी श्री सुखजी पुरोहित श्री दाऊदयालजी शर्मा स्वं. वगतावरीश्री कानीरामजी पाँडिया। जोसी हरनाथजी। श्रीप्रेमनाथ सोनी, श्री जयप्रकाशजीगुप्ता श्री रामकरणजी पाँडे, श्रीजनार्दन व्यास, श्रीहीरालालशर्मा, का. हीरालालआचार्य, एन. डी. प्रकाश। श्री भँवरलाल आनन्दमलजी डागा श्री सांगी। स्व. सूवटी श्री कृष्णजी तिवाड़ी, पार्वती शंकरलालजी पुरोहित। बाई सिरिया-पानां-लिछमी। स्व. मनोहरी रावतमल जी पारीक, स्व. मीरां धनसुख दासजी तिवाड़ी, गोगीदेवी पेमारामजी तिवाड़ी। श्री लेखारामजी पाँडिया, श्री हुकमचन्द मंगतराम पाँडिया, श्री शिवप्रतापजी चाँडक, सिरियादेवी- शिननाथजी व्यास. श्रीमती बावूदेवी जेसराजजी राठी, श्री कन्हैयालाल, श्री मुरलीधर, अमृतलाल, मांगीलाल, दाऊलाल राठी। श्रीमती कस्तूरी वूड़जी जोसी; श्री रामेसर लाधूजी जोसी, श्रीपगला बाबा, श्री पुरुपोत्तम दाधीच,श्री प्रेमरतनजी बिस्सा, श्रीवल्लभेस दिवाकर, श्रीहर्प, सरल विशारद, श्री चंचल हर्ष, अरविन्द गोस्वामी, श्री अरविंद आचार्य श्री द्वारकाप्रसाद धनसुखदासजी जोसी। श्री रामरतन हर्ष, श्री द्वारका-प्रसाद हर्प और श्री द्वारका प्रसाद स्वामी (बावा)। श्री मुकेश राजस्थानी। श्री जयनारायणजी व्यास, दीनदयालजी शर्मा। श्री गजानन वर्मा-श्री धनंजय वर्मा। श्री वी. के. मोहन। श्री गोपालजी पाँडिया, श्री सोहनलाल धनसुखजी तिवाड़ी। वैदिक संस्कृत भाषा री वेटी अर हिन्दी आदि अनेकूँ भाषावाँ री माँ आपणी राजस्थानी भाषा है। श्री मद्‌भगवद्‌गीता रै भीमानन्दी राजस्थानी भाषा में छपण री जाणकारी मिली जद जी सोरो हुयग्यो। मन में उमंग उछाळाँ भरै अर हियो कोडावै। वो दिन वेगो आवै-श्री भगवान रा वचन आपणी लाग़ीणी राजस्थानी भाषा में बाँचां-सुणां तो घणो आँणद-उछव हुवै। श्री शुभ मंगळ भावनासूँ श्री कानीरामजी पाँडिया, श्री हीरालालजी देरासरी और श्री नानकरामजी जोसी सरावण जोगी मदद सुगुणी प्रकाशन रै परकासण में मूरत रूप में दी। घणां चमतकारी रूड़ो-रूपाळो रूप गिणीजसी तो घणै हरख री वात हुसी इण ग्रंथ री।

विनीतगण:— सुगुणी प्रकाशन

श्रीमती सुगुणीदेवी रामरखजी पाँडिया श्रीहजारी रामरखजी पाँडिया, । सूरजदेवी भीमपाँडिया। सम्पत-प्रमोदपाँडिया पूनम और लता, । शांति-उमेशपाँडिया, महेश-पांडिया राखी एवं वसन्त। तारा-रमेश पाँडिया, दिनेश पाँडिया और अनन्त राज पाँडिया, कृष्णा श्री मदनजी पुरोहित,गायत्री, योगेश व पवन। पुष्पा श्रीगोकुलजी जोसी, व गोपालजोसी और नूतन, । सन्तोष श्री भैरूँजी जोसी और चिन्टू। ●

सुमरण रा सुर किता साँतरा

घण लाखीणी राजस्थानी भाषा री वढोतरी अर संविधान में मानता वासतै राजस्थान–कळकतै रा घणाँ मानीता लोगाँ श्रीमानन्दी राजस्थानी अनुवाद श्रीमद्भगवद्गीता रै परकासण सारू उमाव दियो घणों सरावणजोग !

सर्व श्री किरपाचन्दजी शांतिलालजी सुराणा, नथमलजी–रिखवदासजी भंसाली, लूणकरणजी जेठमलजी सुराणा, पीरदान प्रकाशचन्द आत्मज अजीतमलजी पारख, भँवरलालजी सेठिया जञ्झूवाला, भँवरलाल गिरधरलाल आत्मज गोविंदलालजी वैद, जतनमलजी सुरेन्द्रकुमारजी डागा, भगवान भाई नरेन्द्र भाई जरीवाला–सूरत, भँवरलालजी भँवरलालजी रिखवचन्दजी वैद, शिखरचन्दजी आत्मज ज्ञानमलजी मिन्नी, जगन्नाथ रामगोविंद, राजकुमार आत्मज भँवरलालजी पारख, मोहनलालजी पूनमचन्दजी कोठारी, आनन्दमलजी भँवरलालजी डागा, हीरालालजी जतनमलजी लूणिया, श्रीमती स्व० लोकनायक मुरलीधरजी व्यास।

सर्व श्री सरदारमलजी कांकरिया, सूरजमल माणकचन्द आत्मज फूसराजजी बच्छावत, भँवरलालजी सामसुखा, भँवरलालजी आत्मज पूनमचन्दजी भंडावत, गोपालचन्दजी बोथरा, भँवरलालजी बोथरा, कन्हैयालालजी वछराजजी फागमलजी अभाणी, शिखरचन्द प्रकाशचन्द पूनमचन्द लालचन्द साँड, मोहनलालजी पुरोहित, जयचन्दलालजी कोचर, शांतिलालजी बाँठिया, प्रेमचन्दजी दूगड़, सम्पतलालजी मिन्नी, रामरिछपालजी अग्रवाल, शांतिलालजी धनराजजी डागा, चूनीलाल नंदलाल श्रीगोपालजी सोमानी, आसारामजी जयकिसनजी सादाणी, शंकरबाबू तोदी, टहलराम बाबू, जीवतबाबू, जगन्नाथ सत्यनारायण, दीनानाथ नन्दकिशोर चाँडक, माणकचन्द इन्दरचन्द जयचन्दलाल मिन्नी, बिस्सूबाबू सी. बी. एण्ड संस, शक्ति ट्रांसपोर्ट ओरगेनाइजेशन, बी. के. व्यास भारत ट्रांसपोर्ट, दीपचन्द सुन्दरलाल गोलछा, महावीर प्रसाद नारसरिया, कन्हैयालालजी सिखवाल, मोतीलालजी धनराजजी सिरोहिया, धनराजजी कोठारी, रामचन्दजी वैद, चाँदमलजी बरड़िया इन्दरचन्दजी सुभागमलजी बेगानी, दूलीचन्दजी पुखराजजी सिरोहिया, इन्दरचंदजी बोथरा, वृद्धिचन्दजी रामपुरिया, सम्पतलालजी गोलछा, सम्पतलालजी भँवरी, शिवकरण शांतिचंद तोलारामजी डोसी, कन्हैयालालजी बोथरा, मुकुटबाबू आत्मज लाधूरामजी गंडेरीवाल, नथमलजी मीमाणी, मूलचन्दजी आत्मज किरपाचन्दजी सुराणा, डा० विनोद बियाणी, डा० साबिर, शिवदयाल व्यास बूई बंका,

सत्यनारायण हर्ष, चन्द्रकुमार आत्मज गुलाबचंदजी कोचर, जयचंदलालजी पन्नालालजी नाहटा, अन्नारामजी सुदामा, रेंवतीरमणजी भगवानदत्तजी गोस्वामी कन्हैयालालजी गोस्वामी, सूर्यनारायणजी बोहरा, दुर्गादत्तजी शर्मा एडवोकेट सूरतगढ़, पं. भंवरलाल किसनलालजी व्यास, शंकर सेवग, जीवणलालजी डागा सोहनलालजी डागा (सरदारशहर), गौरीशंकरजी आत्मज उदयलालजी पारीक हरिश्चन्द्रजी तिवाड़ी जयपुर, ईसरजी सुथार, पं. लक्ष्मीनारायणजी पुरोहित एडवोकेट, वैद्य झमणलालजी पाँडिया, मोडारामजी पंवार सूरतगढ़, शिवकिसन कजळसा आचार्य, राजू राहुल संगीता टैक्सटाइल कलकता।

श्री लहरचन्द कमलचन्द मुकीम. जसकरण गोस्वामी, श्री कन्हैयालाल जी मालू, भँवरलाल जी आत्मज जोरावरमल जी बांठिया, प्रकाशचन्द आत्मज सम्पतलाल जी खचांची, जीवणबाबू आत्मज, गोपालदास जी बजाज, सूरजमल आत्मज जीवणमल जी पुगलिया, श्री शिखरचन्द हेमराज छाजेड़, रामदेव आत्मज कोडूराम जी प्रजापत, सन्नू जोशी, सन्नू हर्ष, रामसा मोदी, रमण जी माली, श्री सत्यनारायण आचार्य, गोपाल जी व्यास, दाऊ जी जोशी, डॉ. गिरिजाशंकर शर्मा, सत्संग प्रेमी पं. बनवारीलाल जी शर्मा। एडवोकेट मरुधर मृदुल, रतनलाल जी पुरोहित, भँवरलाल जी पुरोहित श्रीभावुक जोधपुर, हेमराज जी पारीक सूरतगढ़।

राजू रमेश पाँडिया
सुगुणी प्रकाशन
विश्वाम्बिका भवन
आशापुरा नयाशहर, बीकानेर





पुष्पाँजळी—

बड़भागी बाप !
री
बड़भागण बेटी !



जगनामी भारत प्रधानमंत्री

दिवंगता इन्दिरा गांधी नैं पुष्पांजळी

पूरबाभास साचो इतिहास बणग्यो

रक्षक ही भक्षक बणग्या है
वाड़ खेत नें खावै है ।

अंग रक्षक सबद रो राम ही निकळग्यो
भरोसो ही काँई रयो ?

३१ अक्टूबर १९८४ नैं श्रीमद्भगवद्गीता रै भीमानन्दी राजस्थानी अनुवाद रै अठारवें अध्याय रो छेकड़लो पानो अर गीता महातम छपताँ-छापताँ . . .

अरर ! अचाणचक भूंडी सूं भूंडी मिनखपणें नें दागल करण वाळी खून सूं लथपथ खूनी-खवर कानां में पड़ी–इन्दिरा गांधी नें गोळ्याँ सूं वींधनांखी चालणीवेझ करनांखी काळाँ–हत्याराँ । काळजो काँप्यो अर धरती गिगनार दोनूं धूजता-सा लाग्या ! भगवान ! ओ काँई कियो ? हे राम ! थाँरी आ' के माया ?

अबै तो खाली, अै' अनादी सासवत
सबद ही धरती-आसमान में गूंजै

"देस री सेवा करताँ थकाँ जे म्हारा प्राण-पँखेरू भी उड़जावै तो घणें गौरव-गुमान री बात हुयसी । म्हारै लोही री अेक-अेक बूंद देस रै विकास में मदद देसी अर देस नें घणों-घणों बळवाण वणा आगै वधासी ।"

आखर ब्रह्म, अमर आतमा

चावै कोई कितरो ही राजनीत विरोधी हुवै लोकराज में हत्यारी बात सोचणी ही खोटै सूं खोटै अधरम-अपराध अर मिनखापण माथै घणें कळंक री कोझी सूं कोझी-माड़ी सूं माड़ी बात है ।

लाल पळै फूलाँ में कोई आसर रास रमाणी है
न्याय धरम बिन भींव जिन्दगी कोई न आणी जाणी है
करड़ो लेख लिख्यो कुदरत रो दुरगत नहीं टळाणी है
जतन अेक भी काम न आवै आ' संताँ री वाणी है
नागफणी पर गदा भींव रो कल्म करड़ी कड़कोली
हत्यारा जुलमी मिटजासी पग-पग छाती धड़कोली

आजादी रै बाद–देस में चापळूंसी अर
काळा-कूड़ियाँ रै कुण्डाळियै री घेराबंधी में
भारी गुण्डा–गरदी, च्यारसौ–बीसी, आतंक,
धोखाधड़ी, लूटपाट, जमीन हड़पा-हड़पो,
हत्या अर खून खराबी रो जोर रयो है
पापी पूज्या जांवता रया है–घायल रया है
थाँरां-म्हाँरा प्राण, प्रभु री मरजी ! कुण कांई करै
जोर कांई ? आखरकार धीरज ही मोटी बात है
पण धीरज भी तो प्रभु रो धरायो ही धारीजै !
प्रभु ही आछो–मंदो निसतारो अर मोक्ष करै ।
हे राम ! हे प्रभु ! पंचभूताँ में लीण दिवंगताँ नैं
सांयत अर मोक्ष दीजो ! आ' म्हारी भी
अरज है–लुळ-लुळ वीनती है, पुष्पांजली है ।

आखरकार गीता गूंजै–गीता में सगौ

जो जलमै सो मरै जरूरी अरजुन तूं निसचै ध्रुव जाण
इणतर अटळ विपै पर भी तो सोक न करणो जोग गुजाण ।२-२७।

जलमण सूं ले मरण समैं तक दरसण भूत देवै संसार
मरयां पछै हुय जाय अदीठा वांरो सोक सफा बेकार ।२-२८।

फळ में नहीं करम में थारो अरजुन तूं करलै अधिकार
छोड वासना करमफळां री धरम करम सूं करलै प्यार ।२-४७।

फळ अभिळासा त्याग धनंजै धारण करलै तूं थिर जोग
सिध अर असिध दोऊँ सम जाणो धरम-करम ही जोग सुजोग ।२-४८।

—ॐ तत्सत्—

भीमपांडिया

२१ अक्टूबर १९८४

भींव भणैं सागर री पाळ

राज विरोधी हाँ तो
लोकतंत्र में मिनखपणो राखाँ
आँगणें में गोळी क्यूं गड़कावाँ
चक्कू छुरी क्यूँ चलावाँ
खून खरावा क्यूं कराँ
अेको कराँ–राजवदळाँ
ताज तखत वदळाँ
जुलम मिटावाँ
साँयत सूँ न्याय बाँटाँ
सुख सम्पाँ
चेतण हाँ चेतो राखाँ
अचेतण क्यूँ वणाँ
परालवध पाळाँ–
पुरसारथ कराँ
मिंदर में वो, मसजिद में वो
चरचाँ में वो, गुरुद्वाराँ में वो
हियो टँटोळ देखाँ तो
अेक ही राम रहीम रमै
थाँरै म्हाँरै हियै रै मांय
भींव री काया–
कलम अर कविता
काँई काम आसी
साँयत विनाँ सुख कठै
भींव भणैं सागर री पाळ
जय योगेसर !

३१ अक्टूबर १९८४



भीमपांडिया—
आत्मज श्री राम-रखजी पांडिया, मां श्रीमती सुगुणी देवी पांडिया पुत्री श्री मथरादासजी जोशी,
जोड़ायत सूरज देवी पांडिया पुत्री श्री मुरलीधरजी व्यास

जन्म स्थान बीकानेर विक्रम संवत १९८६ आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी दिनांक १९ जुलाई १९२९
शिक्षा—प्रभाकर मैट्रिक। कार्य-अध्यापन, लेखन व कृषि
संतान—चार पुत्र प्रमोद, उमेश, रमेश,/तीन पुत्रियां :—
कृष्णा-मदनजी पुरोहित, पुष्पा-गोकुलजी जोशी, संतोष-भैरूंजी जोशी।

अध्यापन कार्य १९४९ सूं अबारतांई छपियोड़ी पोथ्यां—

(१) हाथ सूं कतरलीनो बोरलो १९५८
(२) लोकतंत्र रा पाळी रोया १९६७
(३) गरीब करोड़पती १९६८
(४) श्री मद्भगवद्गीता
भीमानन्दी राजस्थानी अनुवाद १९८४

अनेकूं कवितावां हिन्दी (राजस्थानी साहित्यिक कोश संकलनां, पत्र पत्रिकावां विशेषांकां अर शिक्षा विभाग तथा अकादमी प्रकाशणां में बराबर छपै। रेफरेन्स एशिया अर लीडर्स ऑफ इण्डिया व साहित्य सेवी संसार में संदर्भ। आकाशवाणी पर अनेकूं गीत कवितावां परसारित। अण छपियोड़ी पोथ्यां तथा सरजणा में मेघदूत (राजस्थानी अनुवाद), बहुपंगी कोनी दानी (काव्य), दिनड़ा फेरी के आसी (टाबर टोली रा गीत) गीतड़लां रा गुटका (गीत काव्य) नव जावै समन्दर न जावै (वीर काव्य), कुर्रांण शरीफ (भीमानन्दी—राजस्थानी भावानुवाद) है।

[illegible]
[illegible] बीकानेर